साहित्य प्रतिष्ठान
यह तो श्री की इच्छा

छत्रपती
शिवाजी
महाराज की
जय

यह तो श्री की इच्छा : भाग १

संकल्पना और
भाग का लेखन : सुनिल सामंत

मुखपृष्ठ व सुलेखन : अमृता ढगे

सजावट : अमृता ढगे/ लास्ट बेंच डिझाईन

प्रकाशन : ई साहित्य प्रतिष्ठान
जी ११०२, ईटर्निटी
ठाणे, ४००६०४
www.esahity.com
esahity@gmail.com
9869674820

इस पुस्तकमें दिखाई कई प्रतिमाएं गुगलसे ली गयी हैं. उनके निर्माताओंके हम शतशः ऋणी है.

यह पुस्तक शिवचरणोंमें
लीनतापूर्वक समर्पित

“गणपती बाप्पा ....”
पूरे महाराष्ट्रके किसी भी गांव या नगरमें आप जायें.
किसीभी, बाजार कस्बेमें में या रेलगाडीमें,
बसमें या स्कूलमें,
रास्तेमें या घरमें... कहींभी आप जायें.
“गणपती बाप्पा ...”
ये दो शब्द कहें
तो आपकी आवाज की प्रतिध्वनीकी तरह
चारों ओरसे आवाज आयेगी ...
“मोरया!”.
महाराष्ट्रके किसीभी व्यक्तीका , बच्चे बूढेका दिल जीतना हो
तो यह मंत्र जान लो. ***गणपती बाप्पा ... मोरया!***

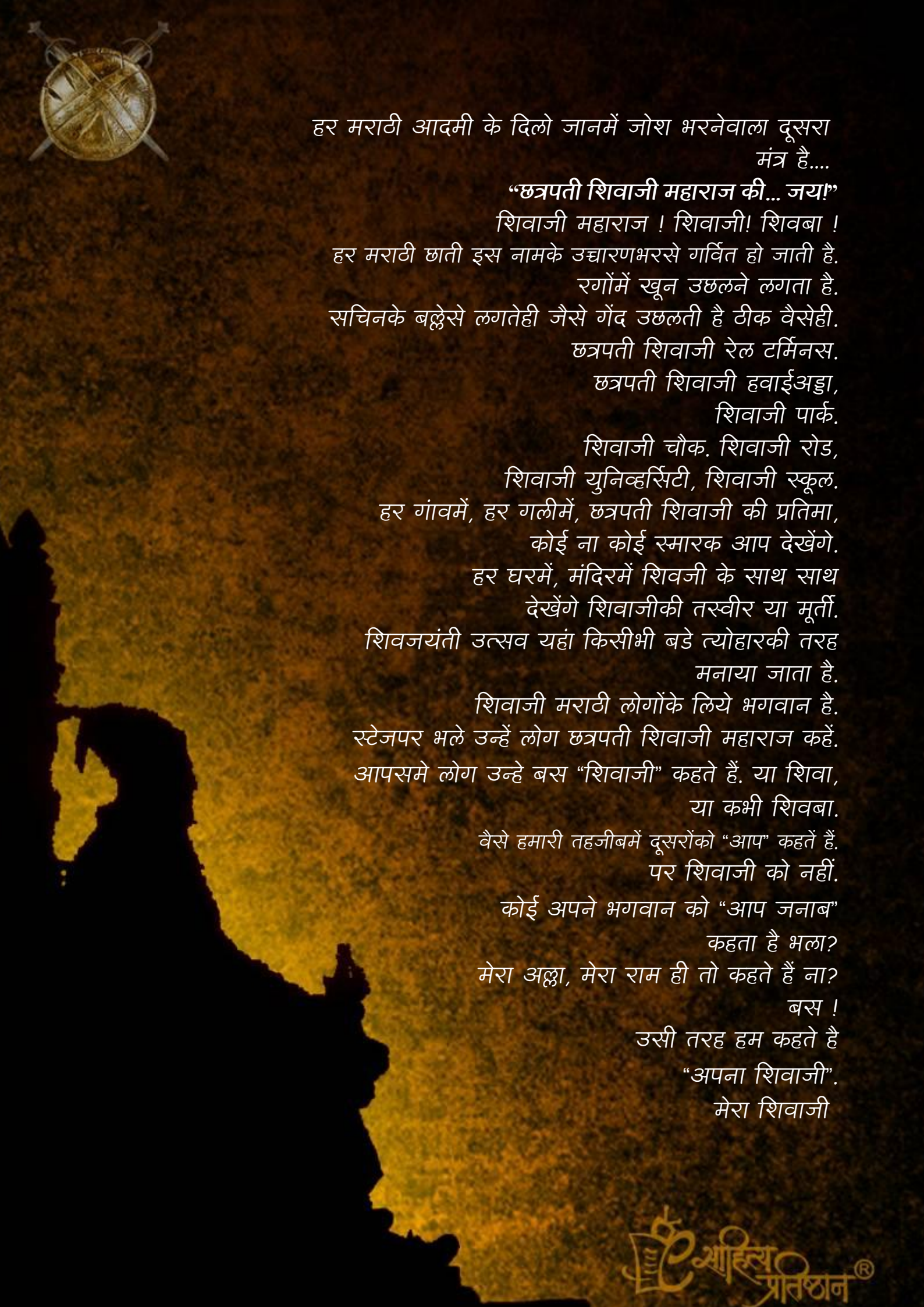

हर मराठी आदमी के दिलो जानमें जोश भरनेवाला दूसरा मंत्र है....

"छत्रपती शिवाजी महाराज की... जय!"

शिवाजी महाराज ! शिवाजी! शिवबा !

हर मराठी छाती इस नामके उच्चारणभरसे गर्वित हो जाती है.

रगोंमें खून उछलने लगता है.

सचिनके बल्लेसे लगतेही जैसे गेंद उछलती है ठीक वैसेही.

छत्रपती शिवाजी रेल टर्मिनस.

छत्रपती शिवाजी हवाईअड्डा,

शिवाजी पार्क.

शिवाजी चौक. शिवाजी रोड,

शिवाजी युनिव्हर्सिटी, शिवाजी स्कूल.

हर गांवमें, हर गलीमें, छत्रपती शिवाजी की प्रतिमा,

कोई ना कोई स्मारक आप देखेंगे.

हर घरमें, मंदिरमें शिवजी के साथ साथ

देखेंगे शिवाजीकी तस्वीर या मूर्ती.

शिवजयंती उत्सव यहां किसीभी बडे त्योहारकी तरह

मनाया जाता है.

शिवाजी मराठी लोगोंके लिये भगवान है.

स्टेजपर भले उन्हें लोग छत्रपती शिवाजी महाराज कहें.

आपसमे लोग उन्हे बस "शिवाजी" कहते हैं. या शिवा,

या कभी शिवबा.

वैसे हमारी तहजीबमें दूसरोंको "आप" कहतें हैं.

पर शिवाजी को नहीं.

कोई अपने भगवान को "आप जनाब"

कहता है भला?

मेरा अल्ला, मेरा राम ही तो कहते हैं ना?

बस !

उसी तरह हम कहते है

"अपना शिवाजी".

मेरा शिवाजी

साहित्य प्रतिष्ठान®

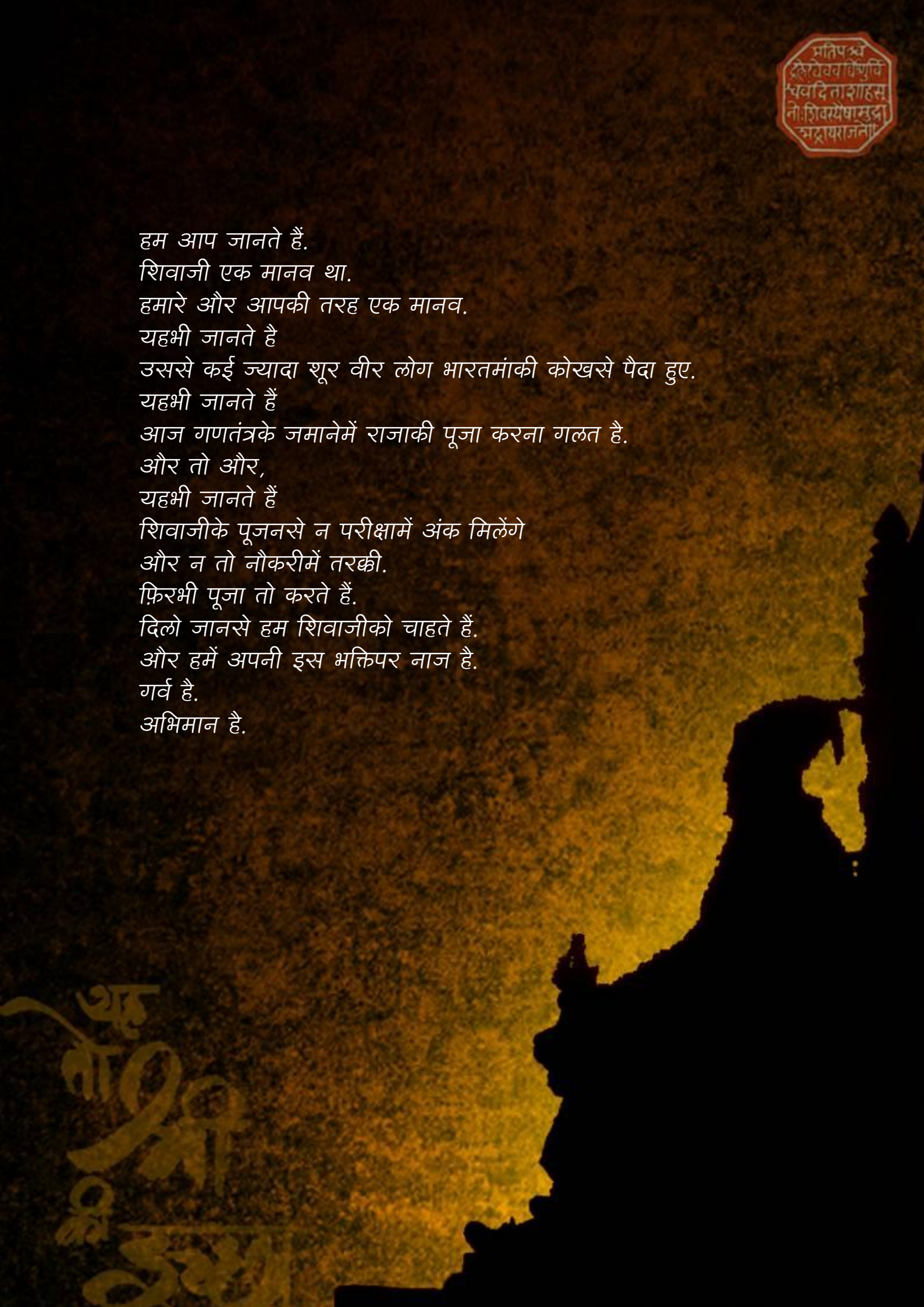

हम आप जानते हैं.
शिवाजी एक मानव था.
हमारे और आपकी तरह एक मानव.
यहभी जानते है
उससे कई ज्यादा शूर वीर लोग भारतमांकी कोखसे पैदा हुए.
यहभी जानते हैं
आज गणतंत्रके जमानेमें राजाकी पूजा करना गलत है.
और तो और,
यहभी जानते हैं
शिवाजीके पूजनसे न परीक्षामें अंक मिलेंगे
और न तो नौकरीमें तरक्की.
फ़िरभी पूजा तो करते हैं.
दिलो जानसे हम शिवाजीको चाहते हैं.
और हमें अपनी इस भक्तिपर नाज है.
गर्व है.
अभिमान है.

छत्रपती शिवाजी महाराज की जय !

साढे तीनसौ साल पहले
इस धरतीपर मेरे परदादा के परदादा के परदादा रहे होंगे.
मुझे उनका नामतक मालुम नहीं.
यह तक नहीं पता
वो किस प्रकार रहते थे
क्या करते थे.
लेकिन उस वक्तके हिसाबसे
कहीं न कहीं खेती करते होंगे.
उन दिनों परिवारके के मार्जनकी सारी दारो मदार खेतीपरही निर्भर थी.
ज्यादातर लोग खेती करते थे
बाकी लोग खेती करनेवालोंकी मदद करते थे.
उत्तर भारतमें मुघलोंकी सत्ता थी.
शाहजहां का शासनकाल था.
शांती ही शांती थी.
ना किसीका विरोध होता और न ही कोई लडाई.
गुलाम जब शांतीसे अपने मालिक की सेवा करते रहें
तो शांतीही रहेगी ना?
श्मशानकी शांती.
कायरोंकी शांती.
शहनशाह बडे बडे महल बनवा रहे थे.
ताज महल.
संगीत नृत्य की महफ़िलें चलती थी.
चित्रकार राजाओंकी तस्वीर चित्रित करते.
बाकी सारी गुलाम जनता
उन्हें आराम का सारा सामान
बनाबनाकर देती रहती.
उन्हें खिलापिलाकर खूब धष्ट पुष्ट बनाती.
उनके लिए महल बनाती.

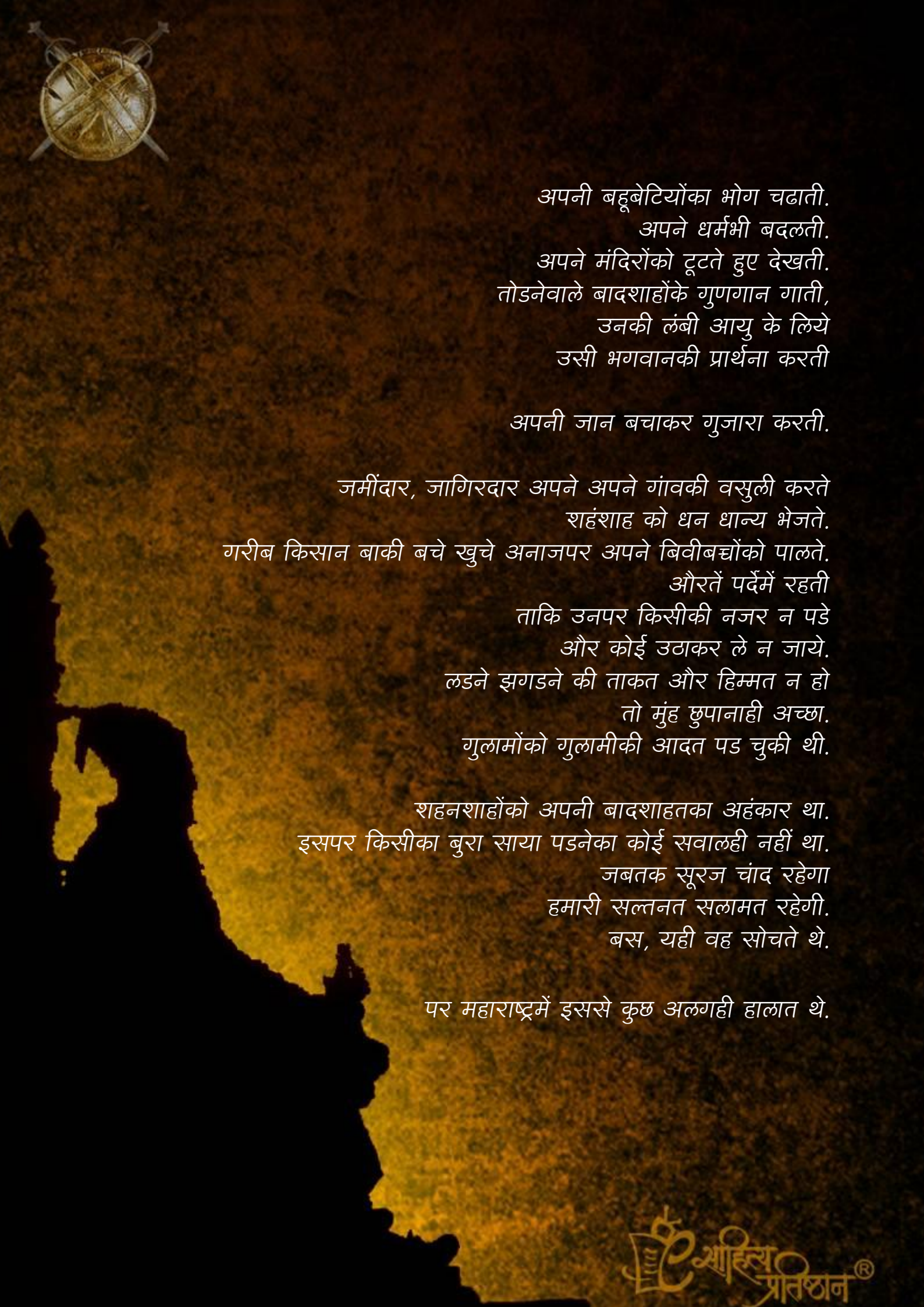

अपनी बहूबेटियोंका भोग चढाती.
अपने धर्मभी बदलती.
अपने मंदिरोंको टूटते हुए देखती.
तोडनेवाले बादशाहोंके गुणगान गाती,
उनकी लंबी आयु के लिये
उसी भगवानकी प्रार्थना करती

अपनी जान बचाकर गुजारा करती.

जमींदार, जागिरदार अपने अपने गांवकी वसुली करते
शहंशाह को धन धान्य भेजते.
गरीब किसान बाकी बचे खुचे अनाजपर अपने बिवीबच्चोंको पालते.
औरतें पर्देमें रहती
ताकि उनपर किसीकी नजर न पडे
और कोई उठाकर ले न जाये.
लडने झगडने की ताकत और हिम्मत न हो
तो मुंह छुपानाही अच्छा.
गुलामोंको गुलामीकी आदत पड चुकी थी.

शहनशाहोंको अपनी बादशाहतका अहंकार था.
इसपर किसीका बुरा साया पडनेका कोई सवालही नहीं था.
जबतक सूरज चांद रहेगा
हमारी सल्तनत सलामत रहेगी.
बस, यही वह सोचते थे.

पर महाराष्ट्रमें इससे कुछ अलगही हालात थे.

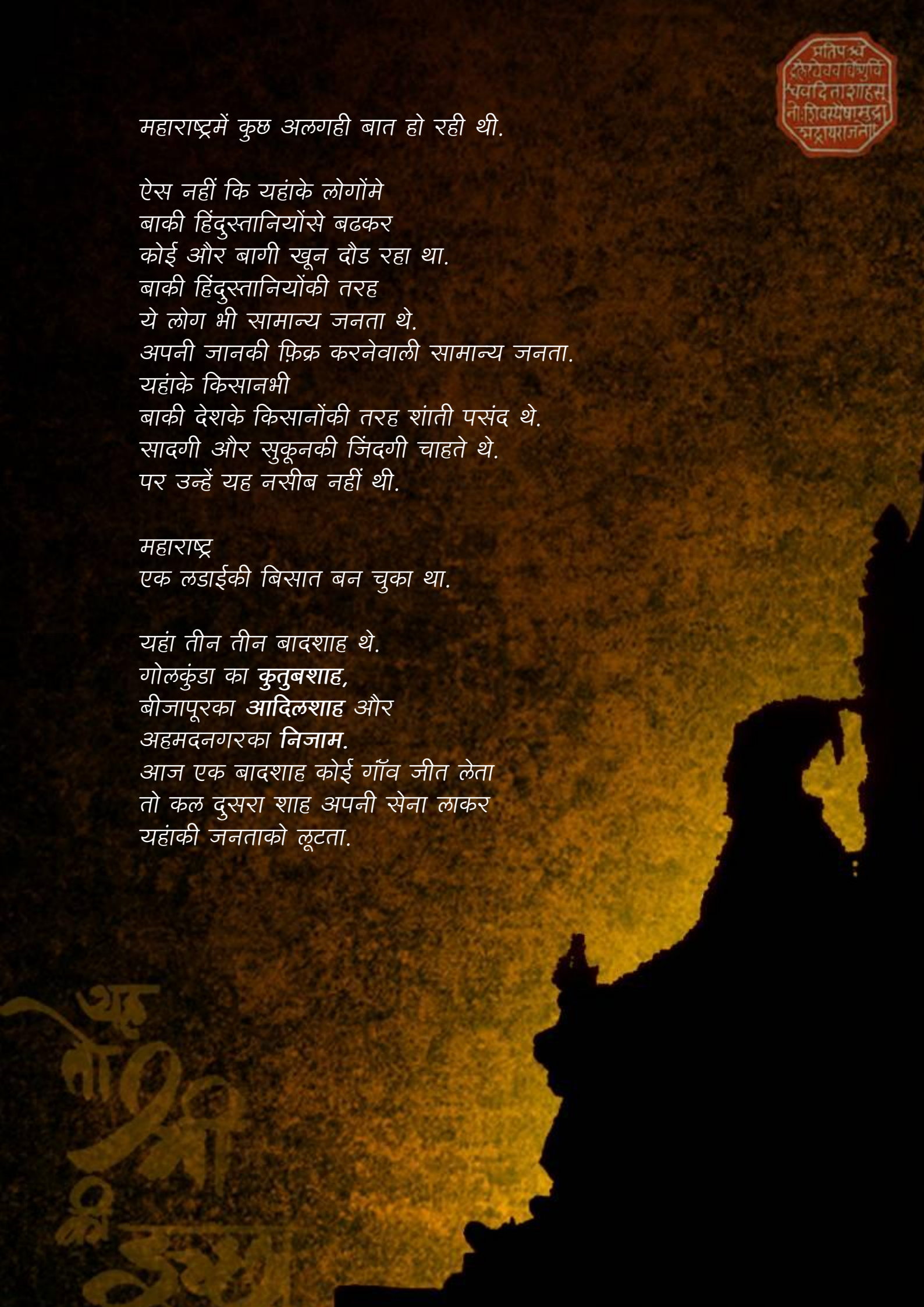

महाराष्ट्रमें कुछ अलगही बात हो रही थी.

ऐस नहीं कि यहांके लोगोंमे
बाकी हिंदुस्तानियोंसे बढकर
कोई और बागी खून दौड रहा था.
बाकी हिंदुस्तानियोंकी तरह
ये लोग भी सामान्य जनता थे.
अपनी जानकी फ़िक्र करनेवाली सामान्य जनता.
यहांके किसानभी
बाकी देशके किसानोंकी तरह शांती पसंद थे.
सादगी और सुकूनकी जिंदगी चाहते थे.
पर उन्हें यह नसीब नहीं थी.

महाराष्ट्र
एक लडाईकी बिसात बन चुका था.

यहां तीन तीन बादशाह थे.
गोलकुंडा का **कुतुबशाह,**
बीजापूरका **आदिलशाह** और
अहमदनगरका **निजाम.**
आज एक बादशाह कोई गॉंव जीत लेता
तो कल दुसरा शाह अपनी सेना लाकर
यहांकी जनताको लूटता.

১৬৩০ - ১৬৩২

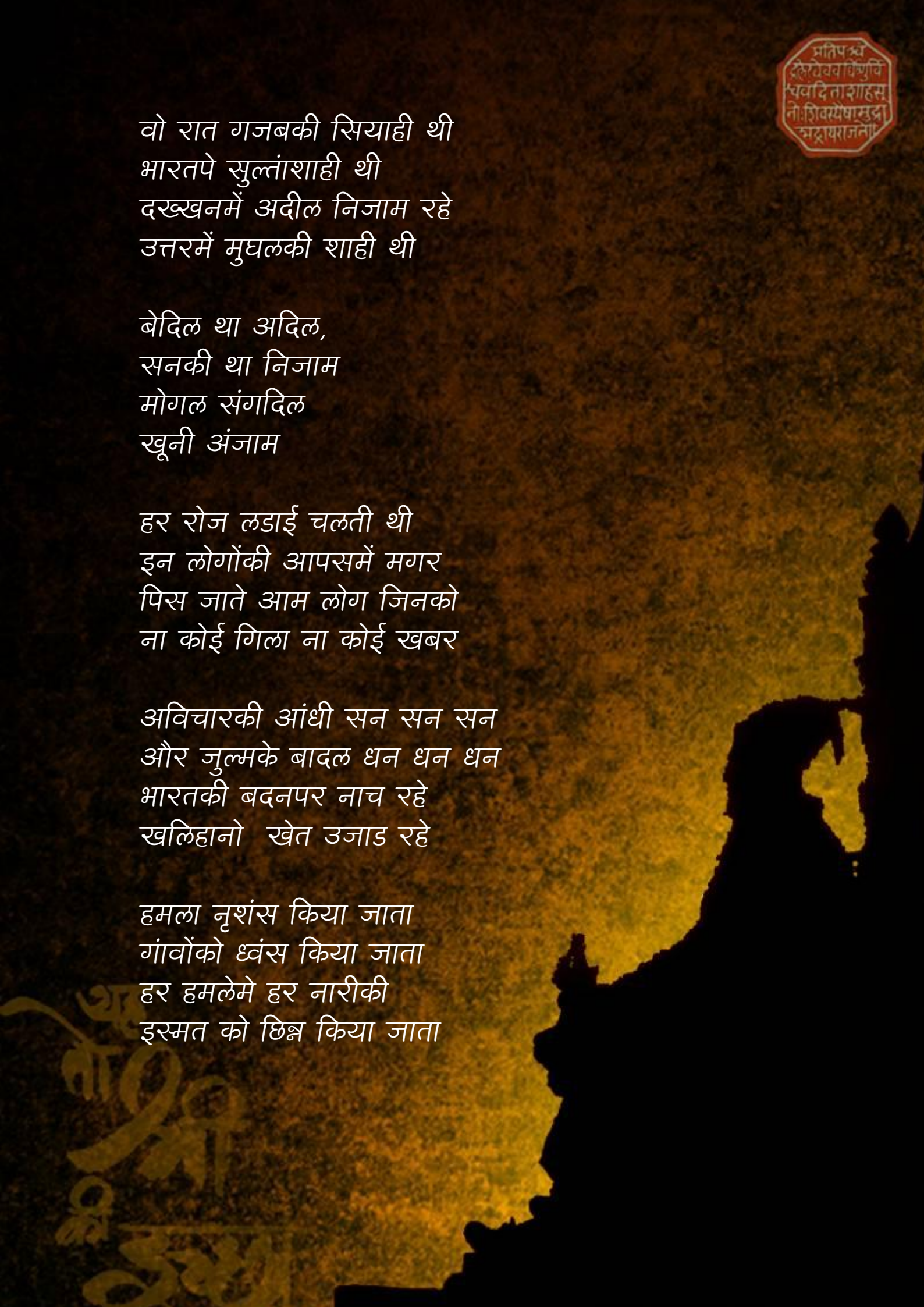

वो रात गजबकी सियाही थी
भारतपे सुल्तांशाही थी
दख्खनमें अदील निजाम रहे
उत्तरमें मुघलकी शाही थी

बेदिल था अदिल,
सनकी था निजाम
मोगल संगदिल
खूनी अंजाम

हर रोज लडाई चलती थी
इन लोगोंकी आपसमें मगर
पिस जाते आम लोग जिनको
ना कोई गिला ना कोई खबर

अविचारकी आंधी सन सन सन
और जुल्मके बादल धन धन धन
भारतकी बदनपर नाच रहे
खलिहानो खेत उजाड रहे

हमला नृशंस किया जाता
गांवोंको ध्वंस किया जाता
हर हमलेमे हर नारीकी
इस्मत को छिन्न किया जाता

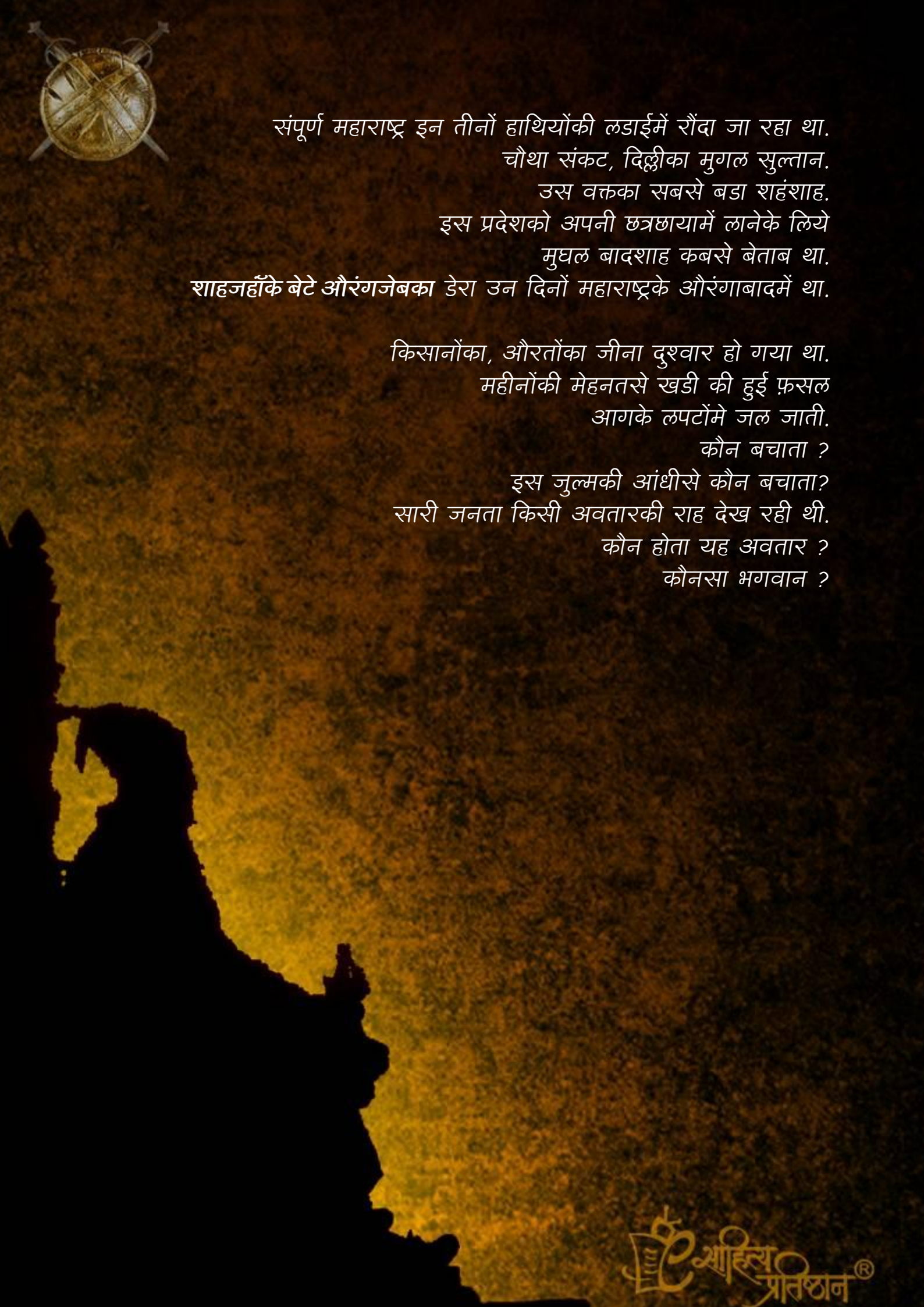

संपूर्ण महाराष्ट्र इन तीनों हाथियोंकी लडाईमें रौंदा जा रहा था.
चौथा संकट, दिल्लीका मुगल सुल्तान.
उस वक्तका सबसे बडा शहंशाह.
इस प्रदेशको अपनी छत्रछायामें लानेके लिये
मुघल बादशाह कबसे बेताब था.
शाहजहाँके बेटे औरंगजेबका डेरा उन दिनों महाराष्ट्रके औरंगाबादमें था.

किसानोंका, औरतोंका जीना दुश्वार हो गया था.
महीनोंकी मेहनतसे खडी की हुई फ़सल
आगके लपटोंमे जल जाती.
कौन बचाता ?
इस जुल्मकी आंधीसे कौन बचाता?
सारी जनता किसी अवतारकी राह देख रही थी.
कौन होता यह अवतार ?
कौनसा भगवान ?

साहित्य प्रतिष्ठान®

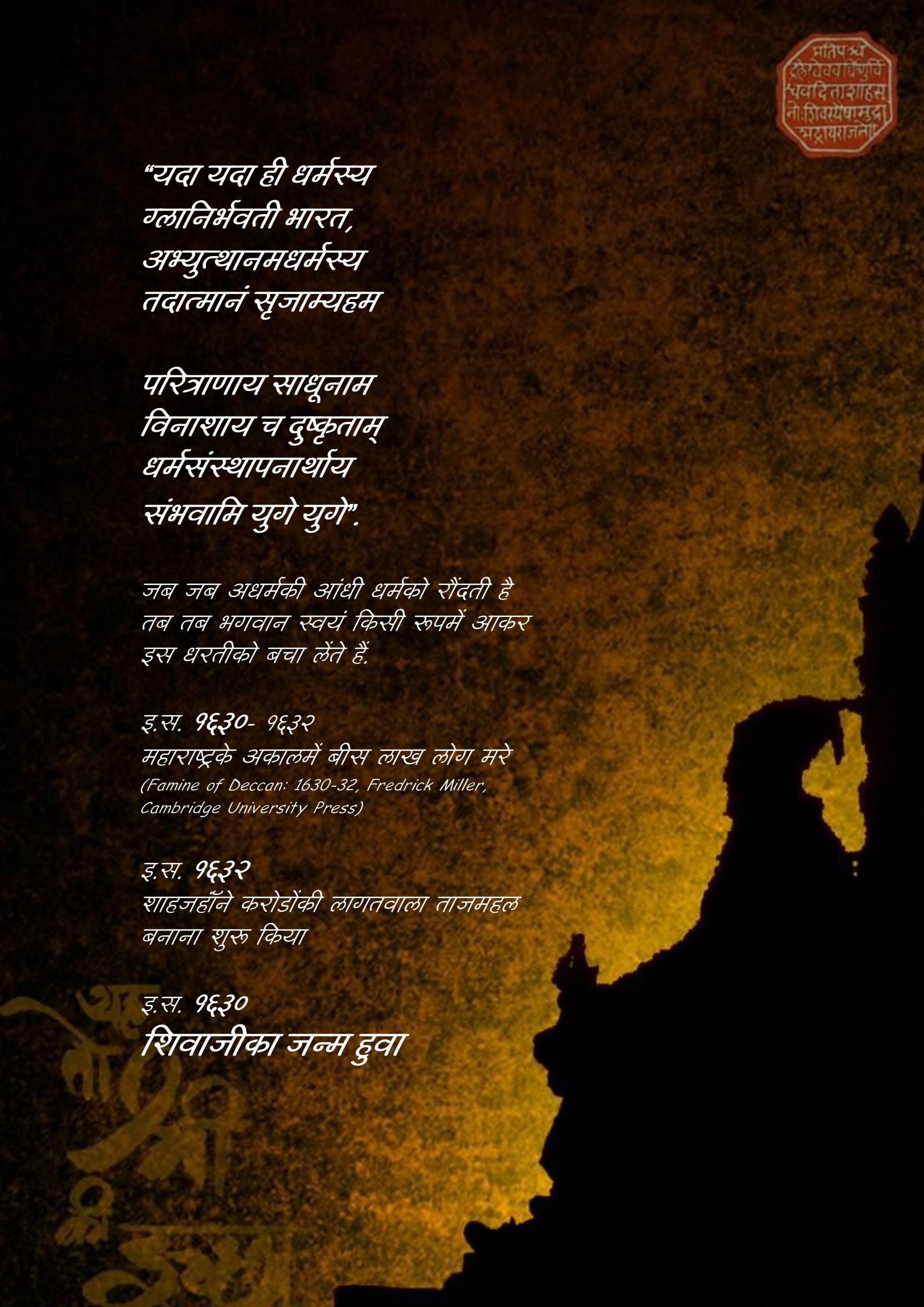

*"यदा यदा ही धर्मस्य
ग्लानिर्भवती भारत,
अभ्युत्थानमधर्मस्य
तदात्मानं सृजाम्यहम*

*परित्राणाय साधूनाम
विनाशाय च दुष्कृताम्
धर्मसंस्थापनार्थाय
संभवामि युगे युगे".*

जब जब अधर्मकी आंधी धर्मको रौंदती है
तब तब भगवान स्वयं किसी रूपमें आकर
इस धरतीको बचा लेंते हैं.

इ.स. **१६३०**- १६३२
महाराष्ट्रके अकालमें बीस लाख लोग मरे
(Famine of Deccan: 1630-32, Fredrick Miller,
Cambridge University Press)

इ.स. **१६३२**
शाहजहाँने करोडोंकी लागतवाला ताजमहल
बनाना शुरू किया

इ.स. **१६३०**
शिवाजीका जन्म हुवा

वही साल जब बादशाह शाहजहाँ
ताजमहल बनाने जा रहा थे.
इस देश के सारे बादशाह बडे बडे महल बना रहे थे.
बडी बडी मस्जिदें खडी हो रही थी.
बडे बडे मिनार बन रहे थे.

महाराष्ट्रकी जनता बडे बडे अत्याचार सह रही थी.
तेज भूख से बच्चे बिलख बिलखकर मर रहे थे.
भयानक अत्याचार और भुखमरीका दौर था.
१६३० से १६३२ तक जो अकाल हुवा
उसमें
दो
सालमें
बीस
लाख
लोगोंकी
तडप तडपकर
मृत्यु हो गयी.

साहित्य प्रतिष्ठान®

बीस
लाख
लोगोंकी
अन्नके अभावसे
तडपतडपकर
मौत हुई थी
इस महाराष्ट्रमें

सन १६३०में

इसी महाराष्ट्रमें
जहां आज लोग अपना नसीब खोजने आते हैं.
आज देशविदेशके लोग यहां अपना पेट भरने आते हैं.
इसी महाराष्ट्रमें बीस लाख लोग
अन्नके बिना मरे
सन १६३० में.

इसी महाराष्ट्रमें
जिसके बारेमें ग्रीक इतिहासकारोंने
२००० साल पहले लिखा
दुनियाका सबसे वैभवशाली
और समृद्ध विभाग.
इसी महाराष्ट्रमें बीस लाख लोग
अन्नके बिना मरे
इ. स.१६३० में.

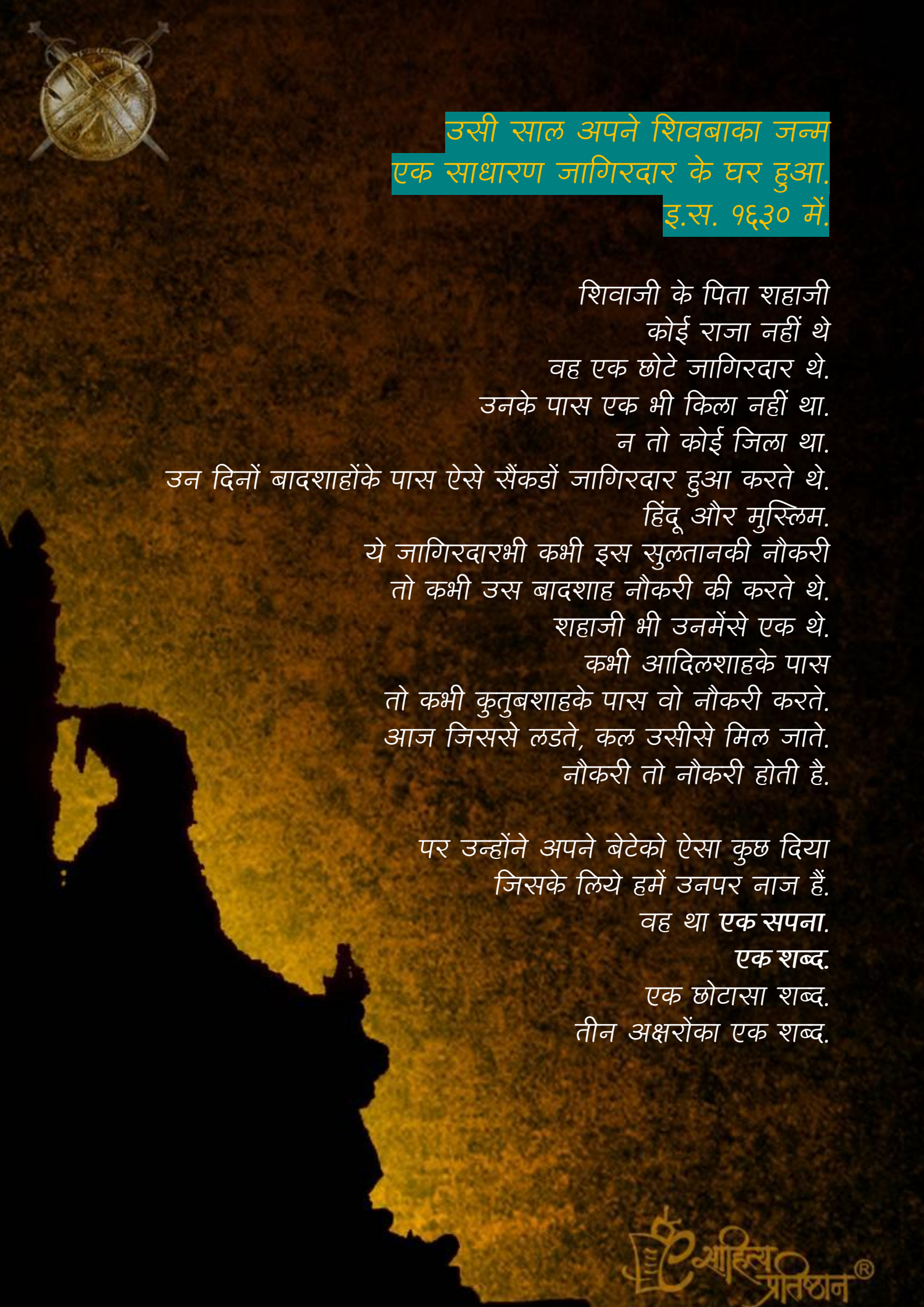

उसी साल अपने शिवबाका जन्म
एक साधारण जागिरदार के घर हुआ.
इ.स. १६३० में.

शिवाजी के पिता शहाजी
कोई राजा नहीं थे
वह एक छोटे जागिरदार थे.
उनके पास एक भी किला नहीं था.
न तो कोई जिला था.
उन दिनों बादशाहोंके पास ऐसे सैंकडों जागिरदार हुआ करते थे.
हिंदू और मुस्लिम.
ये जागिरदारभी कभी इस सुलतानकी नौकरी
तो कभी उस बादशाह नौकरी की करते थे.
शहाजी भी उनमेंसे एक थे.
कभी आदिलशाहके पास
तो कभी कुतुबशाहके पास वो नौकरी करते.
आज जिससे लडते, कल उसीसे मिल जाते.
नौकरी तो नौकरी होती है.

पर उन्होंने अपने बेटेको ऐसा कुछ दिया
जिसके लिये हमें उनपर नाज हैं.
वह था **एक सपना.**
एक शब्द.
एक छोटासा शब्द.
तीन अक्षरोंका एक शब्द.

तीनसौ सालके बाद
हिंदुस्तानके राजनीतिमें
लोकमान्य तिलकने
जिस शब्दको फ़िरसे दोहराया.
और १९३० के लाहोर अधिवेशनमें
पंडित जवाहरलाल नेहरूने
अपनी भाषणमें
उस शब्दका फ़िरसे उच्चारण किया.
और पूरे देशभरमें उत्साहकी बिजली पैदा हुई.
वह शब्द,
जिसे माँ जिजाबाई
और पिता शहाजी ने अपने बेटेको दिया.
वह शब्द था

“स्वराज”.

स्वराज.
अपना खुदका राज. लोगोंका अपना राज.
आज यह मराठी शब्द पूरे हिंदुस्तानमें सहजतासे
इस्तमाल होता है.
लेकिन चारसौ साल पहले यह शब्द नहीं था.
यह विचारही नहीं था
कि अपना खुदकाभी राज बन सकता है.
लोग तो यहीं समझते
राज करनेके लिये कोई
बाहरी व्यक्ती आयेगा
हम उनकी गुलामी करते रहेंगे.
बादशाह ताजमहल बनानेका
हुक्म करेंगे.
हम पत्थर ढोनेका काम करेंगे.

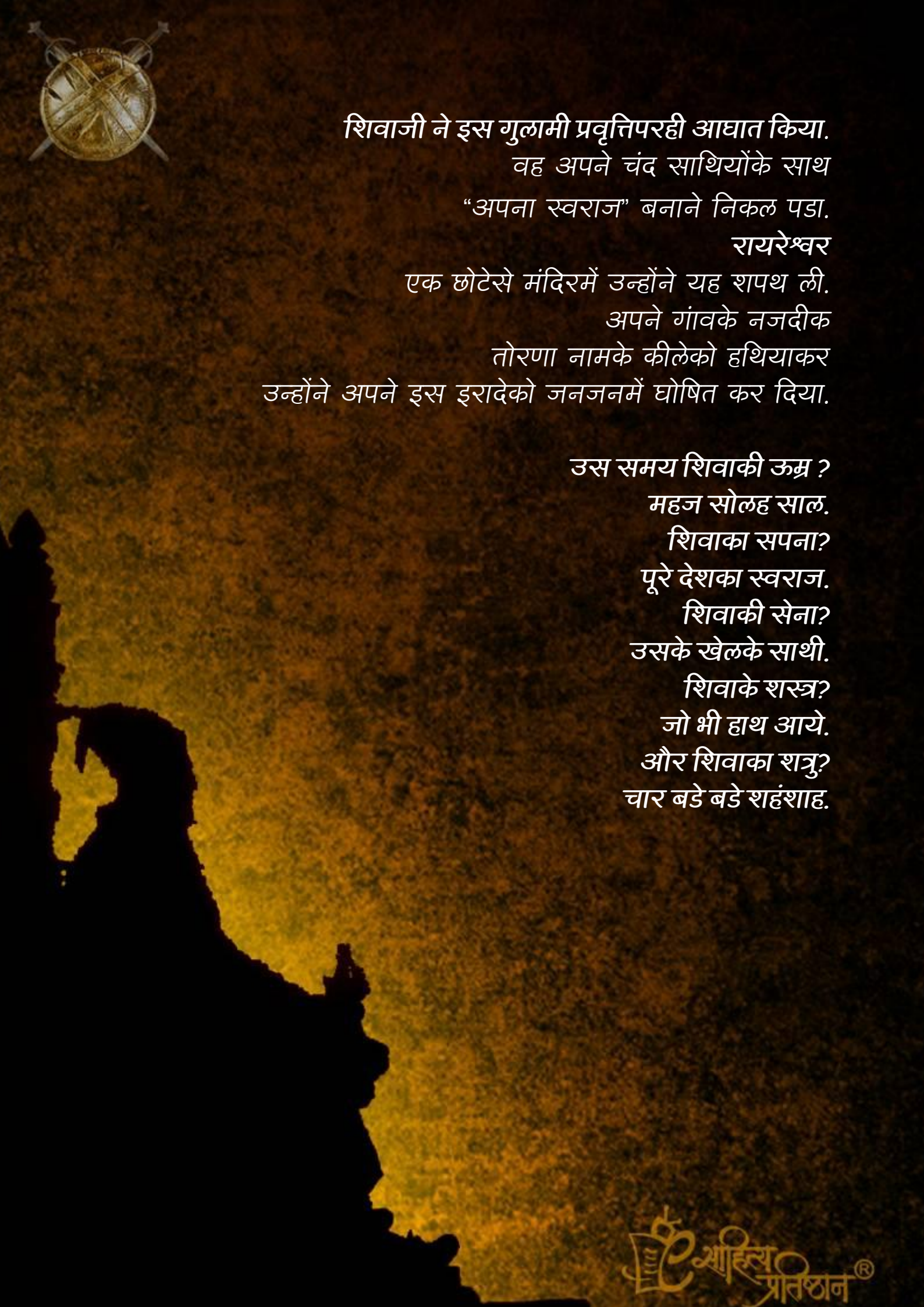

शिवाजी ने इस गुलामी प्रवृत्तिपरही आघात किया.
वह अपने चंद साथियोंके साथ
“अपना स्वराज” बनाने निकल पडा.
रायरेश्वर
एक छोटेसे मंदिरमें उन्होंने यह शपथ ली.
अपने गांवके नजदीक
तोरणा नामके कीलेको हथियाकर
उन्होंने अपने इस इरादेको जनजनमें घोषित कर दिया.

उस समय शिवाकी ऊम्र ?
महज सोलह साल.
शिवाका सपना?
पूरे देशका स्वराज.
शिवाकी सेना?
उसके खेलके साथी.
शिवाके शस्त्र?
जो भी हाथ आये.
और शिवाका शत्रु?
चार बडे बडे शहंशाह.

साहित्य प्रतिष्ठान®

चार बडे बडे शहनशाह.
जिनकी सेनामें हजारो हाथी और घोडे थे.
सैकडों कीले थे.
लाखोंकी तादादमें सैनिक थे.
करोडोंकी दौलत थी.
***ताजमहल** बन रहा था.*
***चारमिनार** बन चुका था.*
बाग बगीचे बन रहे थे.
दुनियाका सबसे बडा गुंबद:
***गोलघुमट** बन रहा था.*

उसी समय १६३०-३२ की अकालमें
महाराष्ट्र में बीस लाख लोग मरनेकी बातभी
इतिहासमें अंकित है.

और इसी पृष्ठभूमीपर
महाराष्ट्र में स्वराजकी नींव रचायी जा रही थी.

प्रतिपदाके चंद्रमाकी तरह
धीरे धीरे बढनेवाली और
सारे संसारके लिये पूजनीय
होनेवाली शहाजीके पुत्र
शिवाजी राजेकी राजमुद्रा
लोगोंके कल्याणके लिये है

शिवाजी ने अपनी पूरी जिंदगीमें
एकभी महल नहीं बनवाया.
न बाग न कोई बडा मंदिर.
न कोई मिनार न स्तंभ.
पर उन्होंने अपनी पचास सालकी जिंदगी में
एक प्रबल स्वराज बनाया.
एक किलेसे शुरुआत कर
३६० गढकिलोंका...
एक गांवसे शुरू कर
हजारों गावोंका...
एक पूरा सुदृढ और सशक्त स्वराज बनाया.
इतना मजबूत
उनके अंतके बादभी वह बढता रहा.
उत्तरमें पेशावरसे
दक्षिणमें तंजावरतक
यह मराठा राज फ़ैला.
सौ साल बाद देशका सबसे बडा राज था मराठा राज.

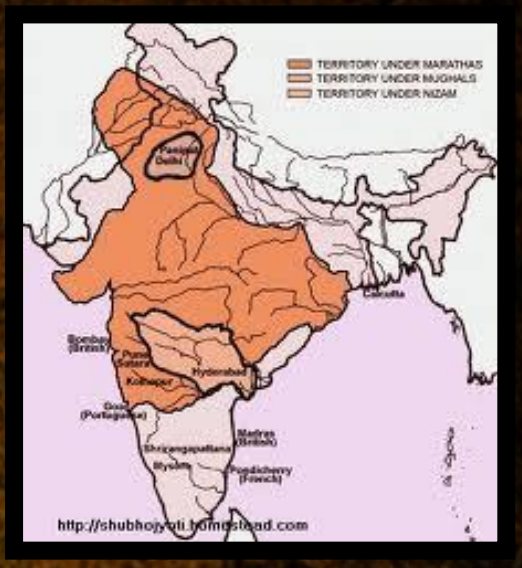

साहित्य प्रतिष्ठान®

सौ साल बाद
१७६१ में
जब अहमदशाह अब्दाली हिंदुस्तानको रौंद रहा था
दिल्लीको बचानेमें मुगलभी असमर्थ थे.
उन्हें इसी मराठा स्वराज की सेनाको न्योता देना पडा
की "आओ, हमारे देशको बचाओ".
पानीपतमें मराठा सेना खडी हुई.

सौ साल बाद
जब ब्रिटिश सत्ता बढने लगी
तब इस देशकी धरतीपर सबसे बडा राज ,
सबसे बडी सेना,
सबसे बडी ताकत
मराठा स्वराजकीही थी.

दो सौ साल बाद
१८५७ की जंगमें
यही मराठा सेना
हिंदुस्तानकी तरफ़से
सबसे बडी चुनौती बनकर उभरकर आयी.

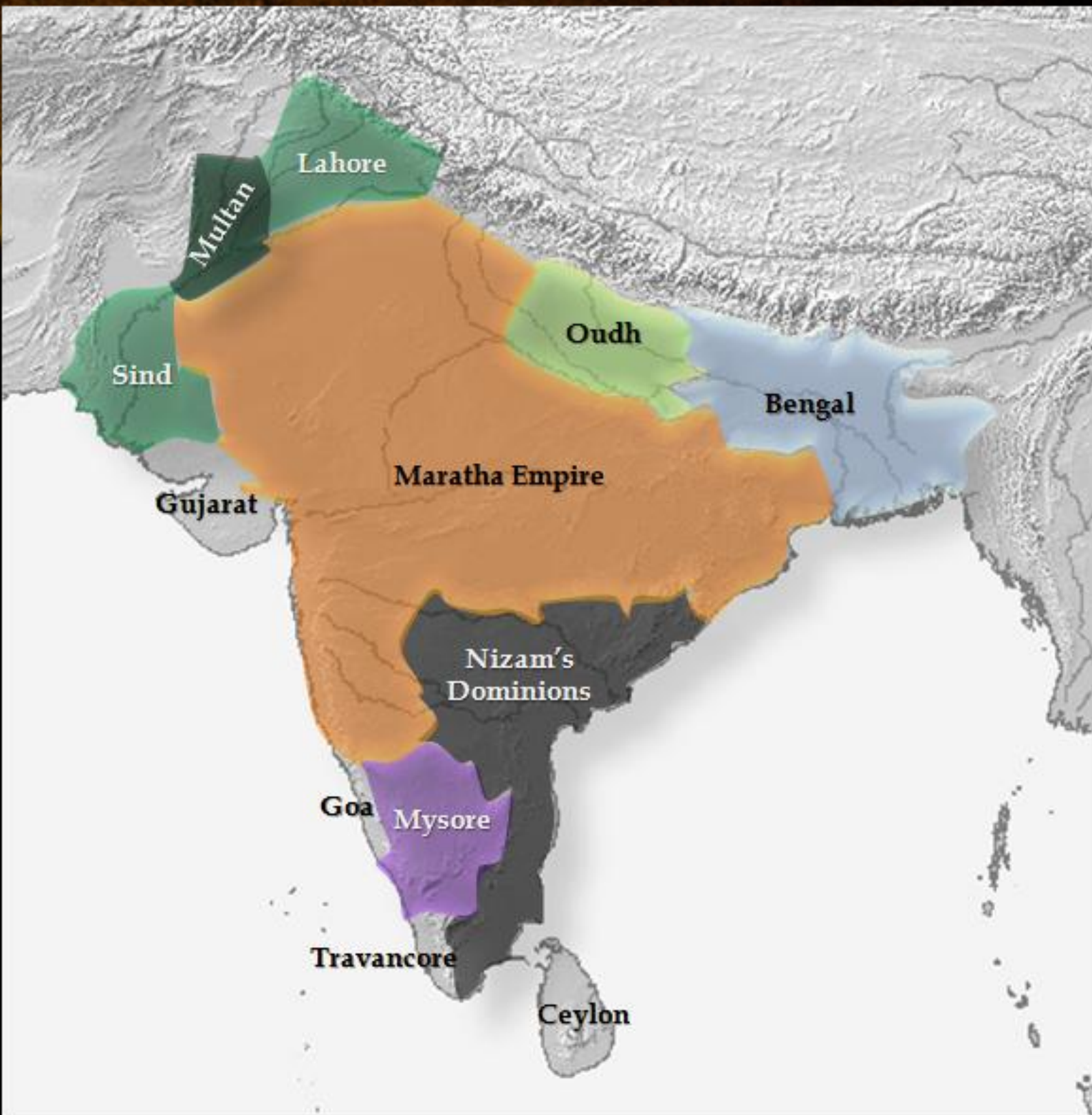

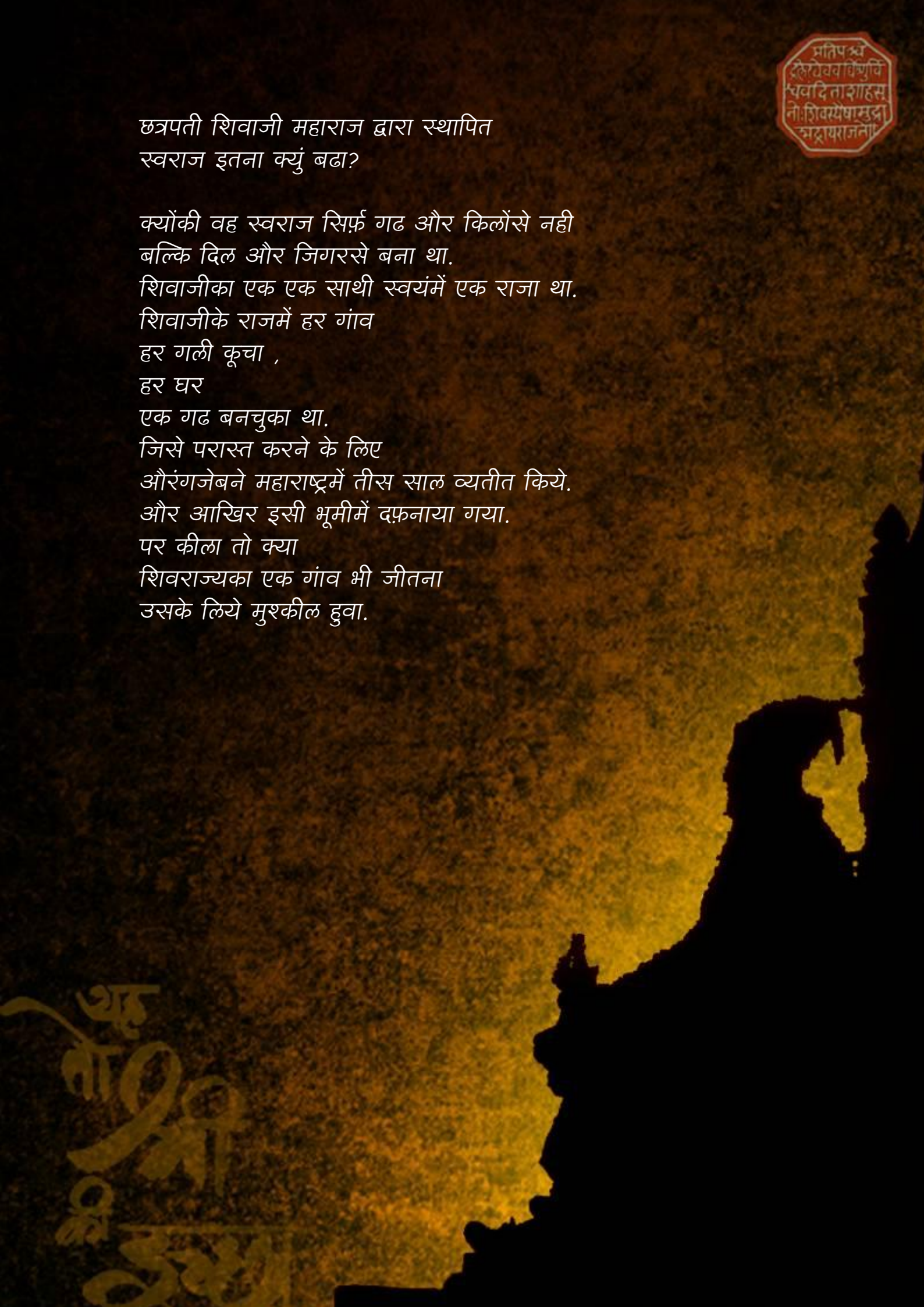

छत्रपती शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित
स्वराज इतना क्युं बढा?

क्योंकी वह स्वराज सिर्फ़ गढ और किलोंसे नही
बल्कि दिल और जिगरसे बना था.
शिवाजीका एक एक साथी स्वयंमें एक राजा था.
शिवाजीके राजमें हर गांव
हर गली कूचा ,
हर घर
एक गढ बनचुका था.
जिसे परास्त करने के लिए
औरंगजेबने महाराष्ट्रमें तीस साल व्यतीत किये.
और आखिर इसी भूमीमें दफ़नाया गया.
पर कीला तो क्या
शिवराज्यका एक गांव भी जीतना
उसके लिये मुश्कील हुवा.

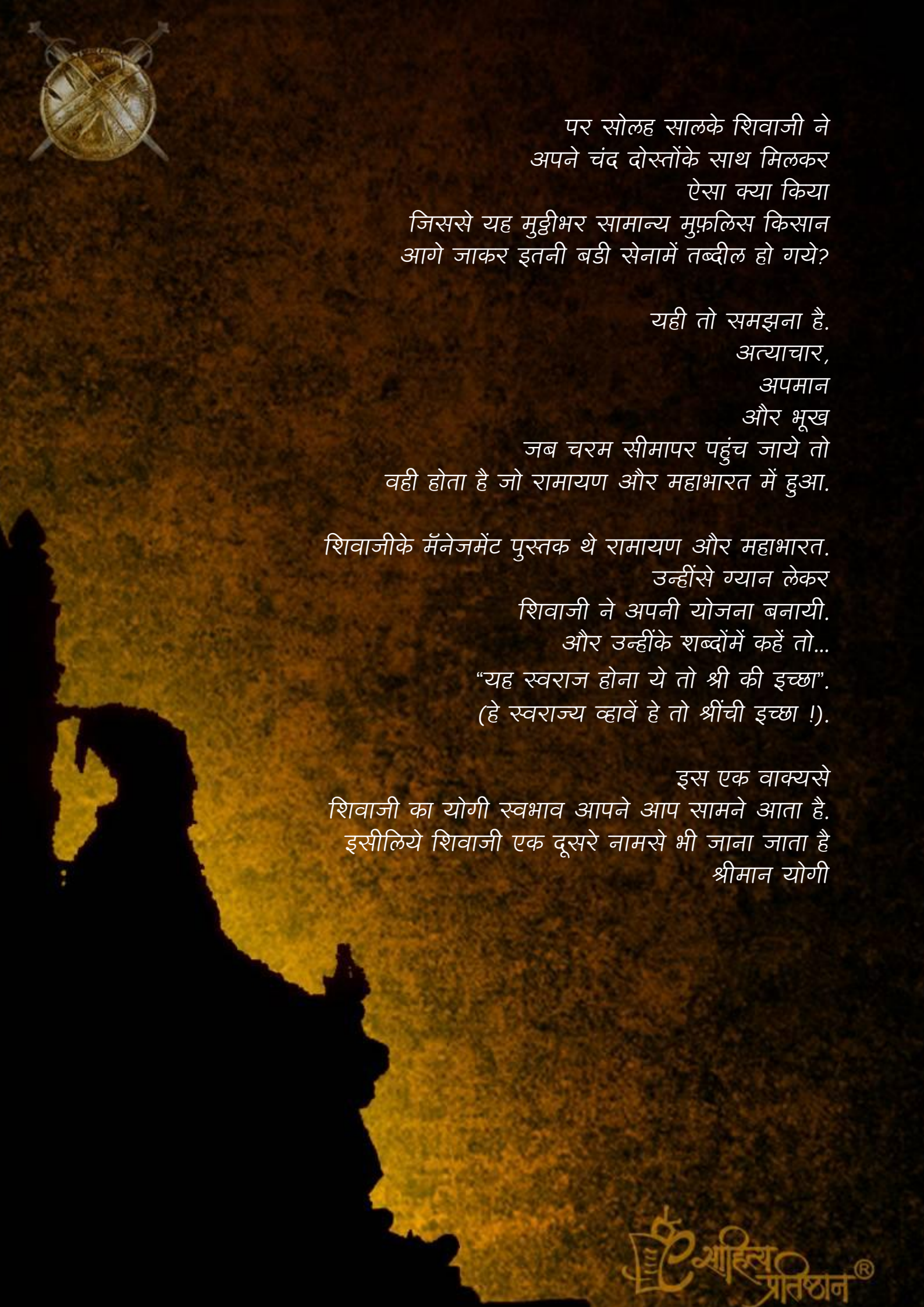

पर सोलह सालके शिवाजी ने
अपने चंद दोस्तोंके साथ मिलकर
ऐसा क्या किया
जिससे यह मुट्ठीभर सामान्य मुफ़लिस किसान
आगे जाकर इतनी बडी सेनामें तब्दील हो गये?

यही तो समझना है.
अत्याचार,
अपमान
और भूख
जब चरम सीमापर पहुंच जाये तो
वही होता है जो रामायण और महाभारत में हुआ.

शिवाजीके मॅनेजमेंट पुस्तक थे रामायण और महाभारत.
उन्हींसे ग्यान लेकर
शिवाजी ने अपनी योजना बनायी.
और उन्हींके शब्दोंमें कहें तो...
"यह स्वराज होना ये तो श्री की इच्छा".
(हे स्वराज्य व्हावें हे तो श्रींची इच्छा !).

इस एक वाक्यसे
शिवाजी का योगी स्वभाव आपने आप सामने आता है.
इसीलिये शिवाजी एक दूसरे नामसे भी जाना जाता है
श्रीमान योगी

साहित्य प्रतिष्ठान®

शिवाजी ने अपने छोटीसी सेनाकी मददसे यह लडाईयां लडी
अपनेसे सौ गुना बडे शहनशाहोंको परास्त किया.
इस तंत्रको आगे जाकर नाम पडा “गुरिल्ला वार”.
मराठी शब्द था “गनिमी कावा”.

शिवाजीसे प्रेरणा लेकर
वियतनाम में हो चि मिन्ह,
चायना्में माओ त्से तुंग,
इसराईलमें डेविड बिन गुरियन,
क्युबा में चे गवेरा और फ़िडेल कास्ट्रो
कई बडे गुरिला नेता पैदा हुए.

इस तंत्रमें
और छोटीसी सेना की
चपलता और फ़ुर्तीलेपनसे
कैसे बडीसे बडी सेनाओंको परास्त किया जा सकता है.
भौगोलिक अवसरका फ़ायदा उठाकर.
शिवाजीका यह युद्धतंत्र
बुद्धीमानताके स्तरपर
अलेक्झांडर और नेपोलियन जैसे
योद्धाओंकी श्रेणीमें माना जाता है.

इस तंत्र ने दुनियाके इतिहासको कई बार नया मोड दिया है.
इस तंत्र को शिवाजीने कहांसे सीखा?
सही समझे!
रामायण और महाभारतमें
छोटी सेनाओंद्वारा बडी सेनाओंको परास्त करनेके
कई उदाहरण है.
जब अपनोंका पूरा पूरा सहयोग हो तो
चिंटीभी हाथीको
परास्त कर सकती है भैय्या.

यहां तो नौबत ऐसी थी की
सुल्तानके जुल्मके हाथी
गरीब किसान चींटियोंको
रगड रगड कर खत्म कर रहे थे.
न तो औरतोंकी इज्जतका लिहाज था
न खेतोंकी सुरक्षाका.
पेट भर नहीं रहे थे.
या तो भूखे मरो
या सुलतानकी सेना ऐसेही गर्दन उडा देती.

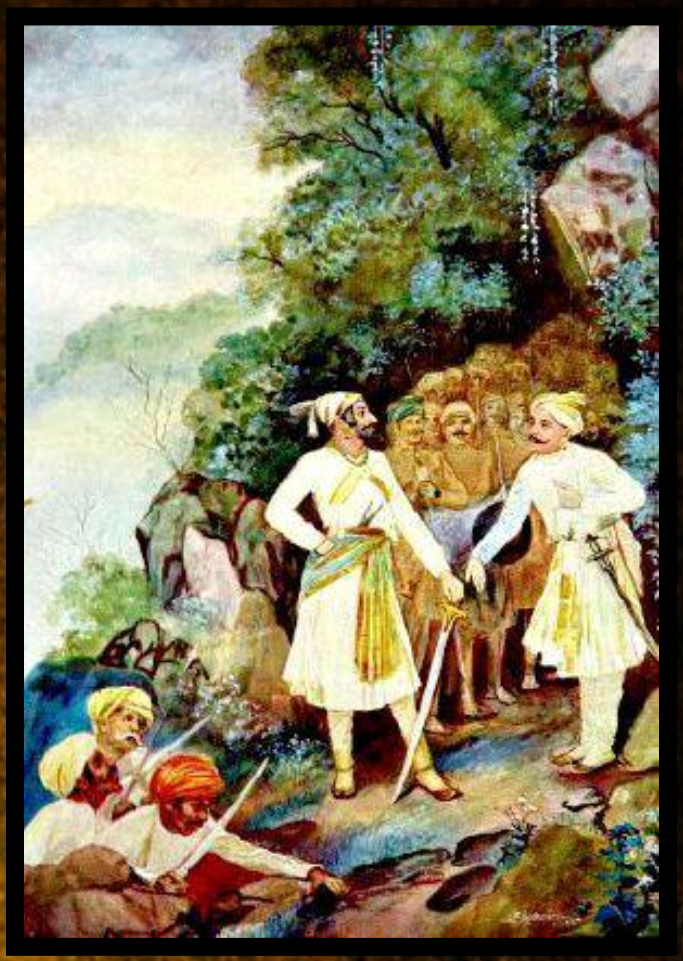

साहित्य प्रतिष्ठान®

शिवाजीकी ये छोटीसी सेना
स्वराजका सपना लेकर उठी
तो सारा मरहट्टा समाज
उनके पीछे खडा हुवा.
उसमें हमारे परदादा के परदादा के परदादा भी रहे होंगे.

जब जिंदगी मौतसे बदतर हो
तब "मौतका खौफ़" भी "मर" जाये

ऐसे मरना था या वैसे.
ज्यादातर लोगोंने शिवाजीका साथ देनेका
दुश्मनको मारकर जीनेका
फ़ैसला लिया.

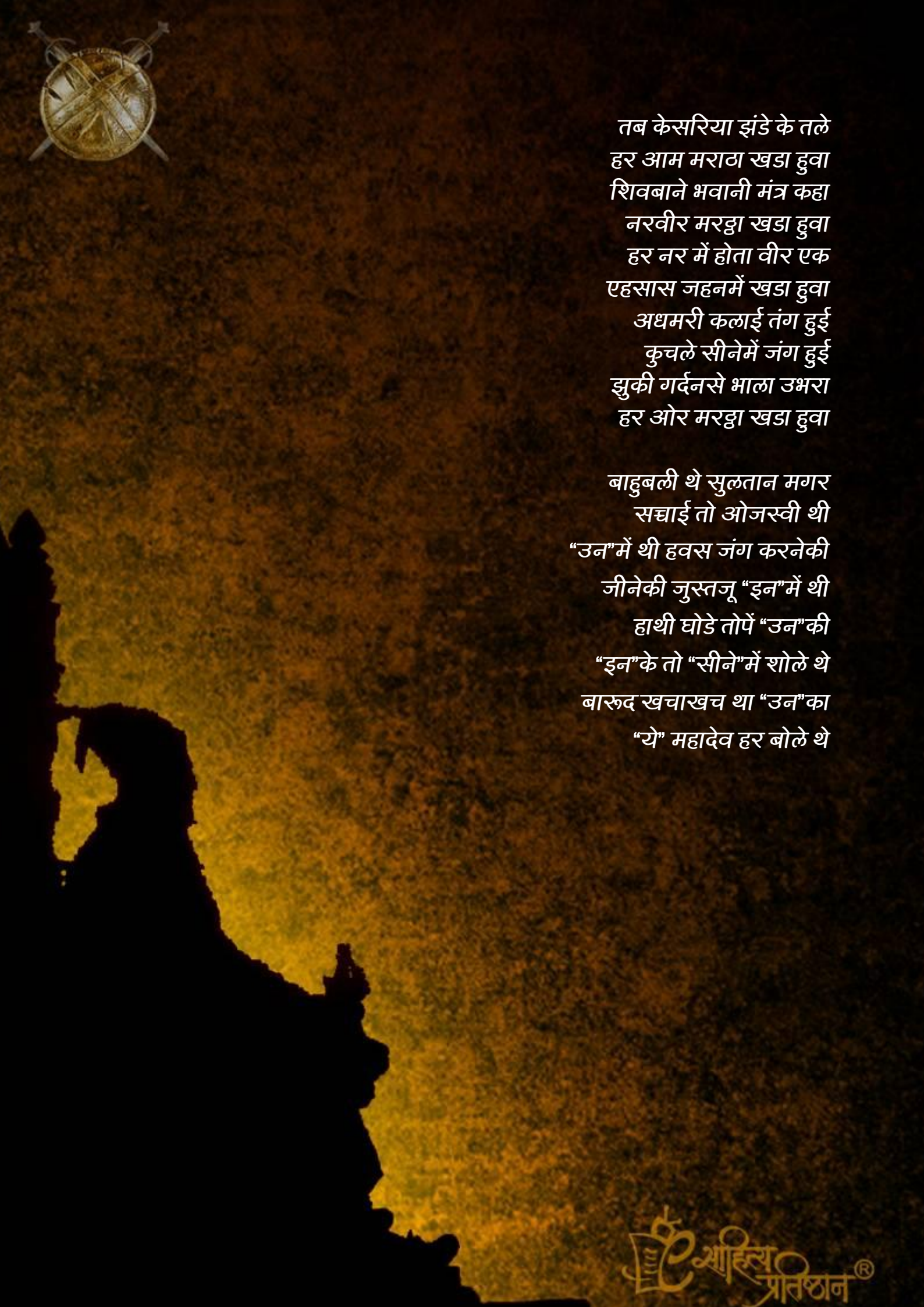

तब केसरिया झंडे के तले
हर आम मराठा खडा हुवा
शिवबाने भवानी मंत्र कहा
नरवीर मरद्वा खडा हुवा
हर नर में होता वीर एक
एहसास जहनमें खडा हुवा
अधमरी कलाई तंग हुई
कुचले सीनेमें जंग हुई
झुकी गर्दनसे भाला उभरा
हर ओर मरद्वा खडा हुवा

बाहुबली थे सुलतान मगर
सच्चाई तो ओजस्वी थी
"उन"में थी हवस जंग करनेकी
जीनेकी जुस्तजू "इन"में थी
हाथी घोडे तोपें "उन"की
"इन"के तो "सीने"में शोले थे
बारूद खचाखच था "उन"का
"ये" महादेव हर बोले थे

साहित्य प्रतिष्ठान®

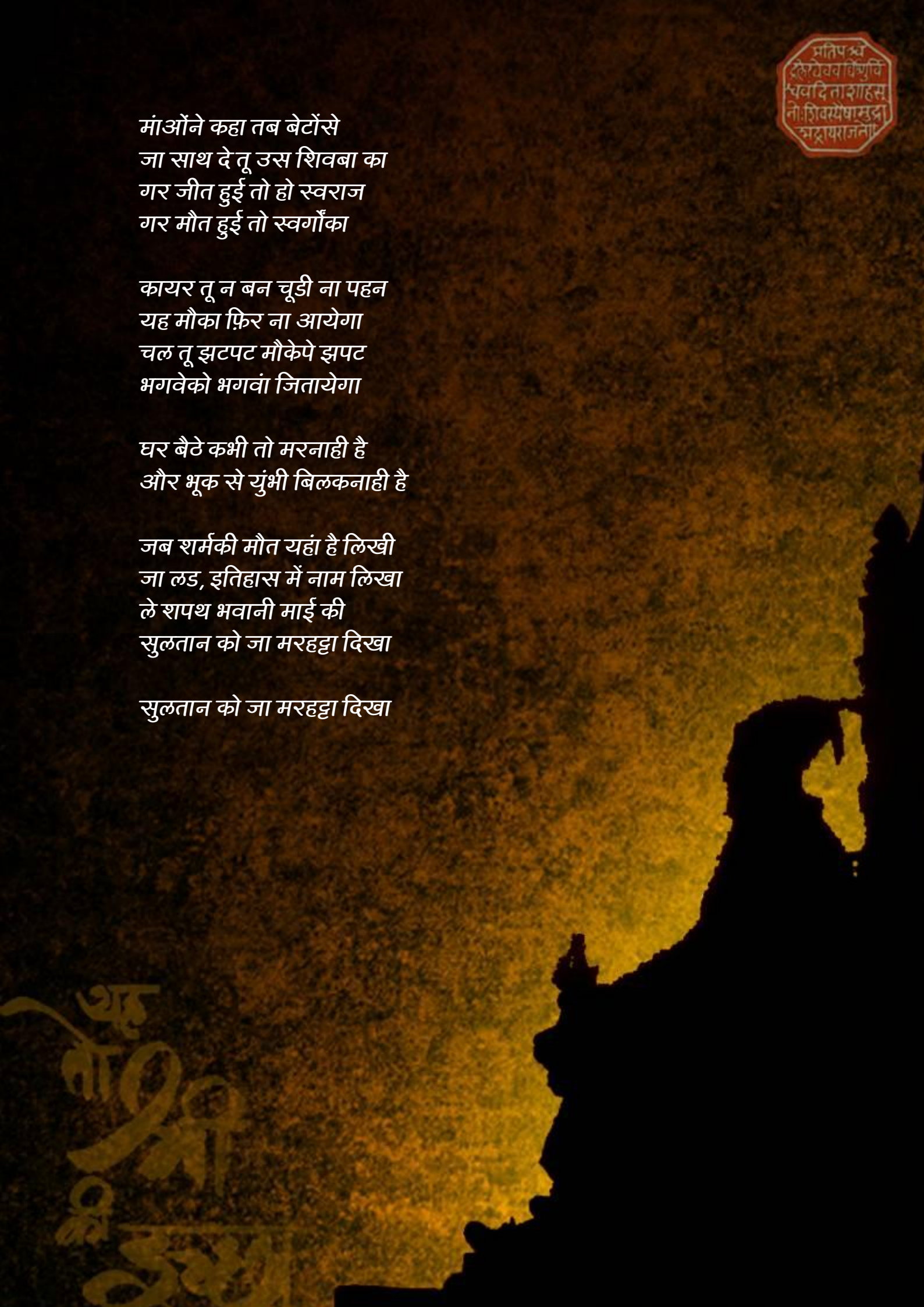

मांओंने कहा तब बेटोंसे
जा साथ दे तू उस शिवबा का
गर जीत हुई तो हो स्वराज
गर मौत हुई तो स्वर्गोंका

कायर तू न बन चूडी ना पहन
यह मौका फ़िर ना आयेगा
चल तू झटपट मौकेपे झपट
भगवेको भगवां जितायेगा

घर बैठे कभी तो मरनाही है
और भूक से युंभी बिलकनाही है

जब शर्मकी मौत यहां है लिखी
जा लड, इतिहास में नाम लिखा
ले शपथ भवानी माई की
सुलतान को जा मरहट्टा दिखा

सुलतान को जा मरहट्टा दिखा

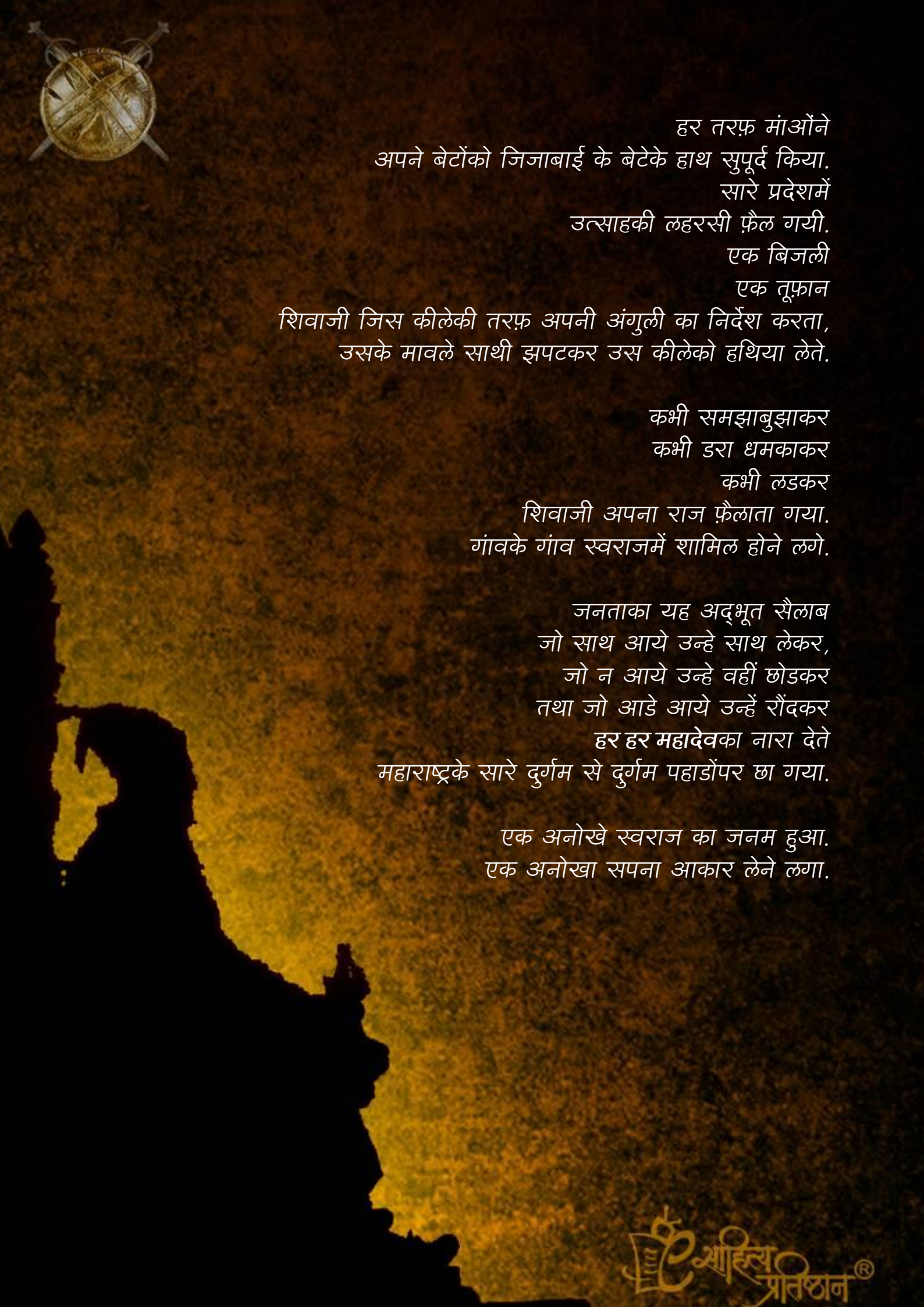

हर तरफ़ मांओंने
अपने बेटोंको जिजाबाई के बेटेके हाथ सुपूर्द किया.
सारे प्रदेशमें
उत्साहकी लहरसी फ़ैल गयी.
एक बिजली
एक तूफ़ान
शिवाजी जिस कीलेकी तरफ़ अपनी अंगुली का निर्देश करता,
उसके मावले साथी झपटकर उस कीलेको हथिया लेते.

कभी समझाबुझाकर
कभी डरा धमकाकर
कभी लडकर
शिवाजी अपना राज फ़ैलाता गया.
गांवके गांव स्वराजमें शामिल होने लगे.

जनताका यह अद्‌भूत सैलाब
जो साथ आये उन्हे साथ लेकर,
जो न आये उन्हे वहीं छोडकर
तथा जो आडे आये उन्हें रौंदकर
हर हर महादेवका नारा देते
महाराष्ट्रके सारे दुर्गम से दुर्गम पहाडोंपर छा गया.

एक अनोखे स्वराज का जनम हुआ.
एक अनोखा सपना आकार लेने लगा.

साहित्य प्रतिष्ठान®

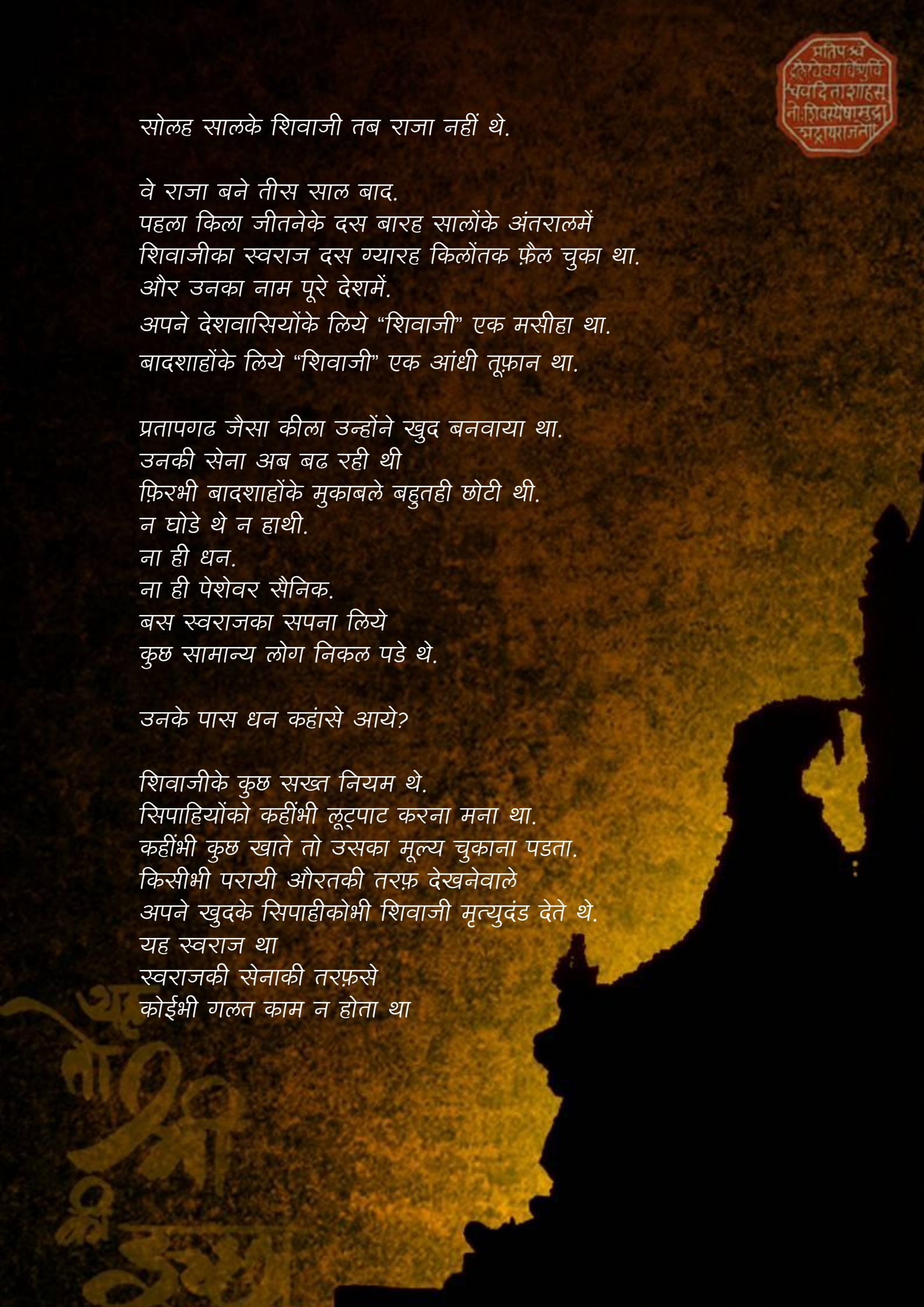

सोलह सालके शिवाजी तब राजा नहीं थे.

वे राजा बने तीस साल बाद.
पहला किला जीतनेके दस बारह सालोंके अंतरालमें
शिवाजीका स्वराज दस ग्यारह किलोंतक फ़ैल चुका था.
और उनका नाम पूरे देशमें.
अपने देशवासियोंके लिये "शिवाजी" एक मसीहा था.
बादशाहोंके लिये "शिवाजी" एक आंधी तूफ़ान था.

प्रतापगढ जैसा कीला उन्होंने खुद बनवाया था.
उनकी सेना अब बढ रही थी
फ़िरभी बादशाहोंके मुकाबले बहुतही छोटी थी.
न घोडे थे न हाथी.
ना ही धन.
ना ही पेशेवर सैनिक.
बस स्वराजका सपना लिये
कुछ सामान्य लोग निकल पडे थे.

उनके पास धन कहांसे आये?

शिवाजीके कुछ सख्त नियम थे.
सिपाहियोंको कहींभी लूट्पाट करना मना था.
कहींभी कुछ खाते तो उसका मूल्य चुकाना पडता.
किसीभी परायी औरतकी तरफ़ देखनेवाले
अपने खुदके सिपाहीकोभी शिवाजी मृत्युदंड देते थे.
यह स्वराज था
स्वराजकी सेनाकी तरफ़से
कोईभी गलत काम न होता था

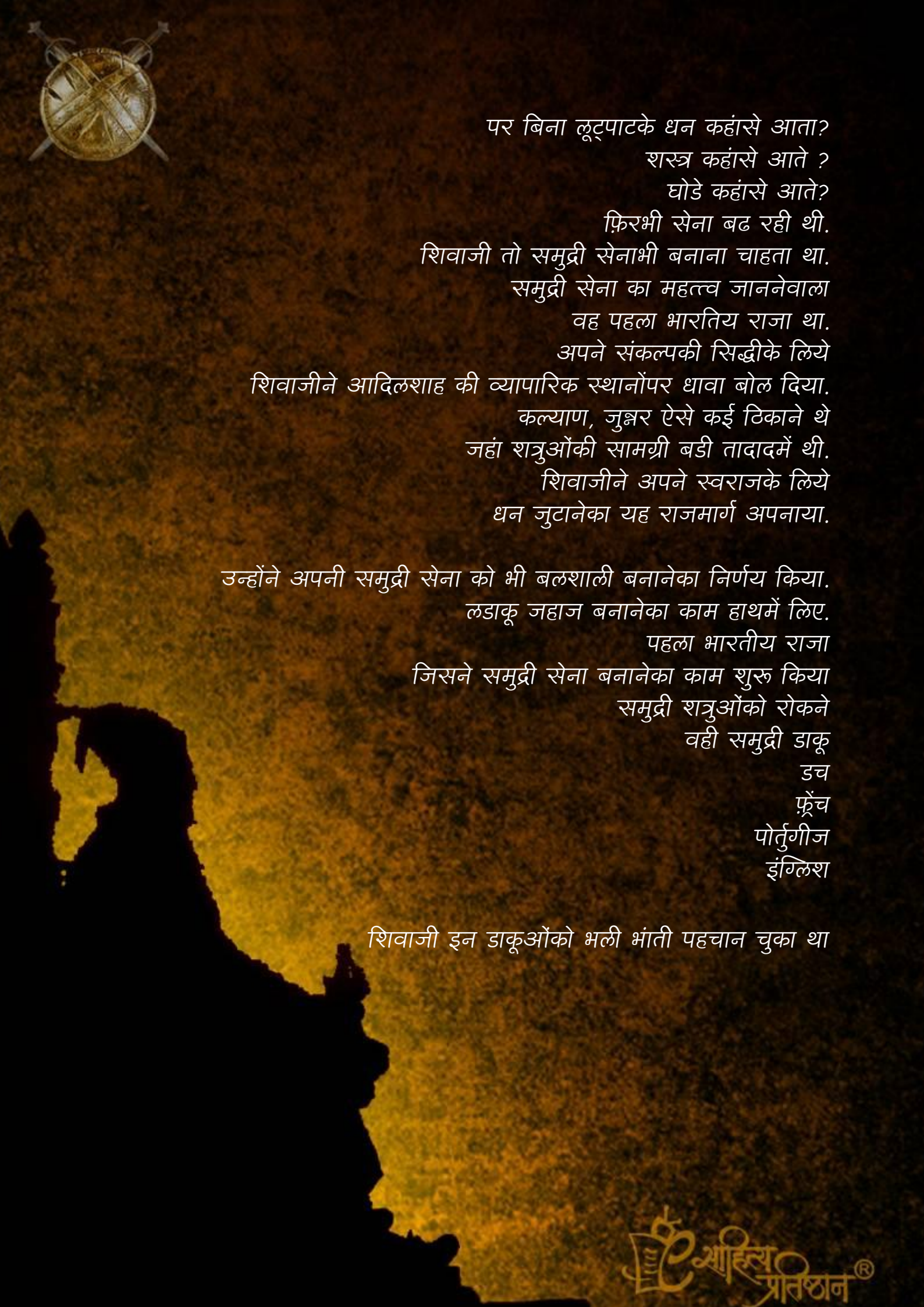

पर बिना लूट्पाटके धन कहांसे आता?
शस्त्र कहांसे आते ?
घोडे कहांसे आते?
फ़िरभी सेना बढ रही थी.
शिवाजी तो समुद्री सेनाभी बनाना चाहता था.
समुद्री सेना का महत्त्व जाननेवाला
वह पहला भारतिय राजा था.
अपने संकल्पकी सिद्धीके लिये
शिवाजीने आदिलशाह की व्यापारिक स्थानोंपर धावा बोल दिया.
कल्याण, जुन्नर ऐसे कई ठिकाने थे
जहां शत्रुओंकी सामग्री बडी तादादमें थी.
शिवाजीने अपने स्वराजके लिये
धन जुटानेका यह राजमार्ग अपनाया.

उन्होंने अपनी समुद्री सेना को भी बलशाली बनानेका निर्णय किया.
लडाकू जहाज बनानेका काम हाथमें लिए.
पहला भारतीय राजा
जिसने समुद्री सेना बनानेका काम शुरू किया
समुद्री शत्रुओंको रोकने
वही समुद्री डाकू
डच
फ़्रेंच
पोर्तुगीज
इंग्लिश

शिवाजी इन डाकूओंको भली भांती पहचान चुका था

साहित्य प्रतिष्ठान®

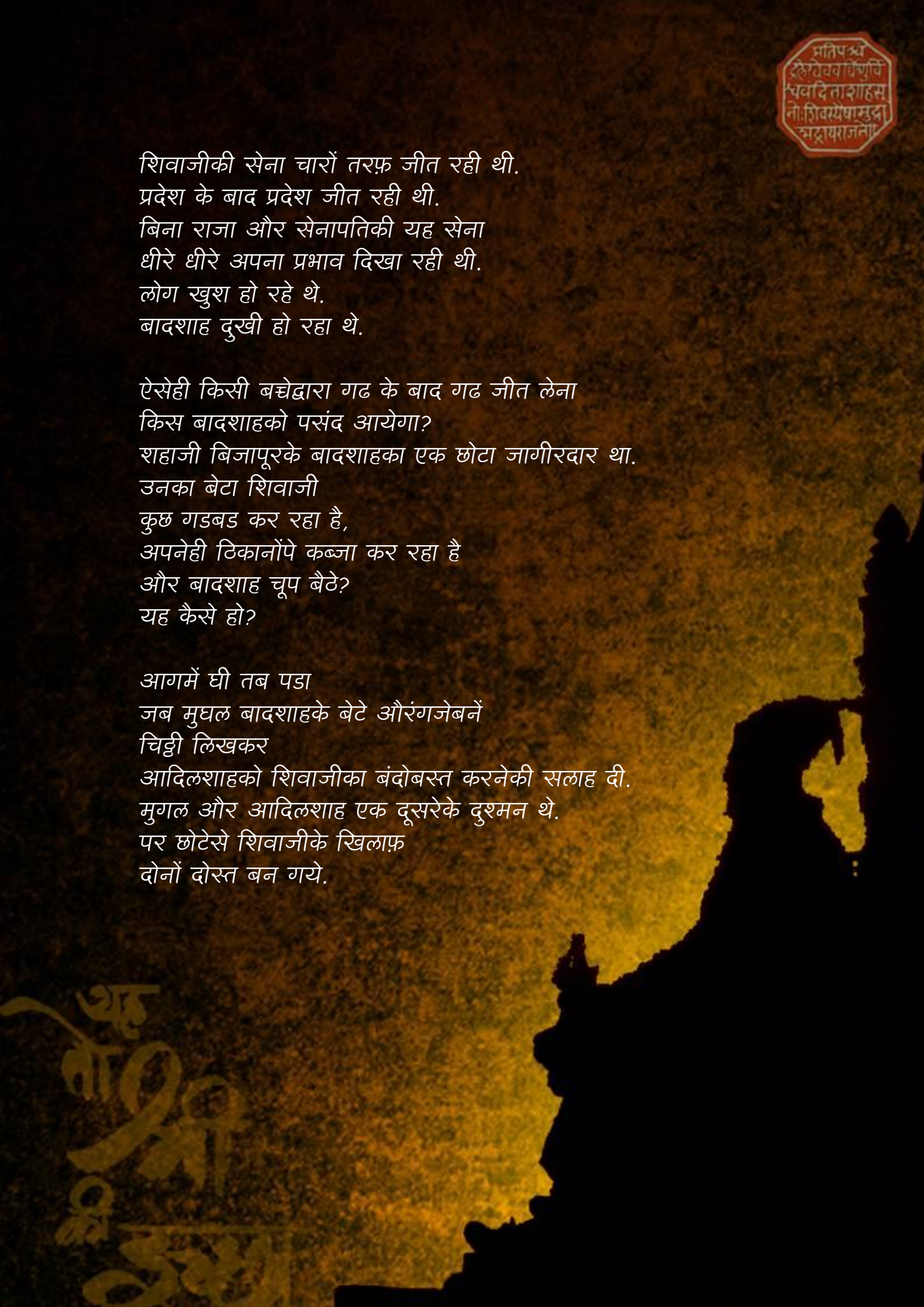

शिवाजीकी सेना चारों तरफ़ जीत रही थी.
प्रदेश के बाद प्रदेश जीत रही थी.
बिना राजा और सेनापतिकी यह सेना
धीरे धीरे अपना प्रभाव दिखा रही थी.
लोग खुश हो रहे थे.
बादशाह दुखी हो रहा थे.

ऐसेही किसी बच्चेद्वारा गढ के बाद गढ जीत लेना
किस बादशाहको पसंद आयेगा?
शहाजी बिजापूरके बादशाहका एक छोटा जागीरदार था.
उनका बेटा शिवाजी
कुछ गडबड कर रहा है,
अपनेही ठिकानोंपे कब्जा कर रहा है
और बादशाह चूप बैठे?
यह कैसे हो?

आगमें घी तब पडा
जब मुघल बादशाहके बेटे औरंगजेबनें
चिट्ठी लिखकर
आदिलशाहको शिवाजीका बंदोबस्त करनेकी सलाह दी.
मुगल और आदिलशाह एक दूसरेके दुश्मन थे.
पर छोटेसे शिवाजीके खिलाफ़
दोनों दोस्त बन गये.

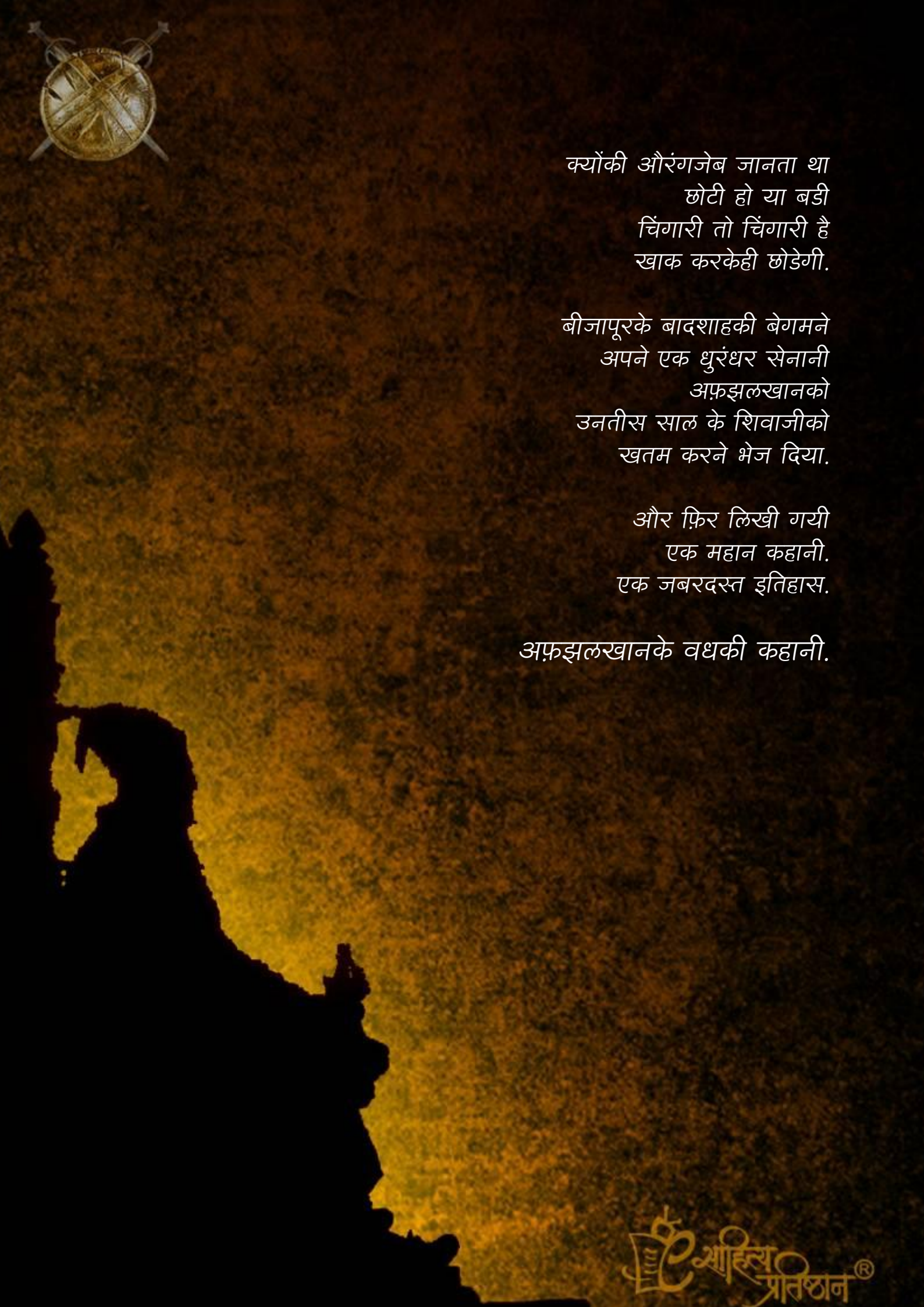

क्योंकी औरंगजेब जानता था
छोटी हो या बडी
चिंगारी तो चिंगारी है
खाक करकेही छोडेगी.

बीजापूरके बादशाहकी बेगमने
अपने एक धुरंधर सेनानी
अफ़झलखानको
उनतीस साल के शिवाजीको
खतम करने भेज दिया.

और फ़िर लिखी गयी
एक महान कहानी.
एक जबरदस्त इतिहास.

अफ़झलखानके वधकी कहानी.

साहित्य प्रतिष्ठान®

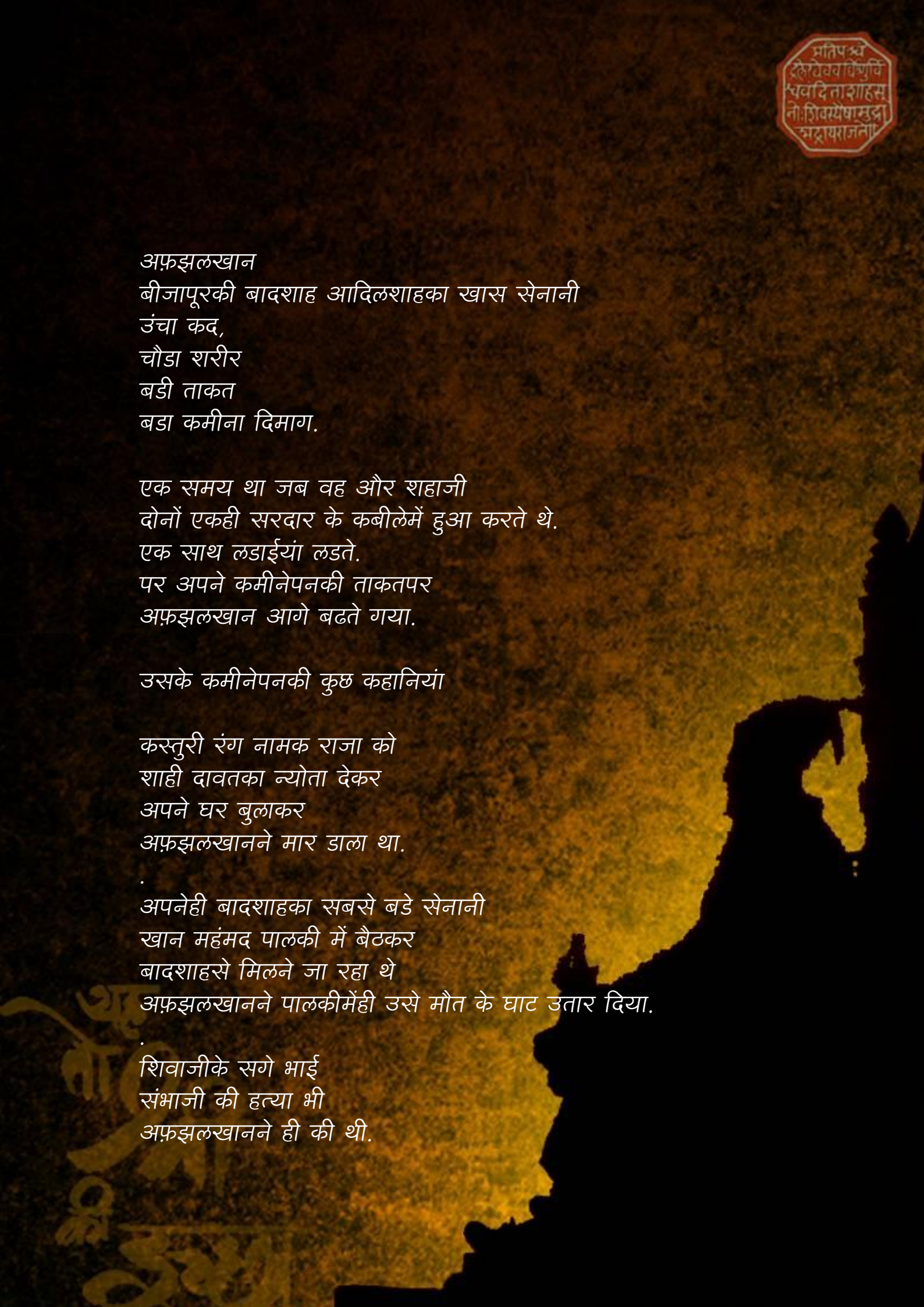

अफ़झलखान
बीजापूरकी बादशाह आदिलशाहका खास सेनानी
उंचा कद,
चौडा शरीर
बडी ताकत
बडा कमीना दिमाग.

एक समय था जब वह और शहाजी
दोनों एकही सरदार के कबीलेमें हुआ करते थे.
एक साथ लडाईयां लडते.
पर अपने कमीनेपनकी ताकतपर
अफ़झलखान आगे बढते गया.

उसके कमीनेपनकी कुछ कहानियां

कस्तुरी रंग नामक राजा को
शाही दावतका न्योता देकर
अपने घर बुलाकर
अफ़झलखानने मार डाला था.
.
अपनेही बादशाहका सबसे बडे सेनानी
खान महंमद पालकी में बैठकर
बादशाहसे मिलने जा रहा थे
अफ़झलखानने पालकीमेंही उसे मौत के घाट उतार दिया.
.
शिवाजीके सगे भाई
संभाजी की हत्या भी
अफ़झलखानने ही की थी.

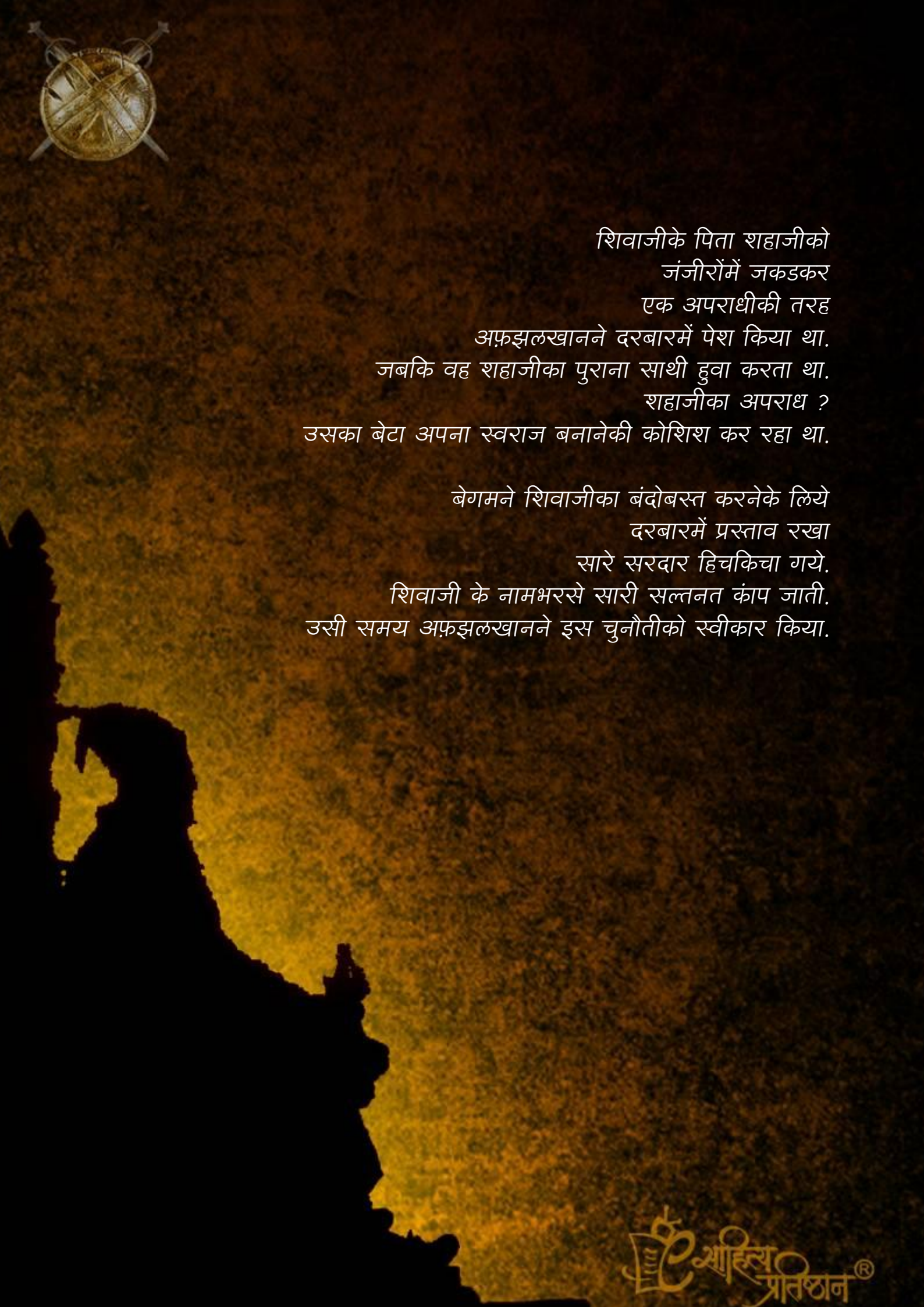

शिवाजीके पिता शहाजीको
जंजीरोंमें जकडकर
एक अपराधीकी तरह
अफ़झलखानने दरबारमें पेश किया था.
जबकि वह शहाजीका पुराना साथी हुवा करता था.
शहाजीका अपराध ?
उसका बेटा अपना स्वराज बनानेकी कोशिश कर रहा था.

बेगमने शिवाजीका बंदोबस्त करनेके लिये
दरबारमें प्रस्ताव रखा
सारे सरदार हिचकिचा गये.
शिवाजी के नामभरसे सारी सल्तनत कांप जाती.
उसी समय अफ़झलखानने इस चुनौतीको स्वीकार किया.

साहित्य प्रतिष्ठान®

शिवाजी की सेनामे उस समय पांच -सात हजार सिपाही थे.
अफ़झलखानकी सेना में
दसहजार घुड-सवार,
बारह हजार जमीनी सिपाही थे.
हाथी , उंट
तोपोंसे लैस उसकी सेना
शिवाजीकी सेनासे कई गुना जादा थी.

फ़िर भी बेगम आश्वस्त नहीं थी.
उसने दूसरे बारह सरदारोंको
अफ़झलखानकी सेना के साथ
अपनी अपनी सेना लेकर जानेका हुक्म दिया.

स्वयं अफ़झलखान महराष्ट्रमें वाई गांवमें बारह साल रह चुका था.
इन बारह सरदारोंमें भी कई ऐसे थे
जो शिवाजीके इलाकेको अच्छी तरहसे जानते थे.
प्रचंड सेना.
जानकार, पेशेवर और जांबाज सिपाही.

फ़िरभी वो आश्वस्त नहीं थे.
उन्होंने महराष्ट्रके अनेक छोटे मोटे सरदारोंको
इस सेनाकी मदद के लिये बुलाया.
जगह जगहसे उन्हें मदद मिलने लगी.
इन्सानी कमजोरी ...
जब जीत का पलडा एक तरफ़ भारी होता दिखे
तो हर कोई उसीकी ओर तो दौडता है.
दुनियाकी रीत यही है.

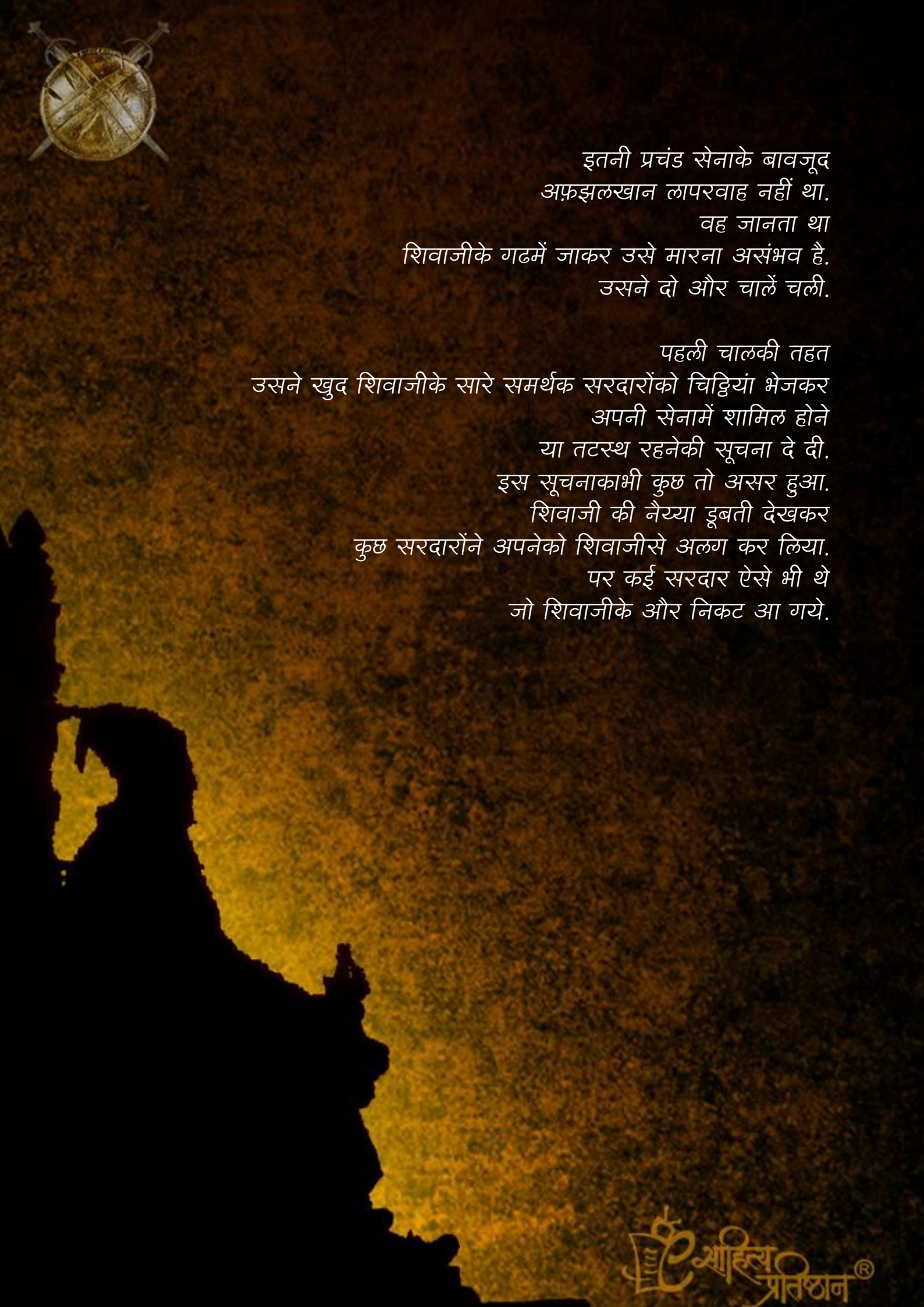

इतनी प्रचंड सेनाके बावजूद
अफ़झलखान लापरवाह नहीं था.
वह जानता था
शिवाजीके गढमें जाकर उसे मारना असंभव है.
उसने दो और चालें चली.

पहली चालकी तहत
उसने खुद शिवाजीके सारे समर्थक सरदारोंको चिट्ठियां भेजकर
अपनी सेनामें शामिल होने
या तटस्थ रहनेकी सूचना दे दी.
इस सूचनाकाभी कुछ तो असर हुआ.
शिवाजी की नैय्या डूबती देखकर
कुछ सरदारोंने अपनेको शिवाजीसे अलग कर लिया.
पर कई सरदार ऐसे भी थे
जो शिवाजीके और निकट आ गये.

साहित्य प्रतिष्ठान®

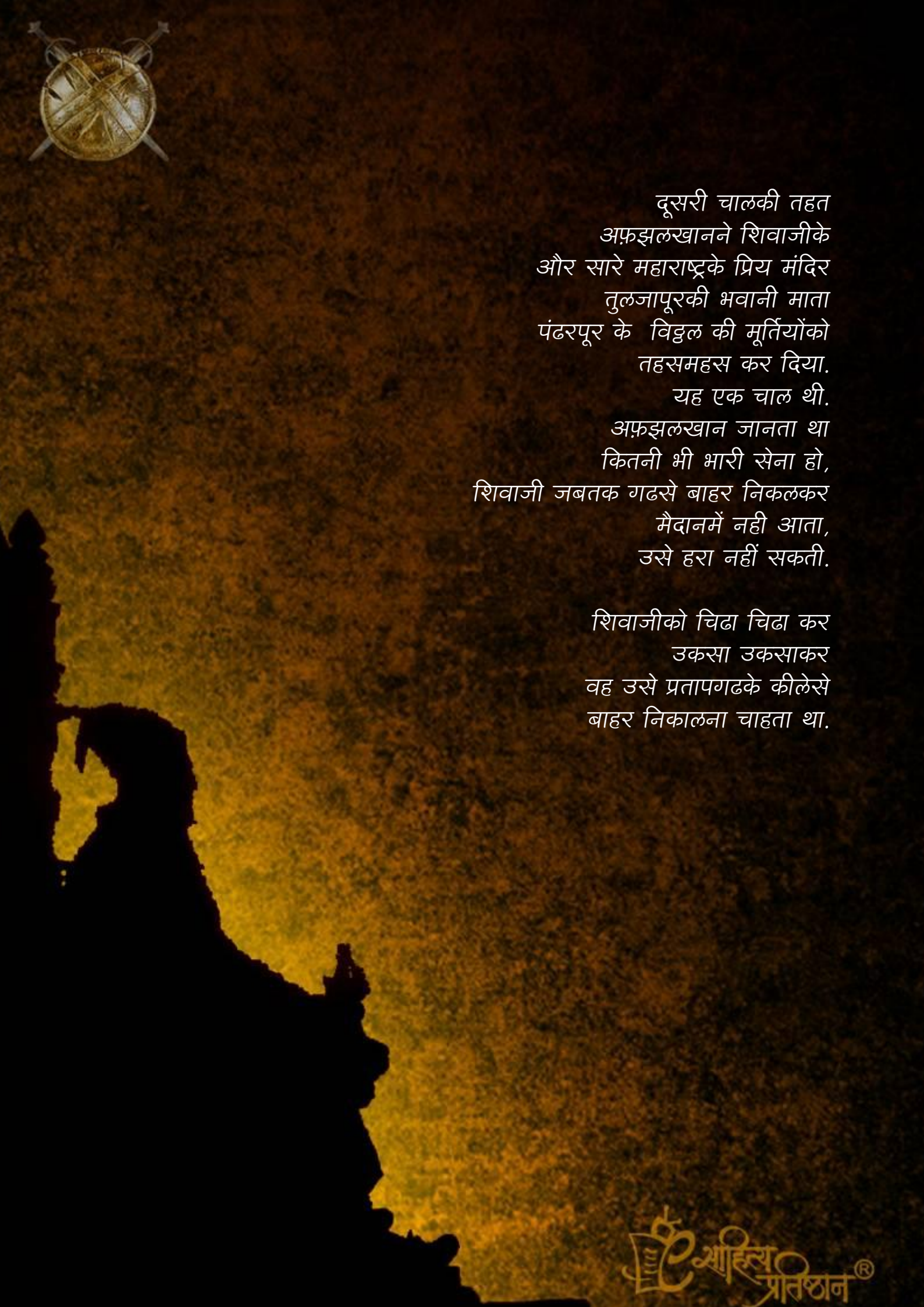

दूसरी चालकी तहत
अफ़झलखानने शिवाजीके
और सारे महाराष्ट्रके प्रिय मंदिर
तुलजापूरकी भवानी माता
पंढरपूर के विट्ठल की मूर्तियोंको
तहसमहस कर दिया.
यह एक चाल थी.
अफ़झलखान जानता था
कितनी भी भारी सेना हो,
शिवाजी जबतक गढसे बाहर निकलकर
मैदानमें नही आता,
उसे हरा नहीं सकती.

शिवाजीको चिढा चिढा कर
उकसा उकसाकर
वह उसे प्रतापगढके कीलेसे
बाहर निकालना चाहता था.

साहित्य प्रतिष्ठान®

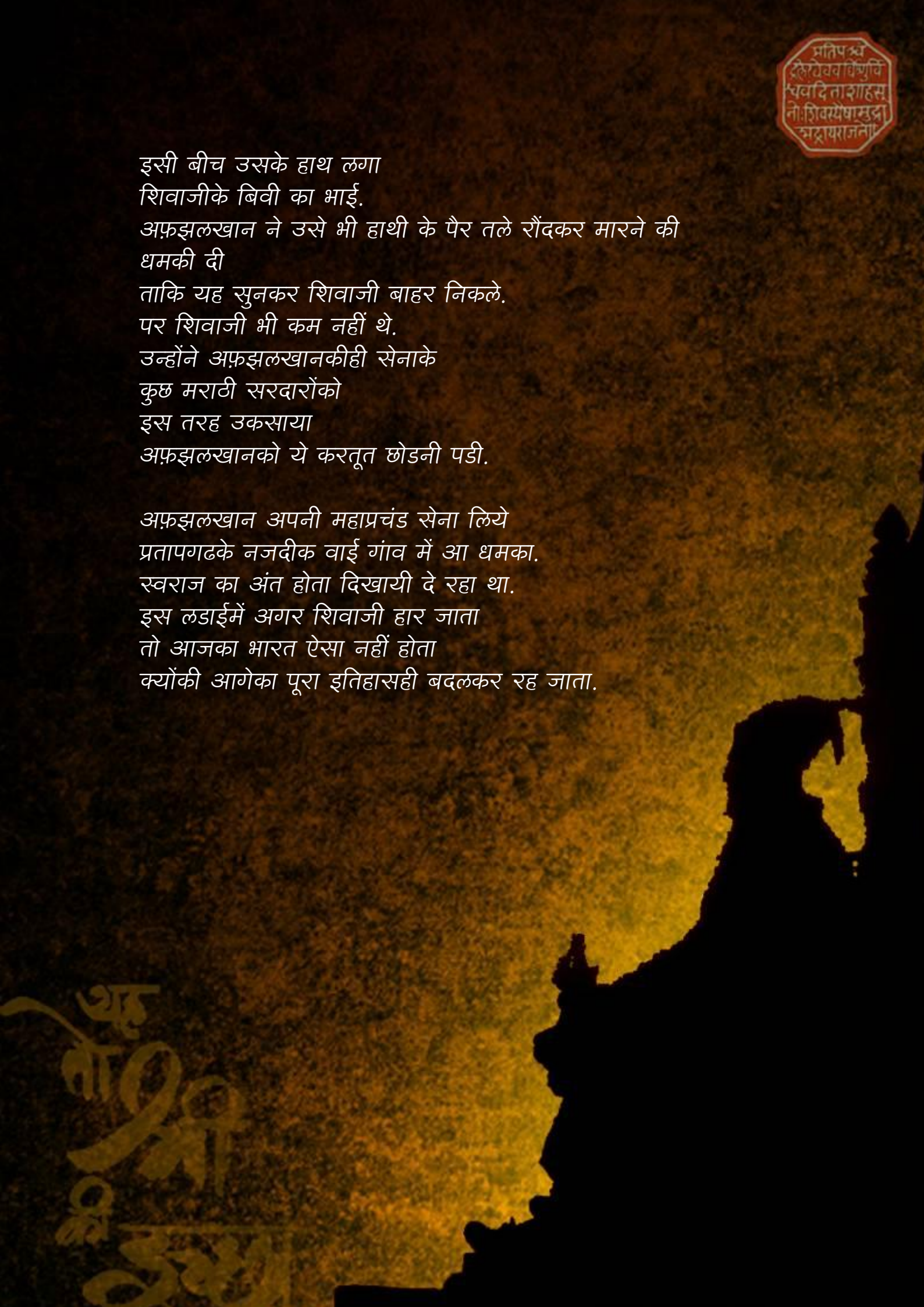

इसी बीच उसके हाथ लगा
शिवाजीके बिवी का भाई.
अफ़झलखान ने उसे भी हाथी के पैर तले रौंदकर मारने की
धमकी दी
ताकि यह सुनकर शिवाजी बाहर निकले.
पर शिवाजी भी कम नहीं थे.
उन्होंने अफ़झलखानकीही सेनाके
कुछ मराठी सरदारोंको
इस तरह उकसाया
अफ़झलखानको ये करतूत छोडनी पडी.

अफ़झलखान अपनी महाप्रचंड सेना लिये
प्रतापगढके नजदीक वाई गांव में आ धमका.
स्वराज का अंत होता दिखायी दे रहा था.
इस लडाईमें अगर शिवाजी हार जाता
तो आजका भारत ऐसा नहीं होता
क्योंकी आगेका पूरा इतिहासही बदलकर रह जाता.

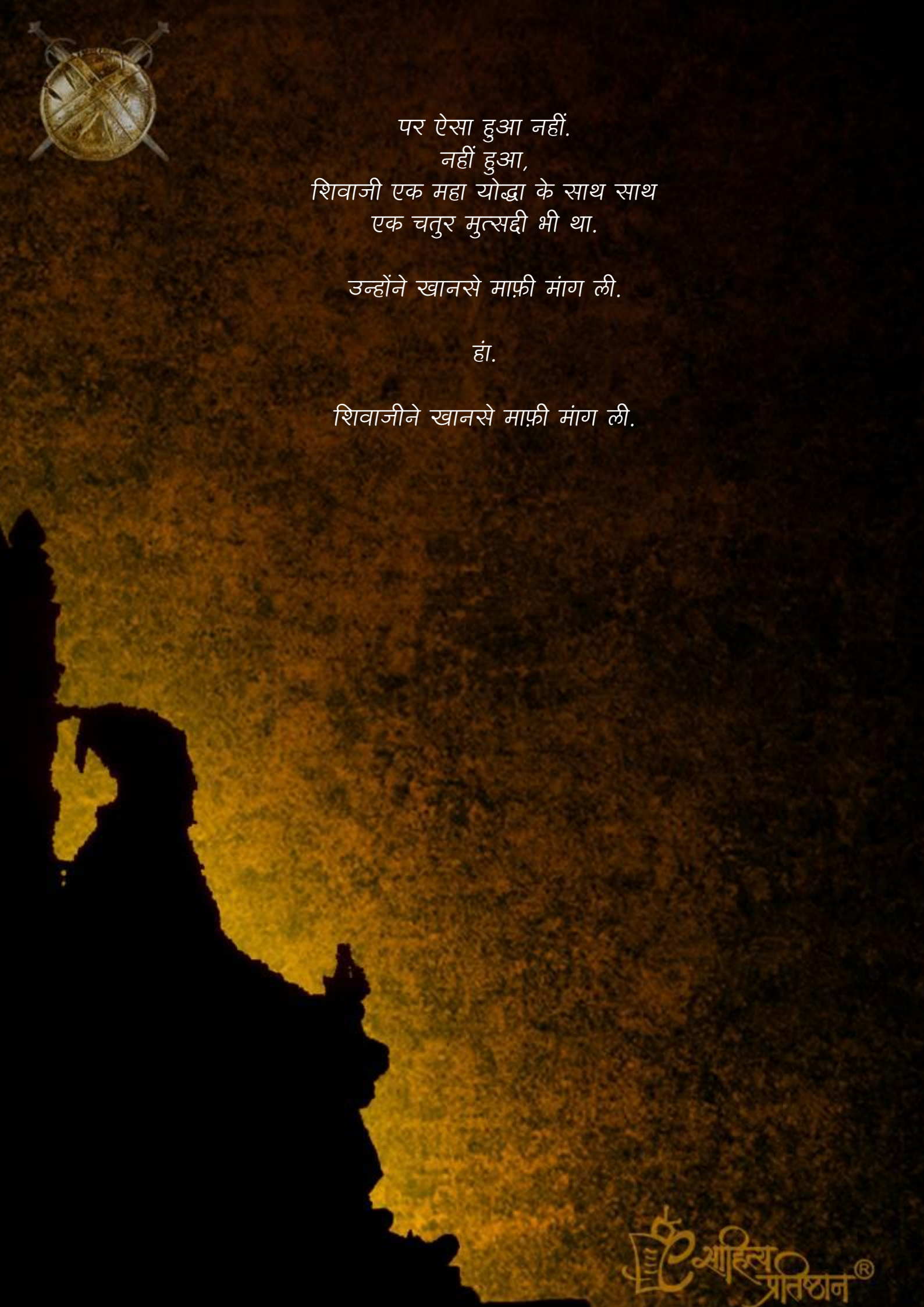

पर ऐसा हुआ नहीं.
नहीं हुआ,
शिवाजी एक महा योद्धा के साथ साथ
एक चतुर मुत्सद्दी भी था.

उन्होंने खानसे माफ़ी मांग ली.

हां.

शिवाजीने खानसे माफ़ी मांग ली.

साहित्य प्रतिष्ठान®

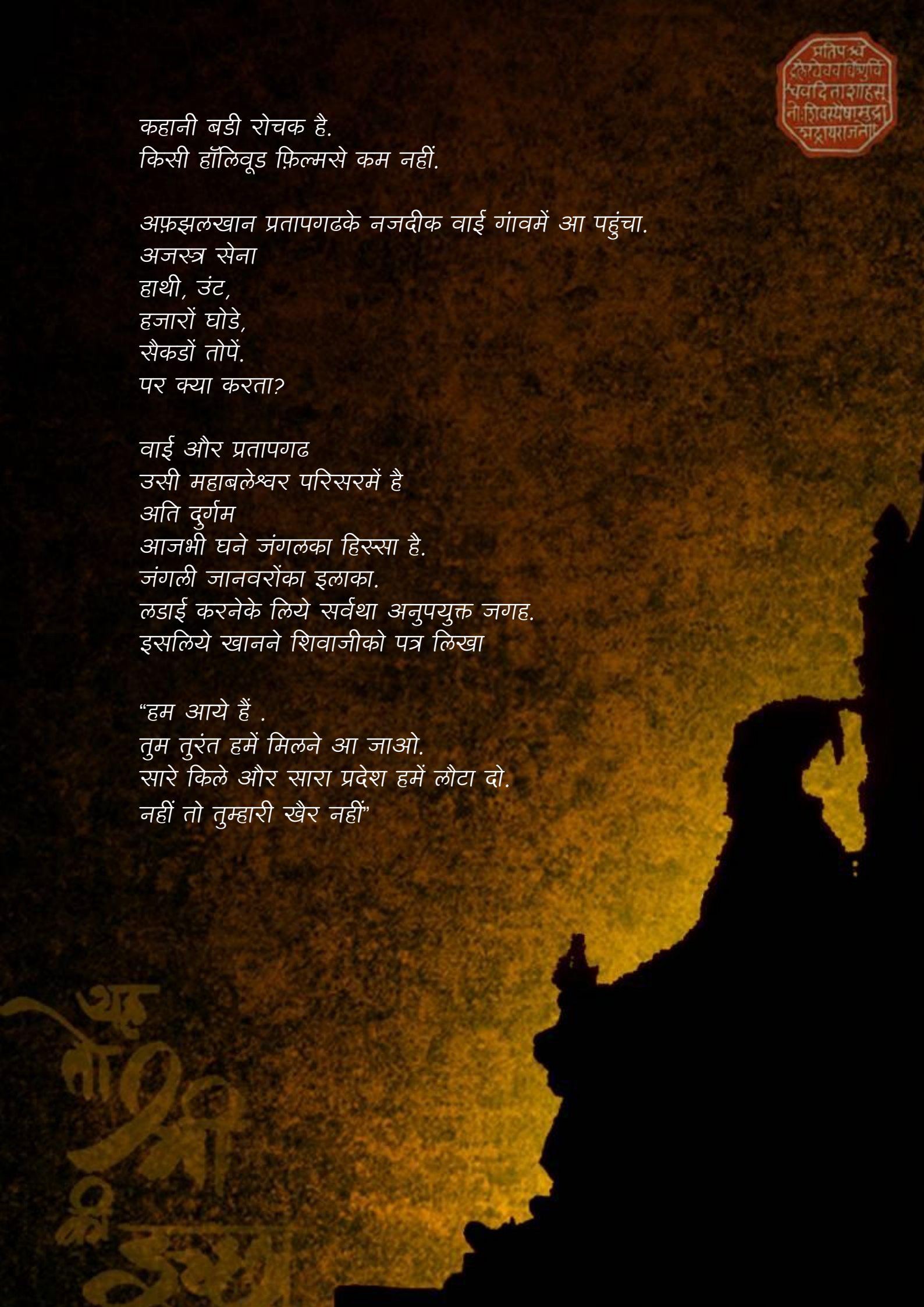

कहानी बडी रोचक है.
किसी हॉलिवूड फ़िल्मसे कम नहीं.

अफ़झलखान प्रतापगढके नजदीक वाई गांवमें आ पहुंचा.
अजस्त्र सेना
हाथी, उंट,
हजारों घोडे,
सैकडों तोपें.
पर क्या करता?

वाई और प्रतापगढ
उसी महाबलेश्वर परिसरमें है
अति दुर्गम
आजभी घने जंगलका हिस्सा है.
जंगली जानवरोंका इलाका.
लडाई करनेके लिये सर्वथा अनुपयुक्त जगह.
इसलिये खानने शिवाजीको पत्र लिखा

“हम आये हैं .
तुम तुरंत हमें मिलने आ जाओ.
सारे किले और सारा प्रदेश हमें लौटा दो.
नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं”

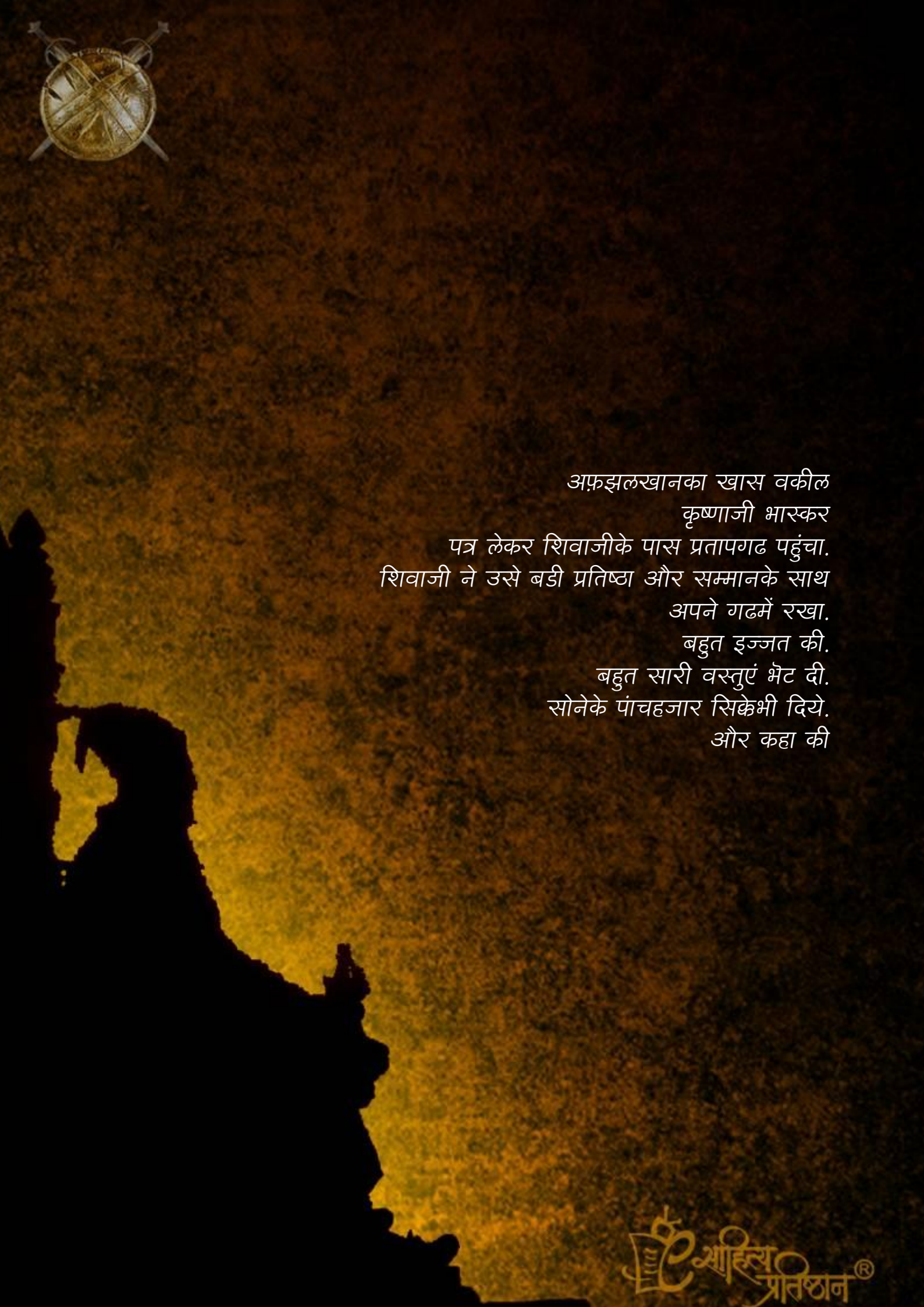

अफ़झलखानका खास वकील
कृष्णाजी भास्कर
पत्र लेकर शिवाजीके पास प्रतापगढ पहुंचा.
शिवाजी ने उसे बडी प्रतिष्ठा और सम्मानके साथ
अपने गढमें रखा.
बहुत इज्जत की.
बहुत सारी वस्तुएं भेंट दी.
सोनेके पांचहजार सिक्केभी दिये.
और कहा की

साहित्य प्रतिष्ठान®

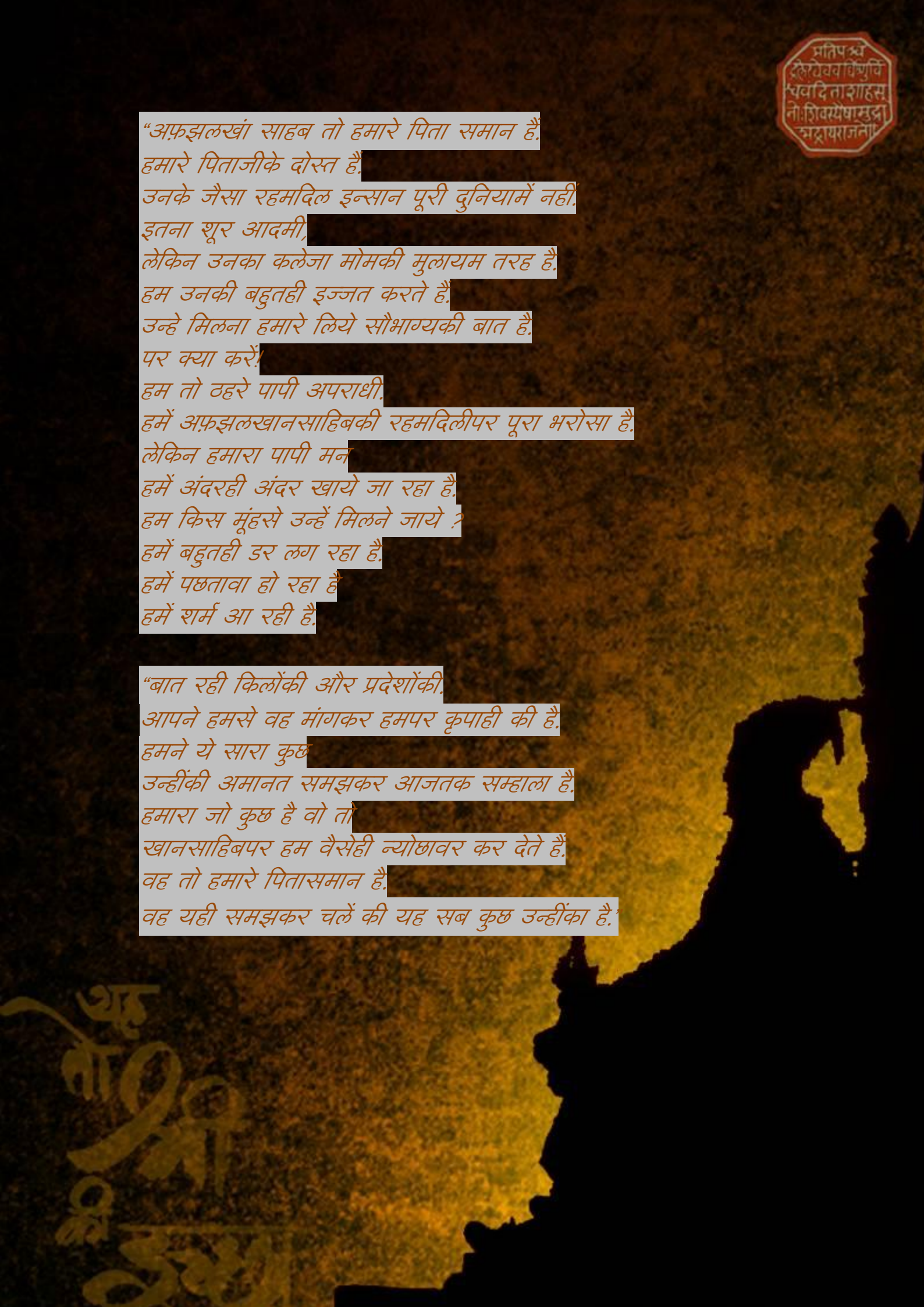

"अफ़झलखां साहब तो हमारे पिता समान हैं.
हमारे पिताजीके दोस्त हैं.
उनके जैसा रहमदिल इन्सान पूरी दुनियामें नही.
इतना शूर आदमी,
लेकिन उनका कलेजा मोमकी मुलायम तरह है.
हम उनकी बहुतही इज्जत करते है.
उन्हे मिलना हमारे लिये सौभाग्यकी बात है.
पर क्या करें!
हम तो ठहरे पापी अपराधी.
हमें अफ़झलखानसाहिबकी रहमदिलीपर पूरा भरोसा है.
लेकिन हमारा पापी मन
हमें अंदरही अंदर खाये जा रहा है.
हम किस मूंहसे उन्हें मिलने जाये ?
हमें बहुतही डर लग रहा है.
हमें पछतावा हो रहा है
हमें शर्म आ रही है.

"बात रही किलोंकी और प्रदेशोंकी.
आपने हमसे वह मांगकर हमपर कृपाही की है.
हमने ये सारा कुछ
उन्हींकी अमानत समझकर आजतक सम्हाला है.
हमारा जो कुछ है वो तो
खानसाहिबपर हम वैसेही न्योछावर कर देते हैं.
वह तो हमारे पितासमान है.
वह यही समझकर चलें की यह सब कुछ उन्हींका है."

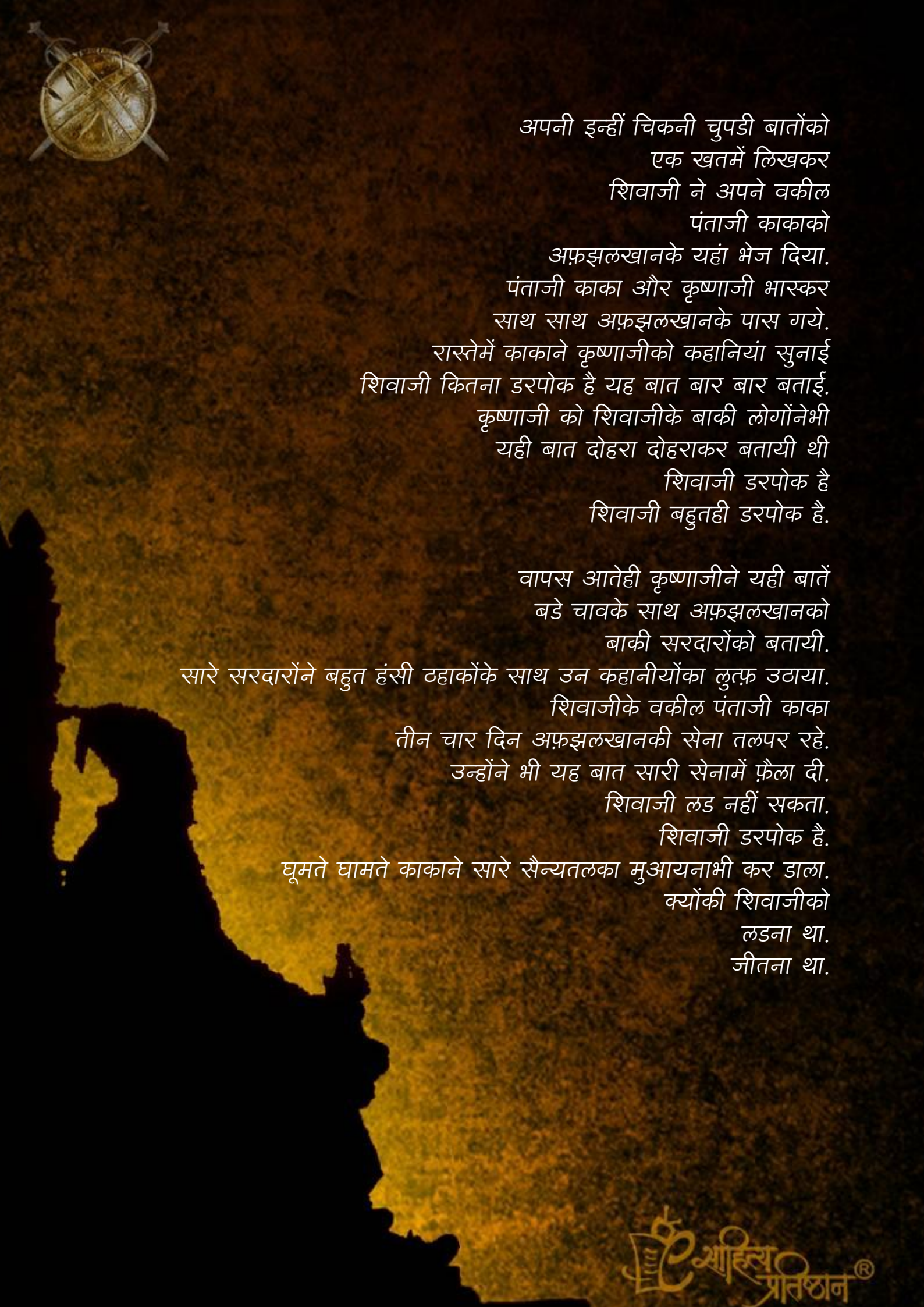

अपनी इन्हीं चिकनी चुपडी बातोंको
एक खतमें लिखकर
शिवाजी ने अपने वकील
पंताजी काकाको
अफ़झलखानके यहां भेज दिया.
पंताजी काका और कृष्णाजी भास्कर
साथ साथ अफ़झलखानके पास गये.
रास्तेमें काकाने कृष्णाजीको कहानियां सुनाई
शिवाजी कितना डरपोक है यह बात बार बार बताई.
कृष्णाजी को शिवाजीके बाकी लोगोंनेभी
यही बात दोहरा दोहराकर बतायी थी
शिवाजी डरपोक है
शिवाजी बहुतही डरपोक है.

वापस आतेही कृष्णाजीने यही बातें
बडे चावके साथ अफ़झलखानको
बाकी सरदारोंको बतायी.
सारे सरदारोंने बहुत हंसी ठहाकोंके साथ उन कहानीयोंका लुत्फ़ उठाया.
शिवाजीके वकील पंताजी काका
तीन चार दिन अफ़झलखानकी सेना तलपर रहे.
उन्होंने भी यह बात सारी सेनामें फ़ैला दी.
शिवाजी लड नहीं सकता.
शिवाजी डरपोक है.
घूमते घामते काकाने सारे सैन्यतलका मुआयनाभी कर डाला.
क्योंकी शिवाजीको
लडना था.
जीतना था.

साहित्य प्रतिष्ठान®

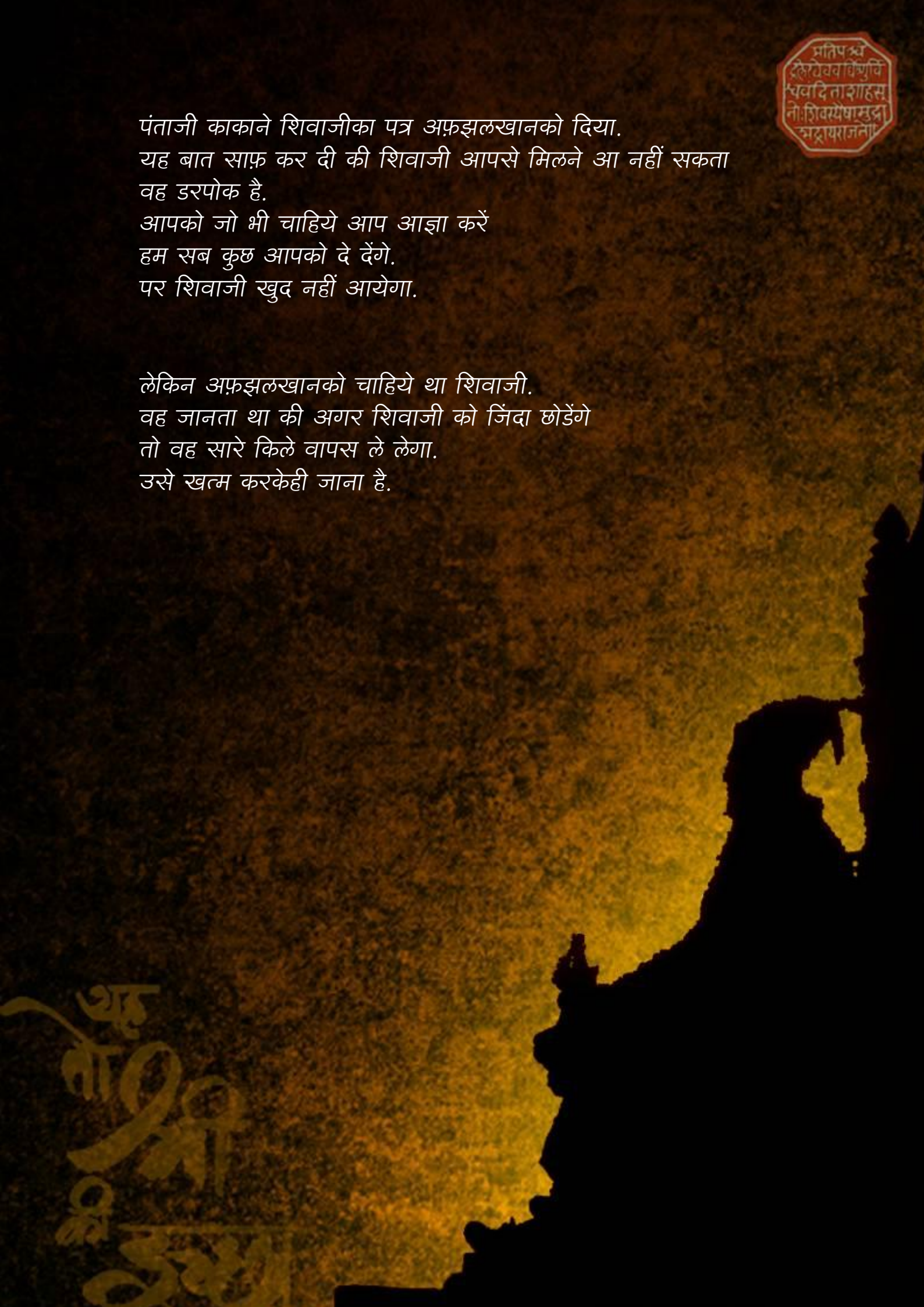

पंताजी काकाने शिवाजीका पत्र अफ़झलखानको दिया.
यह बात साफ़ कर दी की शिवाजी आपसे मिलने आ नहीं सकता
वह डरपोक है.
आपको जो भी चाहिये आप आज्ञा करें
हम सब कुछ आपको दे देंगे.
पर शिवाजी खुद नहीं आयेगा.

लेकिन अफ़झलखानको चाहिये था शिवाजी.
वह जानता था की अगर शिवाजी को जिंदा छोडेंगे
तो वह सारे किले वापस ले लेगा.
उसे खत्म करकेही जाना है.

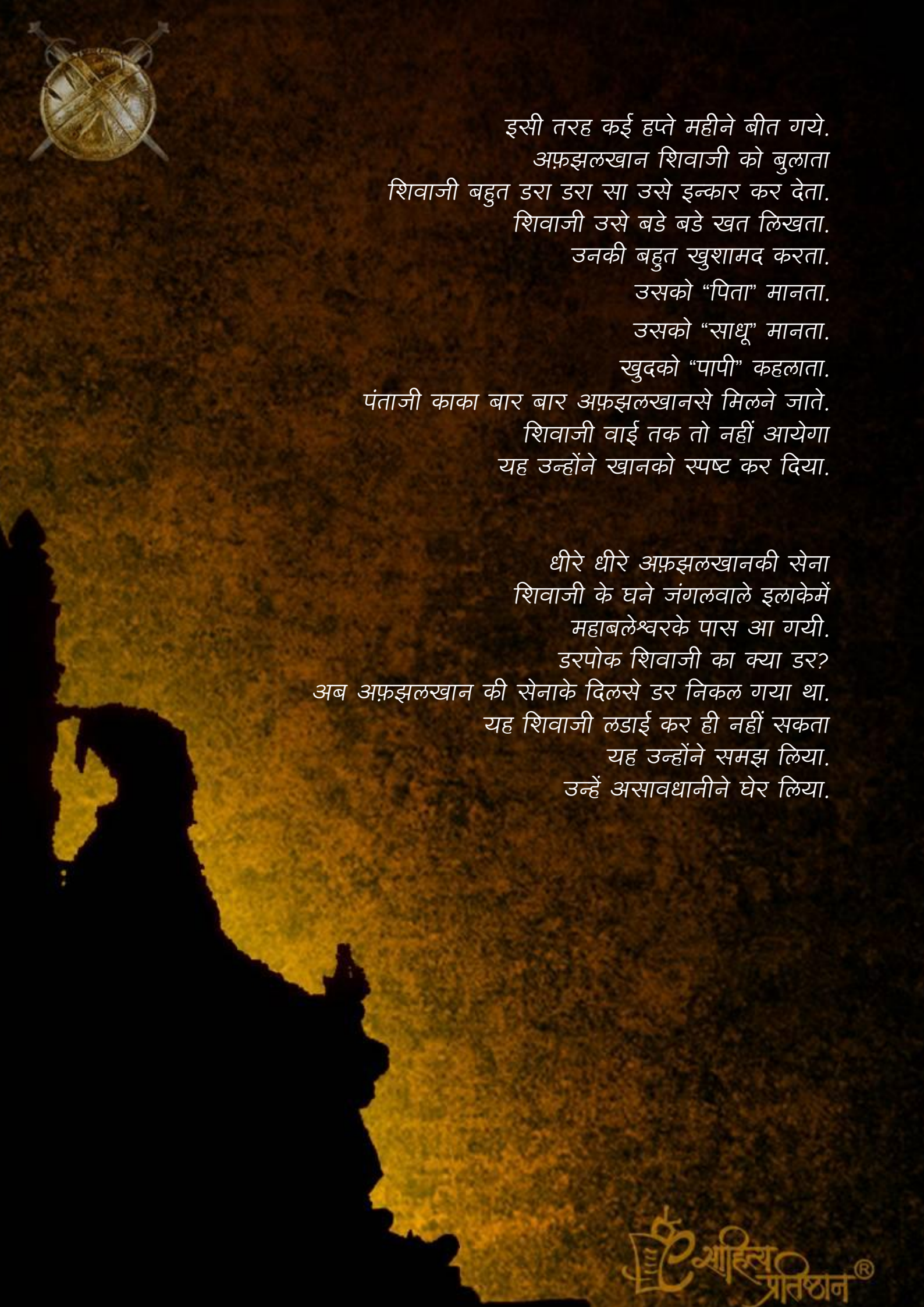

इसी तरह कई हप्ते महीने बीत गये.
अफ़झलखान शिवाजी को बुलाता
शिवाजी बहुत डरा डरा सा उसे इन्कार कर देता.
शिवाजी उसे बडे बडे खत लिखता.
उनकी बहुत खुशामद करता.
उसको "पिता" मानता.
उसको "साधू" मानता.
खुदको "पापी" कहलाता.
पंताजी काका बार बार अफ़झलखानसे मिलने जाते.
शिवाजी वाई तक तो नहीं आयेगा
यह उन्होंने खानको स्पष्ट कर दिया.

धीरे धीरे अफ़झलखानकी सेना
शिवाजी के घने जंगलवाले इलाकेमें
महाबलेश्वरके पास आ गयी.
डरपोक शिवाजी का क्या डर?
अब अफ़झलखान की सेनाके दिलसे डर निकल गया था.
यह शिवाजी लडाई कर ही नहीं सकता
यह उन्होंने समझ लिया.
उन्हें असावधानीने घेर लिया.

साहित्य प्रतिष्ठान®

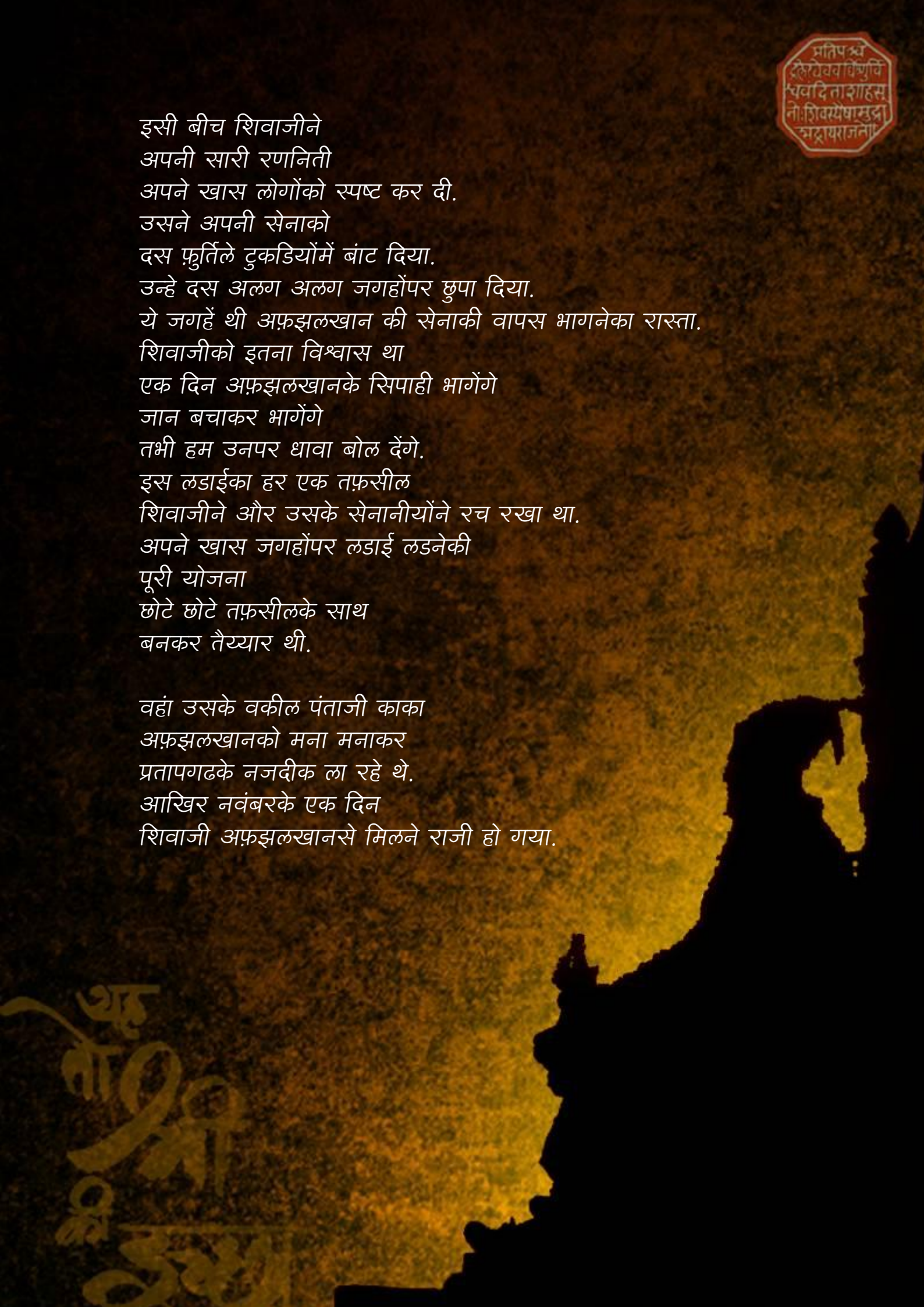

इसी बीच शिवाजीने
अपनी सारी रणनिती
अपने खास लोगोंको स्पष्ट कर दी.
उसने अपनी सेनाको
दस फ़ुर्तिले टुकडियोंमें बांट दिया.
उन्हे दस अलग अलग जगहोंपर छुपा दिया.
ये जगहें थी अफ़झलखान की सेनाकी वापस भागनेका रास्ता.
शिवाजीको इतना विश्वास था
एक दिन अफ़झलखानके सिपाही भागेंगे
जान बचाकर भागेंगे
तभी हम उनपर धावा बोल देंगे.
इस लडाईका हर एक तफ़सील
शिवाजीने और उसके सेनानीयोंने रच रखा था.
अपने खास जगहोंपर लडाई लडनेकी
पूरी योजना
छोटे छोटे तफ़सीलके साथ
बनकर तैय्यार थी.

वहां उसके वकील पंताजी काका
अफ़झलखानको मना मनाकर
प्रतापगढके नजदीक ला रहे थे.
आखिर नवंबरके एक दिन
शिवाजी अफ़झलखानसे मिलने राजी हो गया.

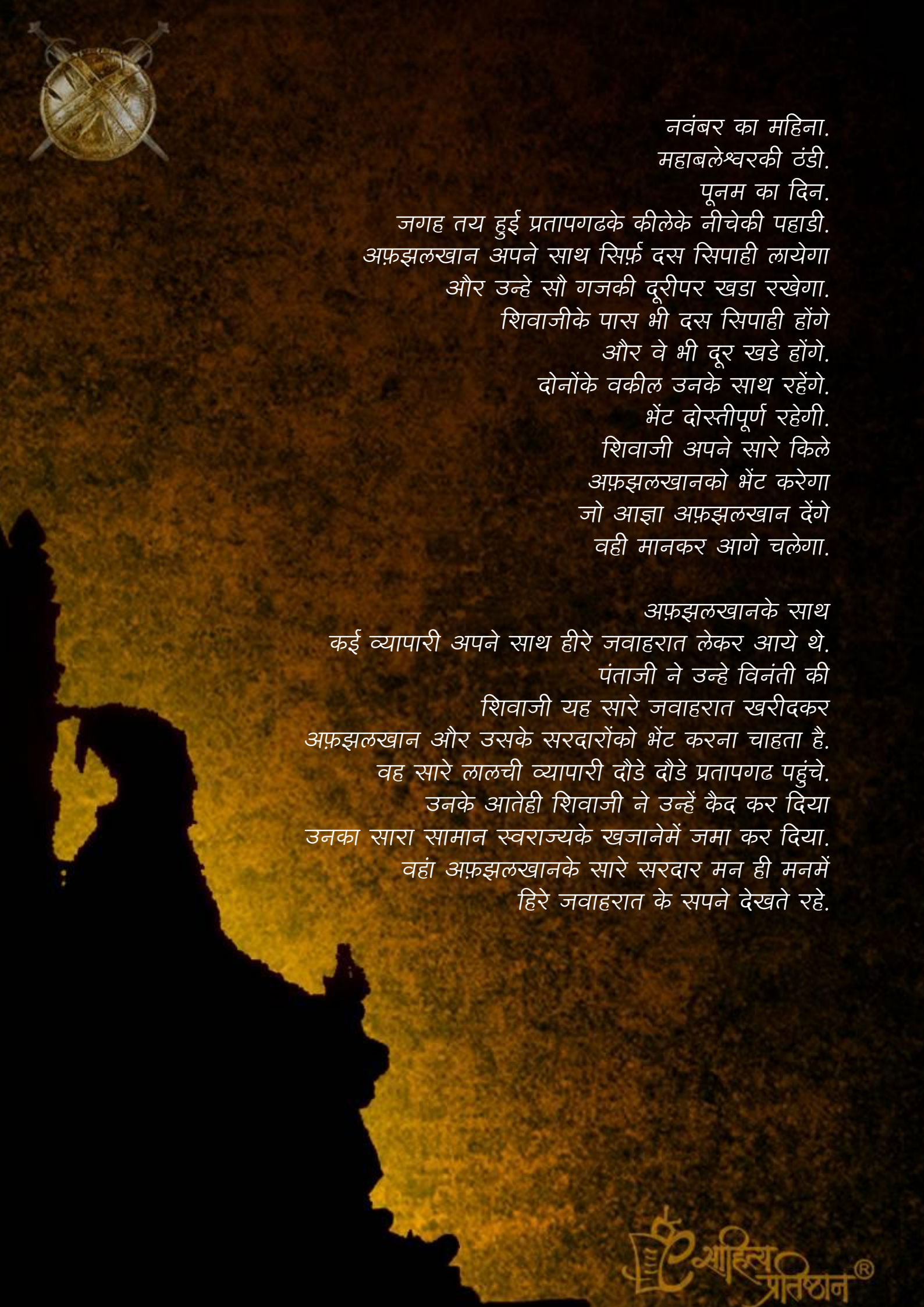

नवंबर का महिना.
महाबलेश्वरकी ठंडी.
पूनम का दिन.
जगह तय हुई प्रतापगढके कीलेके नीचेकी पहाडी.
अफ़झलखान अपने साथ सिर्फ़ दस सिपाही लायेगा
और उन्हे सौ गजकी दूरीपर खडा रखेगा.
शिवाजीके पास भी दस सिपाही होंगे
और वे भी दूर खडे होंगे.
दोनोंके वकील उनके साथ रहेंगे.
भेंट दोस्तीपूर्ण रहेगी.
शिवाजी अपने सारे किले
अफ़झलखानको भेंट करेगा
जो आज्ञा अफ़झलखान देंगे
वही मानकर आगे चलेगा.

अफ़झलखानके साथ
कई व्यापारी अपने साथ हीरे जवाहरात लेकर आये थे.
पंताजी ने उन्हे विनंती की
शिवाजी यह सारे जवाहरात खरीदकर
अफ़झलखान और उसके सरदारोंको भेंट करना चाहता है.
वह सारे लालची व्यापारी दौडे दौडे प्रतापगढ पहुंचे.
उनके आतेही शिवाजी ने उन्हें कैद कर दिया
उनका सारा सामान स्वराज्यके खजानेमें जमा कर दिया.
वहां अफ़झलखानके सारे सरदार मन ही मनमें
हिरे जवाहरात के सपने देखते रहे.

साहित्य प्रतिष्ठान®

भेंट दोपहरीमें तय हुई.
अफ़झलखान आ पहुंचा.
बहुतही सुंदर शामियाना था.
देखकर अफ़झलखानके सीनेमें जलन पैदा हुई.
एक मामुली जागिरदार के बेटेके पास इतनी संपत्ती?

शिवाजीभी आ गये.
लेकिन दूरहीसे
अफ़झलखानको देखकर
वापस भाग गये.
क्योंकी उन्हें शामतक का वक्त बिताना था.
पूरा प्लान शामके समय अंमल मे लाना था.

उनेके वकील पंताजी काका
अफ़झलखानके पास गये
कहा की शिवाजी आकर वापस गया.
अफ़झलखान बेताब था.
उसे आज शिवाजीको मिलनाही था.
शिवाजीको आजही मौत के घाट उतारनेका सपना देख चुका था.
उसकी सेना तो खुशीसे बेताब हुई जा रही थी.
बडे जश्न मनाये जा रहे थे.
और ये क्या?
शिवाजी वापस गया ?
क्यों ?
काकाने कहा
“शिवाजी आपका कद देखकर वैसेही कांप रहा है.
उसपर आपके साथी सय्यद बंडा और उसकी तलवार.
वह आतंकित हो गया है.”

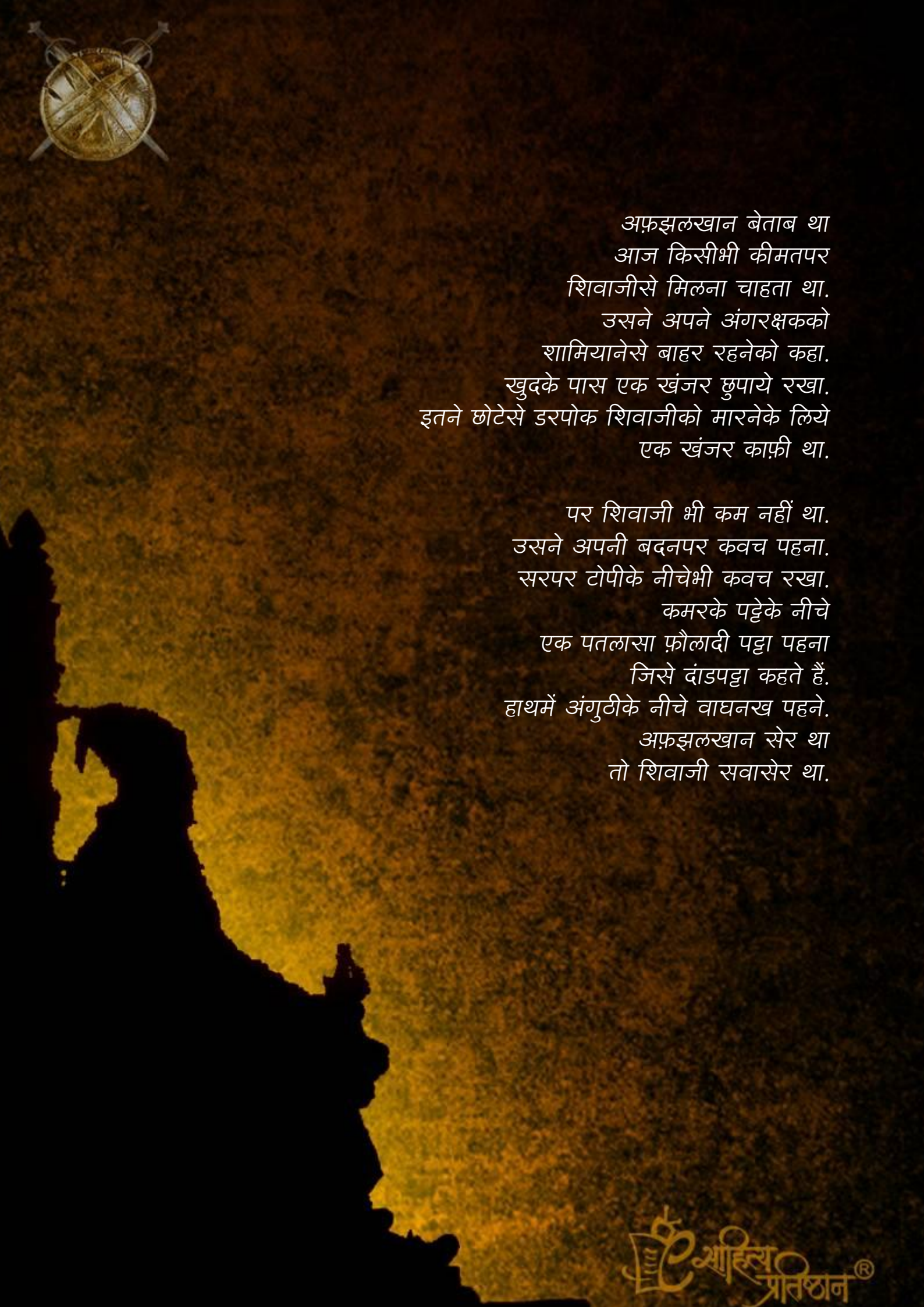

अफ़झलखान बेताब था
आज किसीभी कीमतपर
शिवाजीसे मिलना चाहता था.
उसने अपने अंगरक्षकको
शामियानेसे बाहर रहनेको कहा.
खुदके पास एक खंजर छुपाये रखा.
इतने छोटेसे डरपोक शिवाजीको मारनेके लिये
एक खंजर काफ़ी था.

पर शिवाजी भी कम नहीं था.
उसने अपनी बदनपर कवच पहना.
सरपर टोपीके नीचेभी कवच रखा.
कमरके पट्टेके नीचे
एक पतलासा फ़ौलादी पट्टा पहना
जिसे दांडपट्टा कहते हैं.
हाथमें अंगुठीके नीचे वाघनख पहने.
अफ़झलखान सेर था
तो शिवाजी सवासेर था.

साहित्य प्रतिष्ठान®

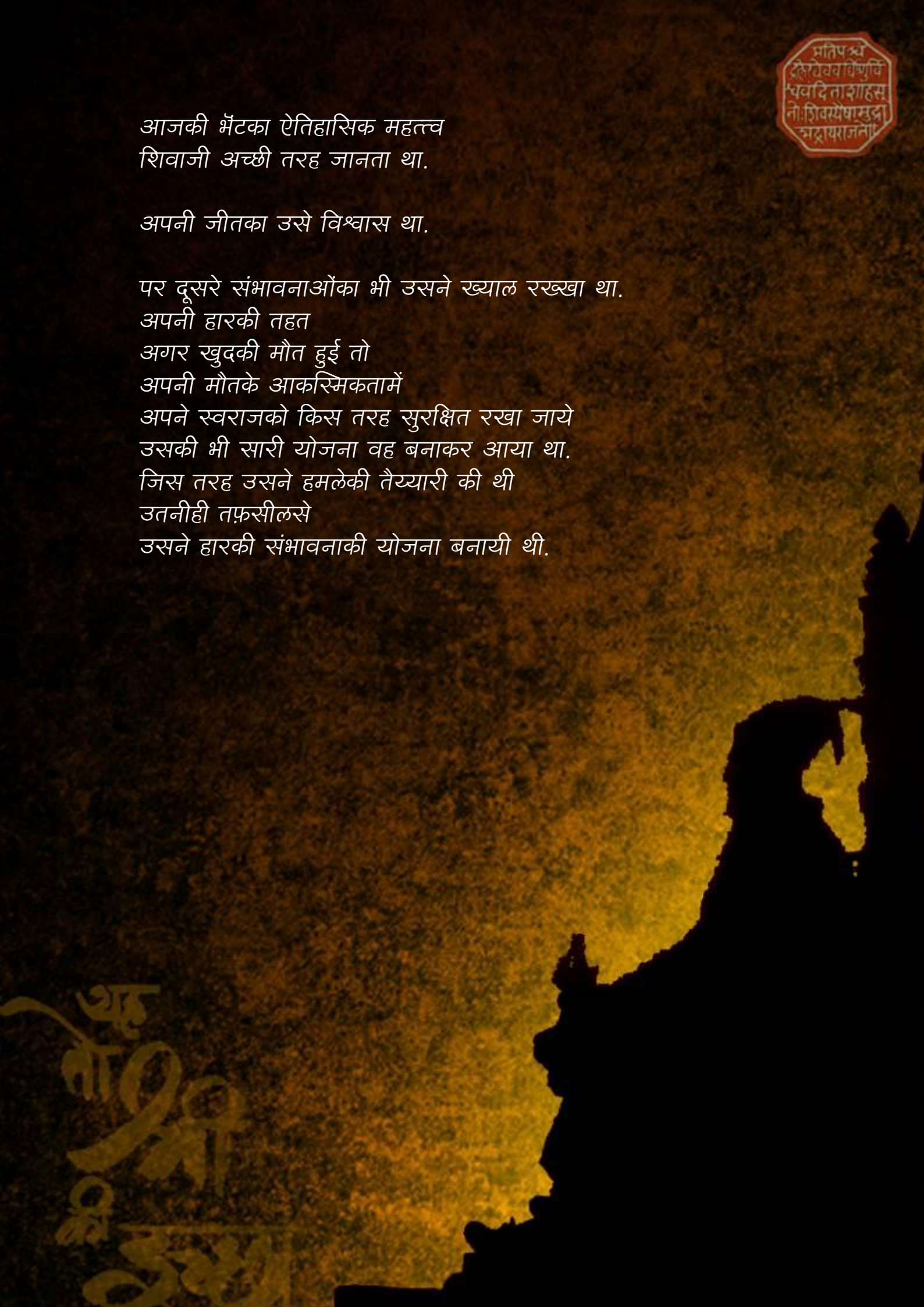

आजकी भेंटका ऐतिहासिक महत्त्व
शिवाजी अच्छी तरह जानता था.

अपनी जीतका उसे विश्वास था.

पर दूसरे संभावनाओंका भी उसने ख्याल रख्खा था.
अपनी हारकी तहत
अगर खुदकी मौत हुई तो
अपनी मौतके आकस्मिकतामें
अपने स्वराजको किस तरह सुरक्षित रखा जाये
उसकी भी सारी योजना वह बनाकर आया था.
जिस तरह उसने हमलेकी तैय्यारी की थी
उतनीही तफ़सीलसे
उसने हारकी संभावनाकी योजना बनायी थी.

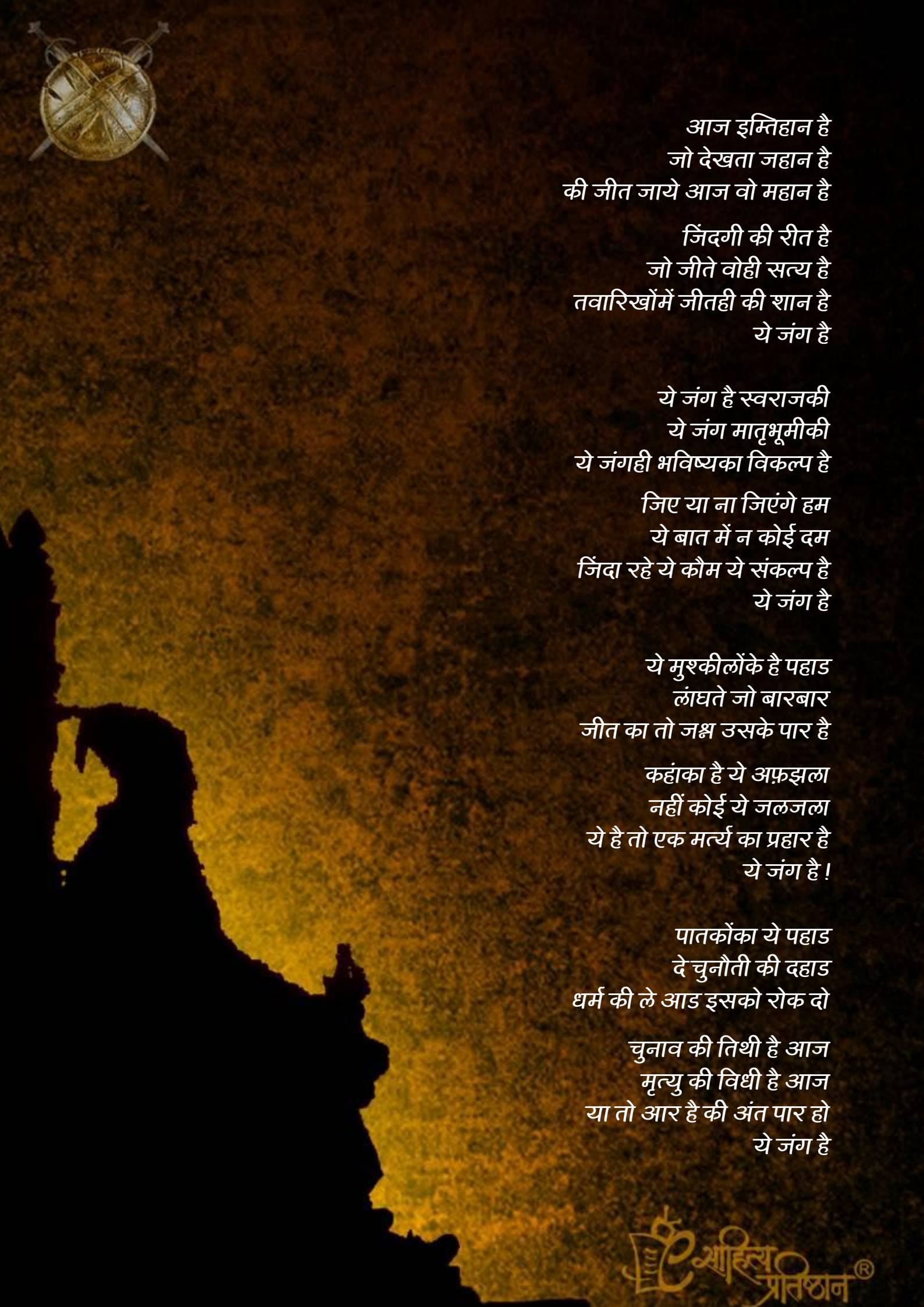

आज इम्तिहान है
जो देखता जहान है
की जीत जाये आज वो महान है

जिंदगी की रीत है
जो जीते वोही सत्य है
तवारिखोंमें जीतही की शान है
ये जंग है

ये जंग है स्वराजकी
ये जंग मातृभूमीकी
ये जंगही भविष्यका विकल्प है

जिए या ना जिएंगे हम
ये बात में न कोई दम
जिंदा रहे ये कौम ये संकल्प है
ये जंग है

ये मुश्कीलोंके है पहाड
लांघते जो बारबार
जीत का तो जश्न उसके पार है

कहांका है ये अफ़झला
नहीं कोई ये जलजला
ये है तो एक मर्त्य का प्रहार है
ये जंग है !

पातकोंका ये पहाड
दे चुनौती की दहाड
धर्म की ले आड इसको रोक दो

चुनाव की तिथी है आज
मृत्यु की विधी है आज
या तो आर है की अंत पार हो
ये जंग है

साहित्य प्रतिष्ठान®

प्रतापगढ किला

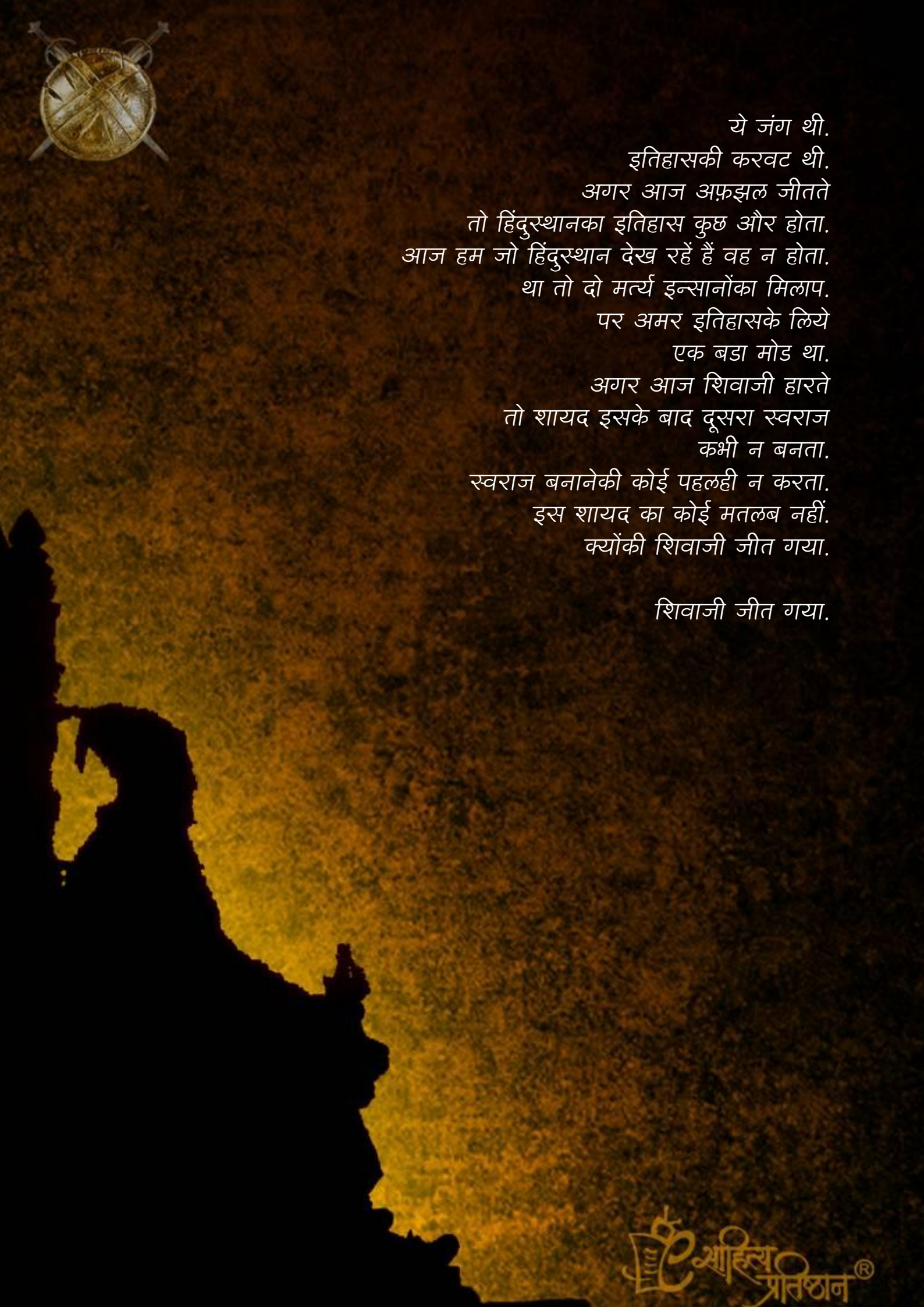

ये जंग थी.
इतिहासकी करवट थी.
अगर आज अफ़झल जीतते
तो हिंदुस्थानका इतिहास कुछ और होता.
आज हम जो हिंदुस्थान देख रहें हैं वह न होता.
था तो दो मर्त्य इन्सानोंका मिलाप.
पर अमर इतिहासके लिये
एक बडा मोड था.
अगर आज शिवाजी हारते
तो शायद इसके बाद दूसरा स्वराज
कभी न बनता.
स्वराज बनानेकी कोई पहलही न करता.
इस शायद का कोई मतलब नहीं.
क्योंकी शिवाजी जीत गया.

शिवाजी जीत गया.

साहित्य प्रतिष्ठान®

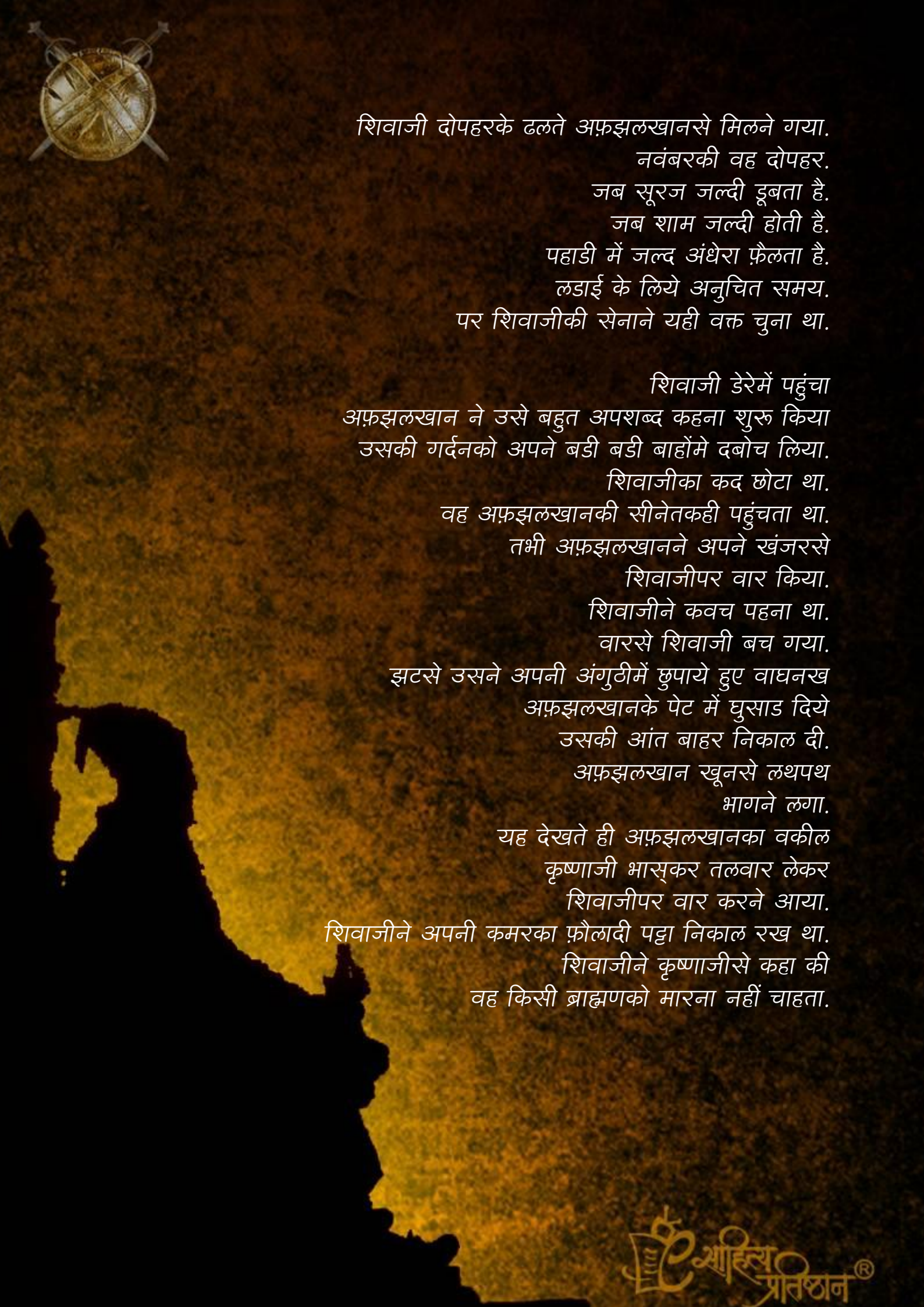

शिवाजी दोपहरके ढलते अफ़झलखानसे मिलने गया.
नवंबरकी वह दोपहर.
जब सूरज जल्दी डूबता है.
जब शाम जल्दी होती है.
पहाडी में जल्द अंधेरा फ़ैलता है.
लडाई के लिये अनुचित समय.
पर शिवाजीकी सेनाने यही वक्त चुना था.

शिवाजी डेरेमें पहुंचा
अफ़झलखान ने उसे बहुत अपशब्द कहना शुरू किया
उसकी गर्दनको अपने बडी बडी बाहोंमे दबोच लिया.
शिवाजीका कद छोटा था.
वह अफ़झलखानकी सीनेतकही पहुंचता था.
तभी अफ़झलखानने अपने खंजरसे
शिवाजीपर वार किया.
शिवाजीने कवच पहना था.
वारसे शिवाजी बच गया.
झटसे उसने अपनी अंगुठीमें छुपाये हुए वाघनख
अफ़झलखानके पेट में घुसाड दिये
उसकी आंत बाहर निकाल दी.
अफ़झलखान खूनसे लथपथ
भागने लगा.
यह देखते ही अफ़झलखानका वकील
कृष्णाजी भास्कर तलवार लेकर
शिवाजीपर वार करने आया.
शिवाजीने अपनी कमरका फ़ौलादी पट्टा निकाल रख था.
शिवाजीने कृष्णाजीसे कहा की
वह किसी ब्राह्मणको मारना नहीं चाहता.

साहित्य प्रतिष्ठान®

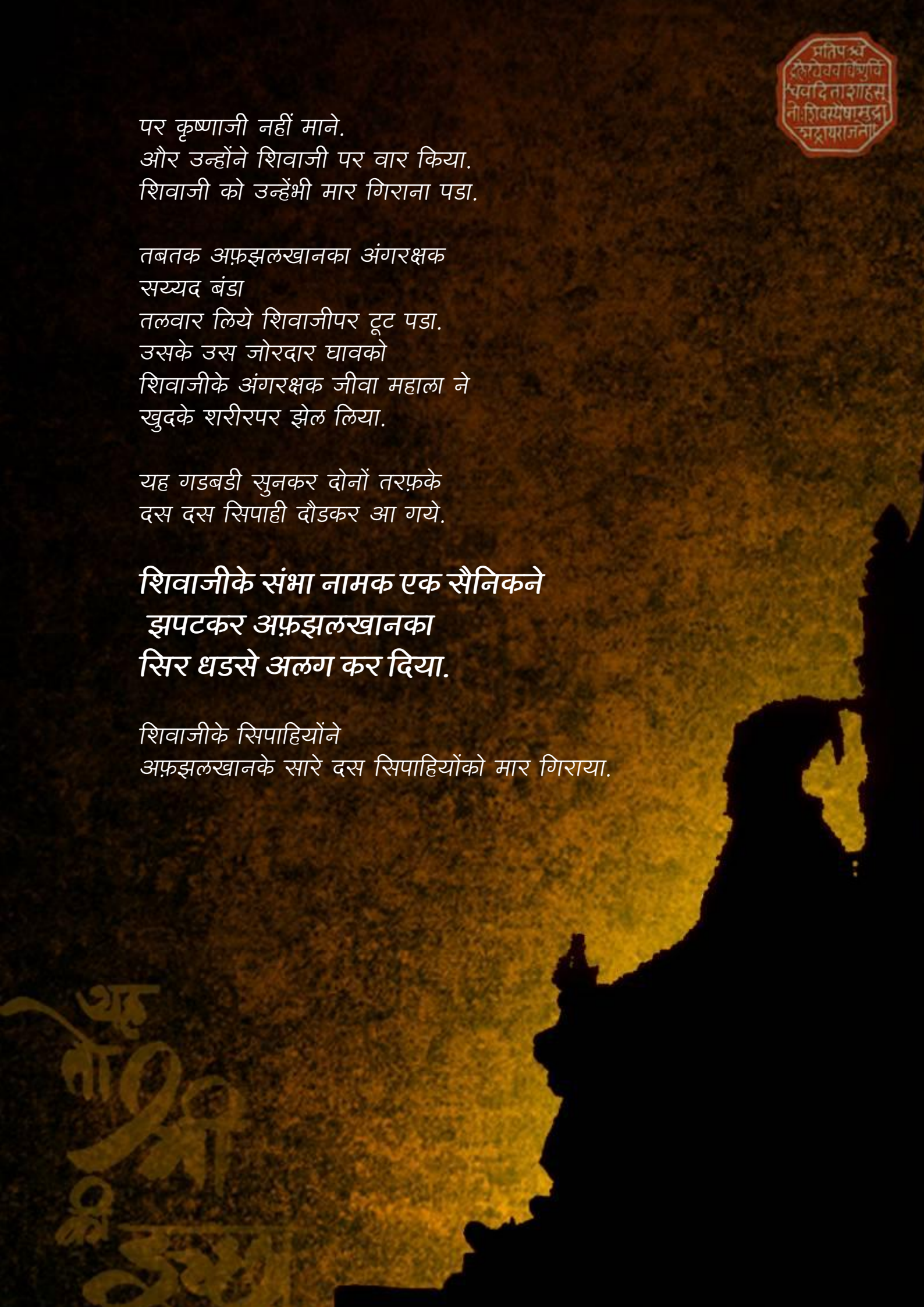

पर कृष्णाजी नहीं माने.
और उन्होंने शिवाजी पर वार किया.
शिवाजी को उन्हेंभी मार गिराना पडा.

तबतक अफ़झलखानका अंगरक्षक
सय्यद बंडा
तलवार लिये शिवाजीपर टूट पडा.
उसके उस जोरदार घावको
शिवाजीके अंगरक्षक जीवा महाला ने
खुदके शरीरपर झेल लिया.

यह गडबडी सुनकर दोनों तरफ़के
दस दस सिपाही दौडकर आ गये.

शिवाजीके संभा नामक एक सैनिकने
झपटकर अफ़झलखानका
सिर धडसे अलग कर दिया.

शिवाजीके सिपाहियोंने
अफ़झलखानके सारे दस सिपाहियोंको मार गिराया.

प्रतापगढ कीला और उसका परिसर (विमानसे ली गयी तस्वीर)

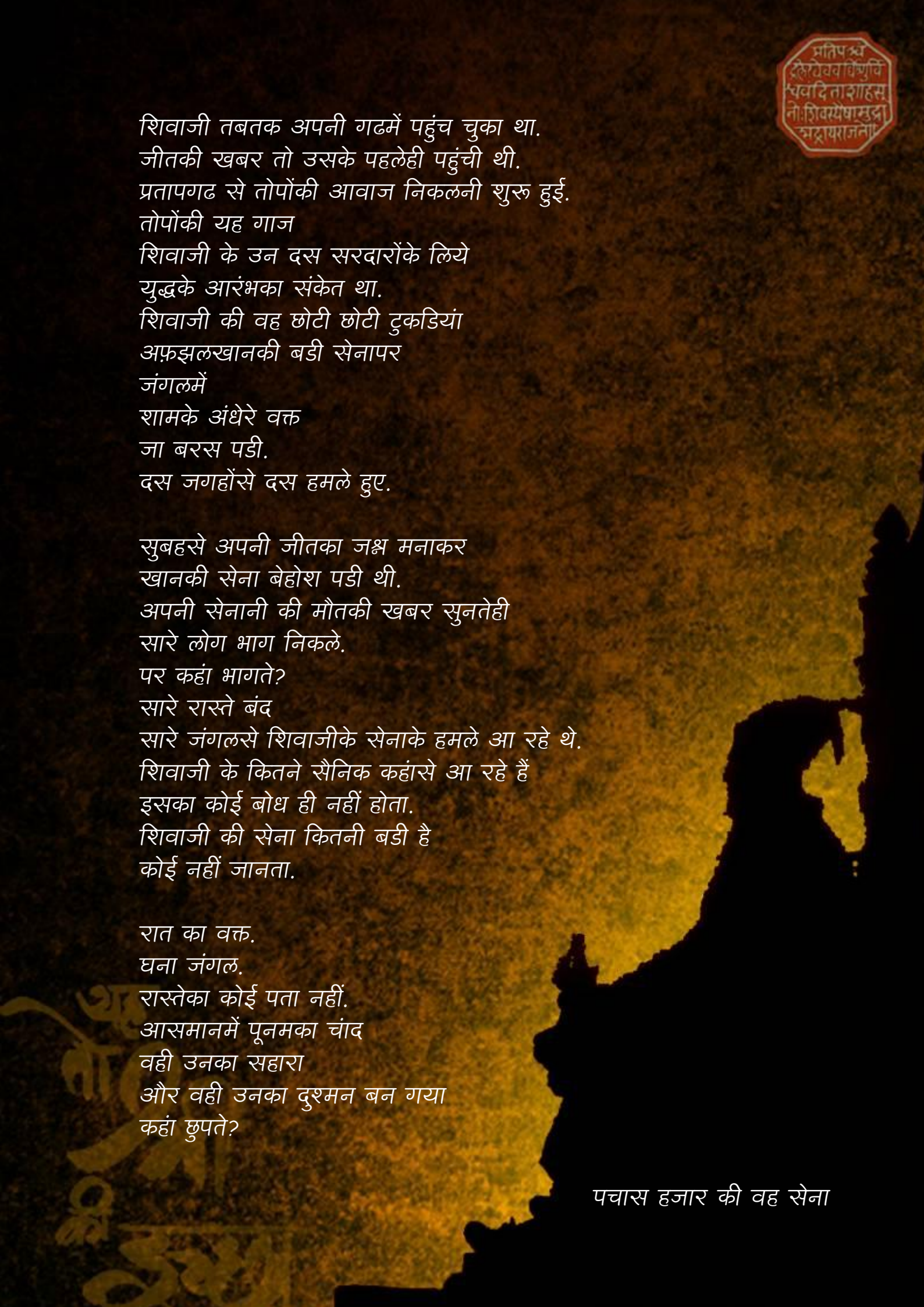

शिवाजी तबतक अपनी गढमें पहुंच चुका था.
जीतकी खबर तो उसके पहलेही पहुंची थी.
प्रतापगढ से तोपोंकी आवाज निकलनी शुरू हुई.
तोपोंकी यह गाज
शिवाजी के उन दस सरदारोंके लिये
युद्धके आरंभका संकेत था.
शिवाजी की वह छोटी छोटी टुकडियां
अफ़झलखानकी बडी सेनापर
जंगलमें
शामके अंधेरे वक्त
जा बरस पडी.
दस जगहोंसे दस हमले हुए.

सुबहसे अपनी जीतका जश्न मनाकर
खानकी सेना बेहोश पडी थी.
अपनी सेनानी की मौतकी खबर सुनतेही
सारे लोग भाग निकले.
पर कहां भागते?
सारे रास्ते बंद
सारे जंगलसे शिवाजीके सेनाके हमले आ रहे थे.
शिवाजी के कितने सैनिक कहांसे आ रहे हैं
इसका कोई बोध ही नहीं होता.
शिवाजी की सेना कितनी बडी है
कोई नहीं जानता.

रात का वक्त.
घना जंगल.
रास्तेका कोई पता नहीं.
आसमानमें पूनमका चांद
वही उनका सहारा
और वही उनका दुश्मन बन गया
कहां छुपते?

पचास हजार की वह सेना

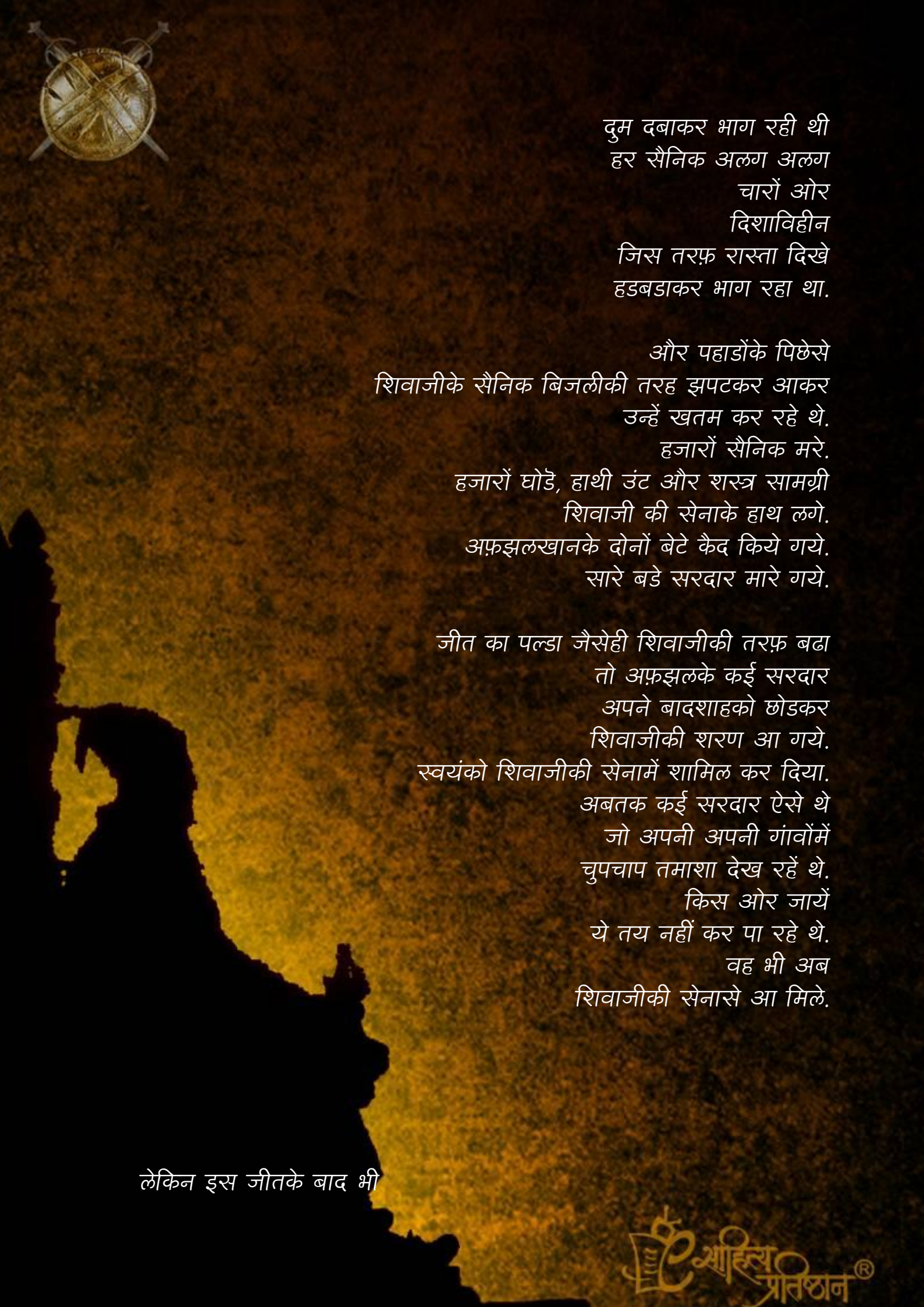

दुम दबाकर भाग रही थी
हर सैनिक अलग अलग
चारों ओर
दिशाविहीन
जिस तरफ़ रास्ता दिखे
हडबडाकर भाग रहा था.

और पहाडोंके पिछेसे
शिवाजीके सैनिक बिजलीकी तरह झपटकर आकर
उन्हें खतम कर रहे थे.
हजारों सैनिक मरे.
हजारों घोडे, हाथी उंट और शस्त्र सामग्री
शिवाजी की सेनाके हाथ लगे.
अफ़झलखानके दोनों बेटे कैद किये गये.
सारे बडे सरदार मारे गये.

जीत का पल्डा जैसेही शिवाजीकी तरफ़ बढा
तो अफ़झलके कई सरदार
अपने बादशाहको छोडकर
शिवाजीकी शरण आ गये.
स्वयंको शिवाजीकी सेनामें शामिल कर दिया.
अबतक कई सरदार ऐसे थे
जो अपनी अपनी गांवोंमें
चुपचाप तमाशा देख रहें थे.
किस ओर जायें
ये तय नहीं कर पा रहे थे.
वह भी अब
शिवाजीकी सेनासे आ मिले.

लेकिन इस जीतके बाद भी

साहित्य प्रतिष्ठान®

शिवाजीका और उसके सेनानियोंका अंतिम ध्येय ढला नहीं.
वह था सच्चा स्वराज और मानवता.
अपने शरणागतोंको शिवाजीने जान बख्शकर छोड दिया.
उसमें अफ़झलखानके बेटे भी थे.
अफ़झलखान और उसके सरदारोंके जनानाको (औरतोंको और बच्चोंको)
सुरक्षापूर्वक बीजापूर वापस जानेका इंतजाम खुद शिवाजीने किया.
अपने सैनिकोंकी सुरक्षामें.
खुद अफ़झलखानकी शरीरको मुस्लिम धर्मविधीकी तहत दफ़नाया
और उसकी रोजमर्राकी पूजा का इंतजाम करवाया.
इस जीतमें शिवाजीके बुद्धी, ताकत और हिंमत के साथ साथ
उसकी संस्कृतीका भी परिचय दुनियाको हो गया.

और खुद शिवाजी आराम करने गया?
नहीं.
दूसरे दिन सुबह
शिवाजी अपनी सेनाको लेकर
शत्रुके प्रांतमें घुस गया.
चारों तरफ़से उसे सैनिक और शस्त्र मिल रहे थे.
अपनी जीत का जश्न मनानेके लिये
वह एक दिन भी नहीं रुका.
दो हप्तोंके अंदर ही अंदर
उसने सारा महाराष्ट्र आदिलशाहकी
चंगुलसे आजाद कर दिया.
स्वराज अब चौगुना बडा हो गया.
और स्वराजकी सेना
अब आदिलशाहकी सेनासेभी बडी हो गयी.
आदिलशाह के सारे सरदार या तो मारे गये
या तो शिवाजीकी शरण आ गए.
खुदकी रक्षा करनेके लिये
आदिलशाहके पास कोई बचाही नहीं.

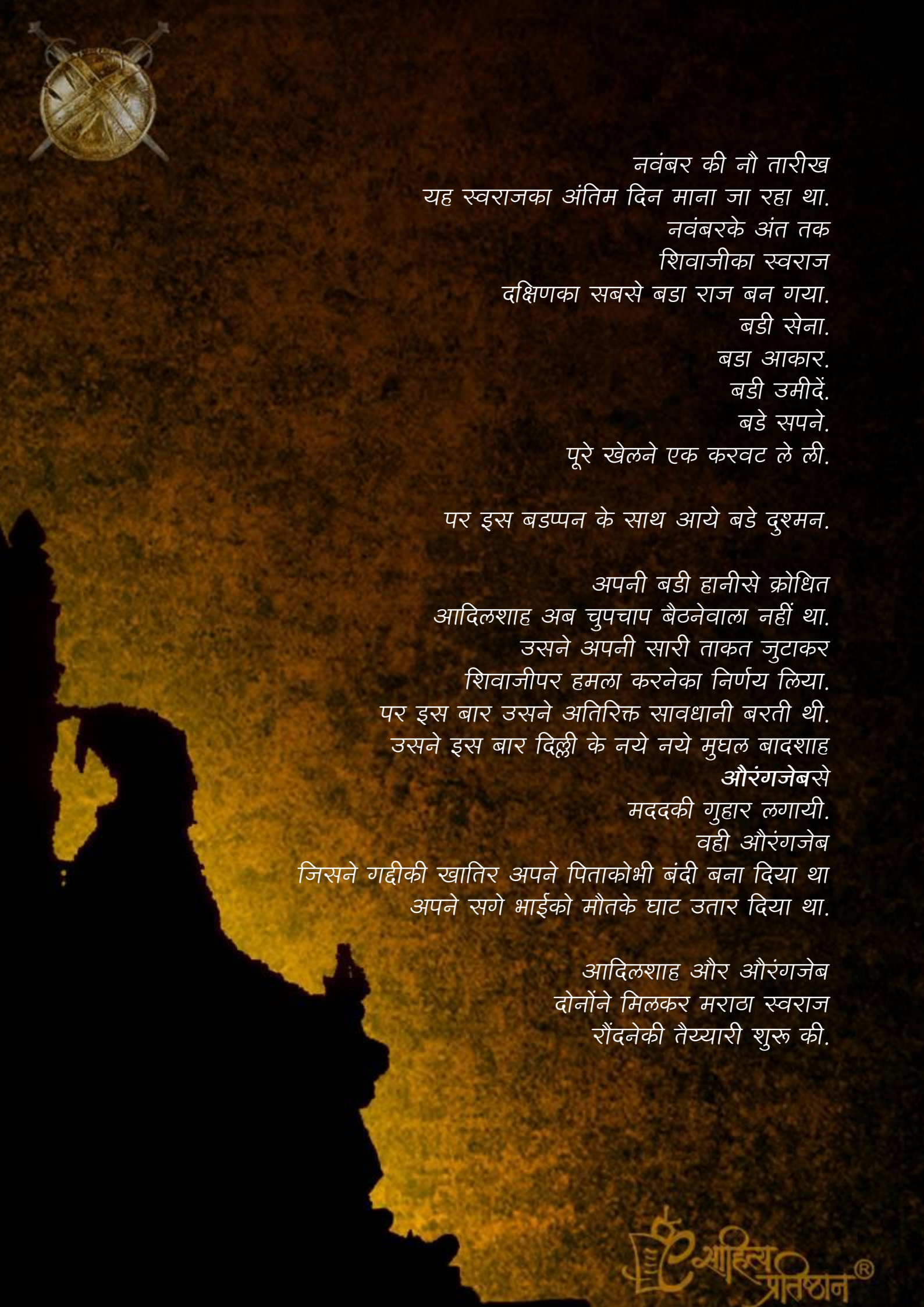

नवंबर की नौ तारीख
यह स्वराजका अंतिम दिन माना जा रहा था.
नवंबरके अंत तक
शिवाजीका स्वराज
दक्षिणका सबसे बडा राज बन गया.
बडी सेना.
बडा आकार.
बडी उमीदें.
बडे सपने.
पूरे खेलने एक करवट ले ली.

पर इस बडप्पन के साथ आये बडे दुश्मन.

अपनी बडी हानीसे क्रोधित
आदिलशाह अब चुपचाप बैठनेवाला नहीं था.
उसने अपनी सारी ताकत जुटाकर
शिवाजीपर हमला करनेका निर्णय लिया.
पर इस बार उसने अतिरिक्त सावधानी बरती थी.
उसने इस बार दिल्ली के नये नये मुघल बादशाह
औरंगजेबसे
मददकी गुहार लगायी.
वही औरंगजेब
जिसने गद्दीकी खातिर अपने पिताकोभी बंदी बना दिया था
अपने सगे भाईको मौतके घाट उतार दिया था.

आदिलशाह और औरंगजेब
दोनोंने मिलकर मराठा स्वराज
रौंदनेकी तैय्यारी शुरू की.

साहित्य प्रतिष्ठान®

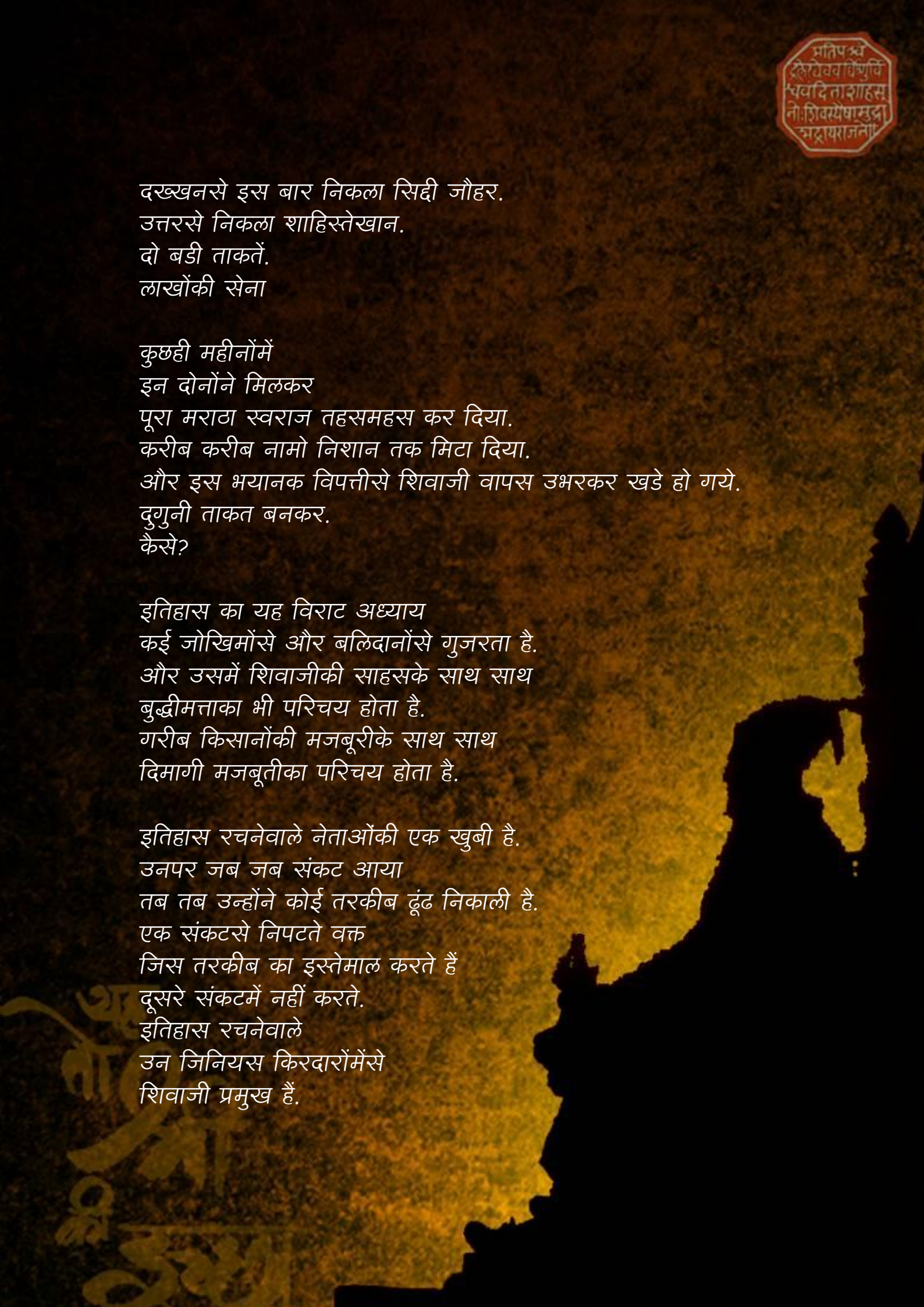

दख्खनसे इस बार निकला सिद्दी जौहर.
उत्तरसे निकला शाहिस्तेखान.
दो बडी ताकतें.
लाखोंकी सेना

कुछही महीनोंमें
इन दोनोंने मिलकर
पूरा मराठा स्वराज तहसमहस कर दिया.
करीब करीब नामो निशान तक मिटा दिया.
और इस भयानक विपत्तीसे शिवाजी वापस उभरकर खडे हो गये.
दुगुनी ताकत बनकर.
कैसे?

इतिहास का यह विराट अध्याय
कई जोखिमोंसे और बलिदानोंसे गुजरता है.
और उसमें शिवाजीकी साहसके साथ साथ
बुद्धीमत्ताका भी परिचय होता है.
गरीब किसानोंकी मजबूरीके साथ साथ
दिमागी मजबूतीका परिचय होता है.

इतिहास रचनेवाले नेताओंकी एक खुबी है.
उनपर जब जब संकट आया
तब तब उन्होंने कोई तरकीब ढूंढ निकाली है.
एक संकटसे निपटते वक्त
जिस तरकीब का इस्तेमाल करते हैं
दूसरे संकटमें नहीं करते.
इतिहास रचनेवाले
उन जिनियस किरदारोंमेंसे
शिवाजी प्रमुख हैं.

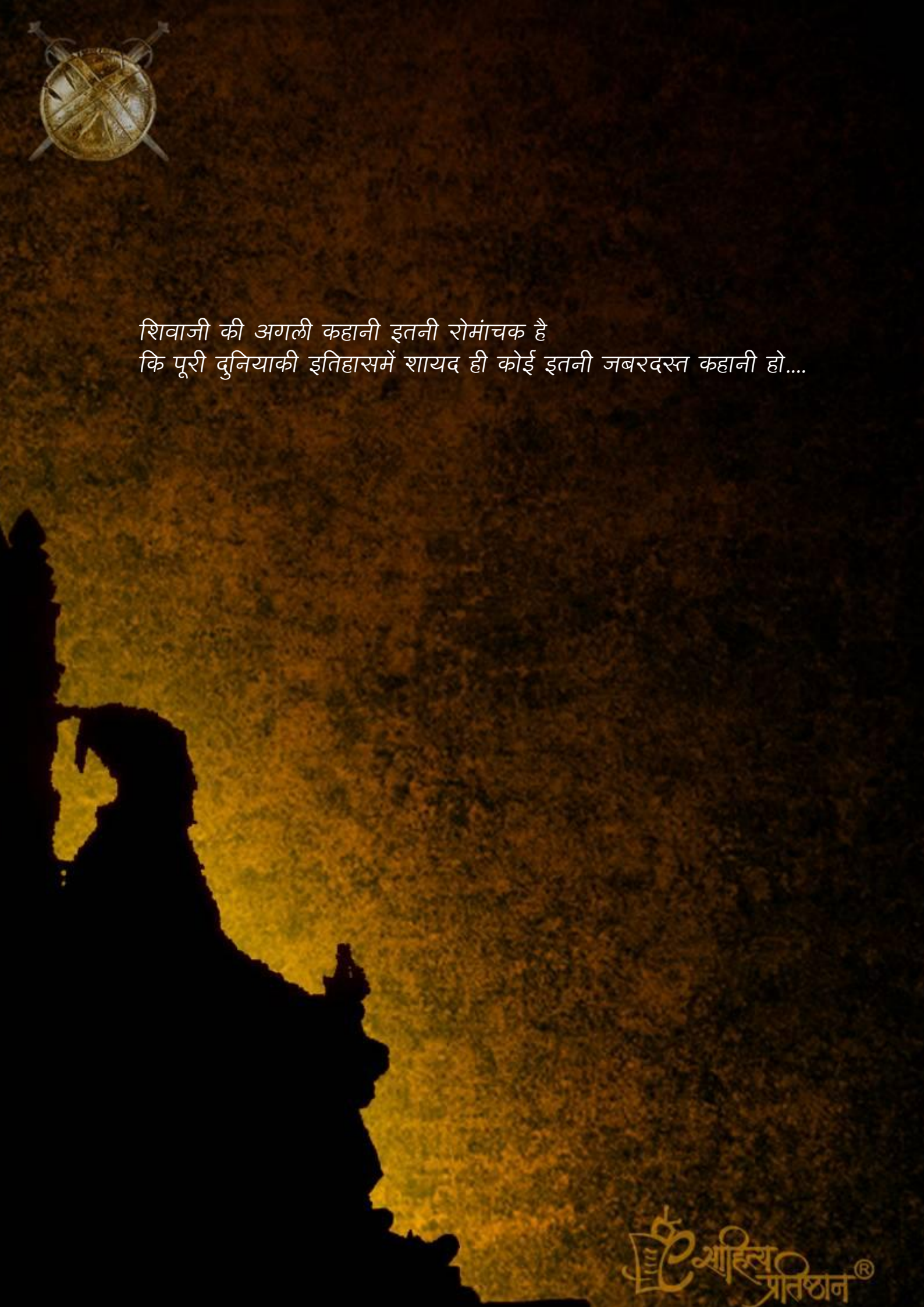
शिवाजी की अगली कहानी इतनी रोमांचक है
कि पूरी दुनियाकी इतिहासमें शायद ही कोई इतनी जबरदस्त कहानी हो....
साहित्य प्रतिष्ठान®

छत्रपती शिवाजी महाराजकी कहानी अभी बाकी है. पूरी पुस्तक आप मुफ़्तमें पा सकते हैं. लेकिन एक छोटासा कष्ट उठाना होगा दोस्त. हम चाहते हैं की यह कहानी देशभरके हर नौजवानतक पहुंचे. मुफ़्तमें.

इसीलिये आपको यह भाग अपने कमसे कम बारह दोस्तोंको मेल करना होगा. हो सके तो अमराठी दोस्तोंको. और उस मेल में हमें भी शामिल करना होगा. हम चाहते हैं की ज्यादासे ज्यादा अमराठी लोग शिवाजीके बारेमें जान लें. क्योंकी शिवाजी केवल महाराष्ट्र नहीं, पूरे हिंदुस्थानका गर्वस्थान है.

शिवाजी सिर्फ़ महाराष्ट्रकेही नहीं पूरे देशके लिये स्फ़ूर्तीका केंद्र हैं. इसलिये होगा की खुद मराठी लोग शिवाजी महाराजकी जयजयकार हिंदी भाषा में करते हैं. हिंदी न जाननेवाला मराठी बच्चाभी कहता है

"छत्रपती शिवाजी महाराज की जय".

शिवाजी महाराजकी कहानी को पूरे देशभरके, सारे धर्म जातीयोंके युवाओंतक पहुंचाना है. उनमें शिवाजी की पूरी जीवनी जाननेकी उत्कंठा निर्माण करना हमारा लक्ष्य है.

कृपया शिवाजी की संक्षिप्त कहानीके ये शुरुवाती पन्ने ज्यादासे ज्यादा लोगोंतक पहुंचानेमें हमारी मदद करें.

हमारा पता है

esahity@gmail.com

सबसे पहले और सबसे ज्यादा लोगोंतक इस
पुस्तकको ले जानेवाले व्यक्तीयोंको एक खास भेंट.
खुद ***लाला लाजपतरायने लिखी हुई किताब*** :
शिवाजीमहाराज की जीवनी
की ई संस्करण.

इंटरनेटके माध्यमसे ई पुस्तकोंका निर्माण और प्रचार करनेके हेतू ई साहित्य प्रतिष्ठान का निर्माण चार साल पहले हुवा. आजतक १७० से अधिक ई पुस्तकोंका निर्माण ई साहित्य प्रतिष्ठानने किया है. उसमें कविताओंकी **नेटाक्षरी**, बच्चोंके लिये **बाल नेटाक्षरी**, शास्त्रीय संगीत के आस्वादके लिये **संगीत कानसेन**, audio नियतकालिक **स्वरनेटाक्षरी**, शिवाजीके कीलोंका तफ़सील देता **दुर्ग दुर्गट भारी** तथा कई सामाजिक और साहित्यिक विषयोंकी किताबे शामिल है. दुनियाभरमें फ़ैले सव्वा लाख पाठकोंतक ये पुस्तकें ई मेल द्वारा प्रसारित होती हैं.

ई साहित्य की पुस्तकें नियमित रूपसे विनामूल्य पानेके लिये आप अपना और अपने दोस्तोंका ई मेल पता भेजिये .

esahity@gmail.com

अधिक जानकारीके लिये भेंट दे

www.esahity.com

धन्यवाद